With regards
and
gratitude
To
Our respected
Vinod Chandra Pande

Contents

Editorial

1857 has played an important role, not only in the history of India but in the history of Rajasthan also. Role played by Khushal Singh of Ahuwa, whether because of his differences with his overlord Maharaja of Jodhpur on 'Rekhchakri' accounts or of national instinct,may be a matter of controversy; is significant. We can take it a beginning of the peoples movement in this part of the country. The role played by Swamis-Dayanand and Vivekanand-in awaken the people is significant. The movement right from 1878 to 1950,whether big or small was agrarian in nature. However after the formation of Praja Mandals and Parishads in 1938-39 the demand for responsible government was also added.

There is dearth of material and the private record is more valuable than the official reeord. From this view, such publication also saves the record if the original record is destroyed or perished.

These records are in the form of **Police Reports** which contain the reports about the activities of various leaders of Praja Mandal and Movements launched by them. The enquiries conducted by officers of the State and of the Britishers are also an interesting addition in this-section. Letters, containing the reports of local leaders on the movements launched & the cruelty adopted by the then administration to crush the movement. Some of these letters are to seek guidance from all India leaders about local problems. These letters also include the category of letters written by the local leaders to the Princes and their Administrators to avoid confrontation and to adopt reconciliation to give minimum facilities to their people whom they govern, and viceversa. News Papers cuttings **and Proscribed literature** is also a speaciality of these records. Official records of various Praja Mandal units and All India State People's Conference, New Delhi are also valuable. The role played

by Rajputana Madhya Bharat Sabha and Rajasthan Sevasangh have also been included

The study of these records would reveal that Praja Mandal Movement was mostly for redressing the local grievances, responsible governments in the princely states under the umbrella of blessings of the Maharajas But thess movement helped the people in carrying on reforms in the field of education, society, caste religion etc. These movement get their base always in agrarian conditions So an analytical study of these records would help the scholars to write the correct accounts and also administration for social, cultural and economic upliftment of the people

Shodhak has acquired/collected a great deal of material and has planed to publish this in Ten Volumes Project The present is first of these series This first volume is of miscellaneous records Other volumes in the series will be of specific record on specific issues or problems. I hope our project would be a service to the academic world.

—Ram Pande

Selections from Haribhau Upadhyay Papers

1. Karauli Rajya Praja Mandal

Nehru Memorial Museum and Library, New Delhi is in possession of Haribhau Upadhyay Papers. Haribhau Upadhyay has played an important role in the freedom struggle of Rajputana Princedoms. The letters which are produced here are of file No. 141 of the papers.

Karauli was a State in the Eastern Rajputana, lying between 26°3' and 26°49' N and 76°34' and 77°24' E with an area of 1242 square metres. As recorded in the file Trilok Chand Mathur was initial worker of the Congress. He along with his inmates founded Karauli Rajya Sewak Sangh. To meet economic aspect of the movement Madan Khadi Kutir was also started under the cooperative guidane of Rajasthan Charkha Sangh. Later on they founded Congress and then Praja Mandal. The papers give a very interesting account not only of a political movement but also an inner picture of the leaders. In 1946, one of the leaders of Praja Mandal Chiranji Lal Sharma rightly observed about the peoples participation in the movement and economic difficulties faced by workers.

It is interesting to note that it is nowhere mentioned in these letters about the clear aims of the movement. It is clear that the movement was directed against neither Raja nor British directly but only for redressing the local grievances. Papers are important for researchers who want to work on Working of Praja Mandals in the former States of Rajasthan.

The papers reflect on group fighting in National Congress at national level as well as provincial levels. In 1940 the correspondence suddenly stops, perhaps due to the deatq of Trilok Chand Mathur, and resumes in 1946. In 1942 Mahatma Gandhi called upon the country to launch 'Quit India. In Karauli Rajya what was the position, it is not available in these private papers. To fill the gape one has to depend on official archival records.

(1)

करौली राज्य सवक संघ करौली (राजपूताना)

ता 20 5 38

प्रिय हरिभाउ जी,

सादर सप्रेम वन्दे, जयपुर मे आपने मुझसे बातचीत करने का जो समय निश्चित किया था उसमे आप मुझसे नही मिले, दूसरे रोज एकाएक आप चले गये, केवल शान्ति को वर्धा भेजने के सम्बन्ध मे ही अपनी बातचीत हो पाई, करौली के कार्य के सम्बन्ध मे कुछ बातचीत नही हुई, सेठ जी से भी फिर मिलना नही हो सका। करौली राज्य की सेवा के लिये हमने जो सघ बनाया है उसके नियम वगैरह भी मैं आपको न दे सका अब इसे पत्र के साथ भेज रहा हूँ, आप इन्हे ध्यान से पढें, हम अपने सघ के कार्य मे आपसे सहायता की पूरी अपेक्षा रखत हैं, नियम जल्दी म ही बनाये गये थे, इसलिये अधूरे रह गये हैं अगले वर्ष म हम इनम और परिवर्तन करेंगें।

इन नियमो के पढने से आपको ज्ञात होगा कि हमारी योजना इस प्रकार की है कि खादी, खेती एव पशुपालन द्वारा अपनी गुजर भी करते रहे और स्वावलम्बी होकर सेवा का कार्य भी करते रहें, सेवा करने का हमारा क्षेत्र करौली राज्य ही रहेगा किन्तु राजपुताने की सभी हलचलो मे भाग लेते रहें। हमारी सेवा का दायरा काफी विस्तीर्ण है, राजनैतिक समाजिक आदि सभी प्रकार के कार्य हमारी सेवा मे आजाते हैं। हमारे सामने सबसे बडी कठिनाई यह है कि पैसा अपना निज का बहुत कम है यदि हमे मागताग कर 20000, मिल जाय तो हम हमेशा के लिये उसी रुपये से अपना कार्य चलाते रहे। हमे फिर मागने की जरूरत नही रहेगी, हम पूर्ण आशा है कि इतना धन मिलने के बाद हम बिना पूजी को खोये उम्र भर जनता की सेवा करते रहगे, कम से कम 20-25 कार्यकर्त्ता हम अपनी योजना के अनुसार तैयार कर सकेंगे, आपको हमारे इस कार्य मे सहायता करनी चाहिये, यहाँ के कार्यकर्ताओ की पार्टी आपके disposal पर रहेगी औरा की तरह हम कृतघ्न नही होगे, इस विषय मे बातचीत आपसे मिलकर ही ठीक हो सकती है। चाहिये तो यह कि एक बार आप यहाँ पधारें और देखें कि हमारा काम कैसा चल रहा है, हम सहायता देने योग्य हैं या नहीं, अगर कांग्रेस का काम आप अजमेर का ठीक चलाना चाहते हैं तो आपको दौरा करके राज्य मे जो काग्रेस कमेटियां है उनका सगठन ठीक करना चाहिये, आपको राज्यो से काफी बल मिलगा।

कृपया यह भी लिखें कि राजस्थान संघ का कार्य क्षेत्र जयपुर तक ही परावित रहेगा या अन्य राज्यों को भी उससे सहायता मिलेगी और कुछ नहीं तो फिलहाल एक दो कार्यकर्ता संघ में लेलें और उनके द्वारा करौली में राजनैतिक कार्य होने दिया जाय, चिरंजीलाल इसके लिये तैयार हैं। कृपया मेरे पत्र का उत्तर लौटती डाक से दें।

भवदीय

त्रिलोक चन्द

(2)

26-5-38

प्रियवर माथुर जी,

सस्नेह वन्दे, आपका पत्र तथा आपके संघ का विधान मिल गया हैं मैं बम्बई गया था परसों ही वापिस आया हूँ इससे उत्तर में विलम्ब हुआ, जिसके लिये क्षमाप्रार्थी हूँ, इस बात का मुझे खेद ही रह गया कि करौली के बारे में विशेष बातें नहीं हो पाई, आपकी राय में मुझे कब करौली आना चाहिए, जुलाई में किसी वक्त आऊं तो कैसा ? वहीं अच्छी तरह बातें हो सकेगी।

आपका विधान सरसरी तौर पर देख लिया है ध्यान से देख कर अपनी राय लिखूंगा, आपकी स्वावलंबन की कल्पना मुझे अच्छी लगी है, यहां और मित्रों को भी विधान बताऊंगा, शेष रुपयों की व्यवस्था के लिये या तो चरखा संघ से या सेठ जी से प्राप्त करने का यत्न करना चाहिये, खादी के द्वारा तो आप कुछ मुनाफा उठा ही रहे हैं पशु पालन से भी कुछ लाभ हो सकता है लेकिन कृषि से कहाँ तक होगा यह कहना कठिन है, अब तक का शिक्षित लोगों की खेती का अनुभव अच्छा नहीं है उसमें उन्होंने घाटा ही अधिक उठाया हैं। इसमें आप लोग सोच विचार कर पड़ें।

रुपये प्राप्त करने में मुझसे आप किस प्रकार की सहायता चाहते है।

राजस्थान संघ वैसे तो राजस्थान भर के लिये है मगर जिम्मेदारी उतनी ही ले सकता है जितनी की इसकी शक्ति होगी-धन शक्ति और कार्य संचालन शक्ति-काम बढ़ा लेना तो सहज होता हैं मगर उसे सम्भालना मुश्किल पड़ता है, फिर भी आपके पत्र में सूचित तजवीज पर मण्डल की आगामी मीटिंग में हम लोग चर्चा करेंगे, तब तक यह लिखने की कृपा कीजिये कि चिरंजीलाल जी को पाक्षिक खर्च कितना चाहियेगा ? क्या काम करेंगे ? और वहां किनके तत्वावधान में काम करेंगे ?

चि शान्ति को तो वर्धा भेजना तय हो ही गया है, भागीरथी देवी आज कल यहीं हैं 15-20 रोज रहेंगी वे वर्धा महिला आश्रम की व्यवस्थापिका हैं। यदि असुविधा न हो तो आप उसे लेकर यहा आजाइयें, वह कुछ दिन इनके पास रह लेगी तो और भी अच्छा रहेगा हम लोग करोली के सम्बन्ध मे विशेष बातचीत भी कर लेगें, मैं शायद 20 को रतलाम जाऊँ, 1 जून को लौट आऊगा।

आप मित्रो का जो स्नेह और विश्वास मेरे साथ है भगवान उसके योग्य मुझे बनाये रखे, सब मित्रो को वन्दे, इति।

श्री त्रिलोक चन्द जी माथुर
मदन खादी कुटीर
करौली

स्नेहाधीन
हरिभाउ

(3)

करौली राज्य सेवक संघ, करौली (राजपूताना)

ता. 26-6-38

प्रिय उपाध्यायजी,

सादर वन्दे, आपका कृपा पत्र समय पर ही मिल गया था, किन्तु मैंने पढकर उसे कही रख दिया और फिर तलाश करने पर मुझे न मिल सका कल ही बालकृष्ण जी गर्ग का पत्र मिलने पर यह पत्र आपकी सेवा में भेज रहा हू।

बहतर तो यही होता कि शान्ती कुछ दिन हटून्डी मे भागीरथी बहन के साथ रह लेती, किन्तु वह कुछ दिनो से अपने मामा के घर भरतपुर गई हुई है और वहा उसका इलाज हो रहा है शायद उसे अभी कुछ दिन और ठहरना पडे, यहा से आने पर उसे वर्धा पहुंचाने का प्रबन्ध करूगा।

आपने पूछा है कि मैं आपसे करौली राज्य सेवक सघ के लिए क्या मदद चाहता हूँ सो मैंने आपको पहले भी लिखा था कि सघ को अगर दान से कुछ रुपया मिल जाय तो हमारा सघ हमेशा के लिए स्वावलबी हो जाय, उसे फिर मागने की आवश्यकता न रहे, हम लोगों ने अब तक जो थोडी बहुत यहा की जनता की सेवा की है वह पैसा औरो का दिया ही है, किन्तु जो काम हमारे पास है उसमे अधिकाश दूसरो का रुपया लगा हुआ है, यह पैसा यदि सघ का ही हो

तो हम सूद वगैरह के खर्चे से बच सकते हैं और दूसरों की रुपयों की जो जोखम रहती है वह न रहे, आपने राजपूताने की सभी संस्थाओं की सहायता की है आप इस योग्य हैं भी, इसी लिए आपसे प्रार्थना की थी, रुपया कैसे मिले, कहां से मिले, यह तो आप ही सोच सकते हैं।

खेती के सम्बन्ध में आपने लिखा वह ठीक हैं किन्तु अभी तक हमें इसके घाटे जैसी बात तो नहीं नजर आई, आगे चल कर देखना है क्या फल निकलता है हमें आशा तो अच्छी ही है।

आप जौलाई में कब पधार सकेंगे, सो भी लिखें, आपकी उपस्थिति से हम यह लाभ उठाना चाहते हैं कि यहां के अधिकारियों एवं हम लोगों में कुछ खिचाव का वातावरण चल रहा है वह दूर हो सकता है।

चिरंजीलाल करौली राज्य सेवक संघ के तत्वावधान में ही कार्य करेंगे काम करने की नीति जयपुर राज्य-प्रजा मण्डल जैसी होगी। देशी राज्यों में कार्य करने के लिए हमने महात्मा जी तथा कांग्रेस को ही अपना आदर्श रखा है, उससे बाहर नहीं जायेंगे। चूंकि चिरंजीलाल और एक व्यक्ति और कांग्रेस तथा प्रजा मण्डल का कार्य करेंगे इसलिए उनका खर्चा मौजूदा नियमों के अनुसार हम खादी के काम में से नहीं दे सकते। इसीलिए आपको लिखा था। आप मेरी सब बातों पर गौर करके उचित उत्तर प्रदान करने की कृपा करें। भाई बालकृष्ण जी से वन्दे कहें।

भवदीय

त्रिलोकचन्द

(4)

करौली राज्य सेवक संघ, करौली (राजपूताना)

प्रिय उपाध्याय जी,

ता. 17-6-38

सादर वन्दे आपका कृपा पत्र मिला धन्यवाद आपने अगस्त मे पधारने की बात लिखी है, वह ठीक है जिस समय आपको ठीक अवकाश हो और एक दो रोज ठहर कर यहां कार्य देख सकें तभी पधारें, किन्तु आपको एक बार इधर आना अवश्य है चिरंजीलाल आदि के विषय में भी बात करेंगे। मुझे बुलाने की जल्दी नहीं है दो चार पांच रोज में मैं भी बम्बई एवं अहमदाबाद की ओर जा

रहा हूँ, जो एक बात और वह यह है कि मैं गाधी सेवा सघ का आनरेरी सदस्य उसी प्रकार होना चाहता हूँ जिस प्रकार ओमजी तथा देश पाण्डेजी हुए है ताकि मैं भी सघ की प्रगति के ससर्ग मे रह सकू, इसमे आप को भी कार्यवाही करनी होगी, शेष कुशल है। गर्ग जी से वन्दे।

भवदीय
त्रिलोकचन्द

(5)

करौली
ता० 23-8-38

भाई श्री गोकुलजी

सस्नेह वन्दे, परसों दिल्ली मे व्यासजी से मालूम हुआ कि हम लोग जो बातचीत कर रहे थे, उसका रास्ता रुक गया है, क्योंकि हम लोगों मे कुछ मूलभूत बातो मे ही मतभेद पड गया है, जिससे हम कोई व्यवहारिक मार्ग नहीं निकाल सके, हम लोगो को इसका अफसोस तो है ही हम अच्छे दिना की प्रतीक्षा मे हैं, हमने इस आशय का एक वक्तव्य भी प्रेस में दिया है।

इस बातचीत के खत्म हो जाने के बाद अब हमारे लिए यह लाजिमी हो जाता है कि जो कार्यवाही स्थगित की गई थी वह जारी करदी जाए इसके बारे मे मैंने आज आपको यह तार दिया है।

Proceed with Pending Papers my self reaching monday.

आशा है इसके अनुसार आपने बाबाजी का मामला तो कार्य समिति को भेज दिया होगा ही और दूसरे व्यक्तियो से जवाब तलब करने की कार्यवाही कर दी होगी।

मैंने भाई व्यासजी से यह भी कह दिया है कि अब सारा मामला कार्य-समिति के सुपुर्द करने के सिवा मुझे दूसरा रास्ता दिखाई नही देता, वे भी मेरी स्थिति को समझ रहे हैं और इस विषय मे हमारे बीच कोई गलत फहमी भी नही है।

इससे पहले जो चिट्ठी कार्यकारणी को हमारे दफ्तर से गई है उसके सिलसिले मे अब आप दूसरी चिट्ठी भेज दीजिए, जो कुछ जरूरी कागजात और होवे, वे भी भेज दीजिए और लिखिए कि वे किसी को भेजकर यहाँ की स्थिति

ठीक करने का प्रयत्न करें, जो पत्र आप मन्त्री जी को लिखें उसकी एक प्रति सभापति, सुभाषबाबू को भी सीधी भेज दीजिये। मैं भी उन्हें एक पत्र सीधा भेज रहा हूँ। पहले मन्त्री जी को जो पत्र गया है उसकी भी नकल सुभाषबाबू को भेज दीजिये।

मैं कल यहां हूं, परसों कोटा जाऊंगा देशपाण्डेजी और दत्तजी भी साथ है। 28 ता० को गोविन्दगढ़ में कार्यकर्त्ताओं की एक मीटिंग हैं जिसमें मुझे जाना है 29 को सुबह या शाम को मैं अजमेर पहुँचने की आशा रखता हूं। ता० 27 को मैं जयपुर रहूंगा। जरूरी डाक वहां भिजवा दीजिए।

स्नेहाधीन
हरिभाउ

(6)

करौली राज्य सेवक संघ, करौली (राजपूताना)

ता० 28-9-38

प्रिय उपाध्यायजी

सादर वन्दे, आपका कृपा पत्र यथाशीघ्र मिल गया था। मेरा पत्र शायद आपको हटूण्डी से redirect होकर मिला होगा, उसमें मैंने सब हाल लिख दिया है, इस साल पहला मौका है। इसलिए हमने शहर ही शहर में से एवं अधिकांश अपने ही परिवार के लोग कांग्रेस के सदस्य बनाये हैं, 1000 की संख्या हम इस साल पूरी कर लेंगे। धीरे-धीरे हम अपना संगठन मजबूत बनाते जा रहे हैं एवं बल बढ़ाते जा रहे हैं। हमारी नीति कांग्रेस को ही इस राज्य में व्यापक बना देने की रहेगी। यहाँ के पुलिस के उच्चाधिकारियों को यह ज्ञात हैं कि हम कांग्रेस का काम कर रहे हैं, सदस्य बना रहे हैं। इस वर्ष गांधी जयन्ती भी हम लोगों ने भली प्रकार से मनाई है।

राजस्थान संघ के नियम जब छप जायें तब एक प्रति आप भिजवादें, हम लोग उन पर अपने संघ की मीटिंग में विचार करके आपको सूचना दे देंगे 'नव ज्योति' की एजेन्सी हमने अपने यहाँ से बन्द करदी है, अब कोई दूसरा पत्र जिसके द्वारा हम अपने कार्य का प्रचार करते रह सकें जारी करना चाहते हैं, कृपया आप अपनी राय लिखिए।

प्रान्त में कार्य कैसा हो रहा है, दूसरे लोग क्या कर रहे हैं, इस सम्बन्ध में भी प्रकाश डालने की कृपा करें।

श्री हरिश्चन्द्रजी अभी यहां आकर वापिस चले गये हैं, उनका एक थैला यहा रह गया बतलाते हैं उसे किसी आदमी के हाथ भेज दिया जावेगा, इस पत्र के साथ एक पत्र श्री माणिक लालजी को लिखा है उसे आप भी पढलें और उनके पास भिजवादें।

पत्रोतर देते रहें, यहां के योग्य सेवा लिखें

भवदीय
त्रिलोकचन्द

(7)

करौली राज्य सेवक संघ, करौली (राजपूताना)

प्रिय उपाध्यायजी ता० 16-10-38

सस्नेह वन्दे, आपका 9-10-38 का पत्र मिला समाचार ज्ञात हुए, हम लोगों ने इस वर्ष के लिए केवल नगर मे ही कांग्रेस सदस्य बनाना स्थिर किया है। राज्य हमारे सम्बन्ध मे अधिक शका करने लगे ऐसा हम करना नही चाहते। इसलिए ग्रामों मे नही गये हैं। ग्रामों मे जाने पर पुलिस झूठी रिपोर्ट देकर राज्य कर्मचारियो को भयभीत कर देती, इतनी ही गनीमत समझी है कि राज्य कर्मचारी इसको बर्दास्त करने लगे है कि हम शहर मे कांग्रेस सदस्य बना रहे हैं। इस वर्ष हम चुपचाप काम करके अगली साल आप कहेगे उतने ही सदस्य बना देगे, यह वर्ष हमारी तैयारी का वर्ष है।

आप पालीवालजी को लिखदें वे कुछ कापियां नमूने के तौर पर 'सैनिक' की मानसिहजी न्यूज पेपर एजेण्ट के पते पर भेज दें, 'सैनिक' में करौली के सम्वाद भी छपते रहे इसकी व्यवस्था भी कर दें।

प्रान्त की प्रगति से सूचित करते रहें, राजस्थान सघ का अधिवेशन होने वाला था उसका क्या हुआ ?

मुझे शान्ती की शादी की विशेष चिन्ता है इस सम्बन्ध मे आपको प्रयत्न करना होगा, जैसा आप उचित समझें उत्तर देने की कृपा करें।

भवदीय
त्रिलोकचन्द

(8)

त्रिलोकचन्द माथुर
सपोटरा, करौली
ता० 4-1-39

प्रिय उपाध्यायजी,

सस्नेह वन्दे एक पत्र आपको पहले लिख चुका हूँ यह मैं टूर में से लिख रहा हूँ। करौली के कार्य के सम्बन्ध में आप से कई बातों में परामर्श लेना है। करौली राज्य के किसानों को उठाने का काम हमने यहां आरम्भ कर दिया है और दो महीने के लगातार कार्य के द्वारा हम यहां के किसानों को शीघ्र खड़ा कर देना चाहते है, यहां के लोग इतने दुःखी हैं कि हमें उन्हें तुरन्त खड़े हो जाने की आशा है। 10 जनवरी को यहां के नये दीवान ने हमें मिलने का टाइम दिया है। उससे मिलने के बाद हमें यहां के राज्य के रुख का अन्दाजा लग जायगा, यद्यपि हमारा यह तैयारी का काल है। परन्तु बहुत मुमकिन है कि बीच में ही हमारी भिड़न्त हो जाय, इस परिस्थिति के लिए भी हम तैयार हैं, किन्तु यह सब कुछ होने पर भी मेरा इस सम्बन्ध में ऐसा विचार है कि मैं आपके साथ एक बार सरदार वल्लभ भाई पटेल एवं महात्मा जी से मिलकर हमारे राज्य की सारी परिस्थिति उन्हें समझादूं और हो सके तो जमनालाल जी से भी मिल लूं। मैं महात्मा जी की सलाह और आशीर्वाद लेकर यह कार्य करना चाहता हूं। फिर सत्याग्रह की सारी technique भी समझ लेना चाहता हूँ आप इस समय काफी व्यस्त होंगे, किन्तु क्या मैं इस बात की आशा करूं कि अवकाश मिलने पर आप मुझे इस कार्य के लिए समय दे सकेंगे ? शीघ्र उत्तर देने की कृपा करें।

मेरे पास नृसिंह दास जी का खत आया था, वे यह चाहते हैं कि यहां के प्रतिनिधि चुनाव के झगड़े में न पड़ कर निस्पक्ष रहें, मैंने उनको यह लिख दिया है कि हमारे यहां के लोग सब गांधीवादी है, वे चुनाव के समय क्या रुख लेंगे यह कुछ नहीं कह सकता, हां यदि आप लोगों में कोई समझौता नहीं हुआ तो मैं शायद neutral रहूँ। यह मैंने इसलिए किया कि मेरी तो सारी शक्ति यहां के आन्दोलन में लग जायगी और बहुत सम्भव हो कि मैं शीघ्र जेल भी चला जाऊं ऐसी सूरत में मैं नीति के तौर पर यह उचित समझता हूँ कि जरूरत पड़ने पर मैं तो निस्पक्ष रहूं, किन्तु हमारे यहां की तीन बोट आपको मिल जायें, यह मैं केवल इसलिए करना चाहता हूं कि उन लोगों की तरफ से हमारे कार्य में

कोई बाधा उपस्थित न की जाय, यह बात कोई आखरी नही है। इस सम्बन्ध मे आपकी राय लेने पर ही निश्चय होगा।

भवदीय
त्रिलोकचन्द

(9)

त्रिलोकचन्द माथुर
करौली (राजपूताना)
28-4-39

प्रिय उपाध्याय जी,

सस्नेह वन्दे, जब से रेल मे हम और आप भरतपुर तक साथ-साथ आये थे, उसके बाद आपसे न तो मिलने का ही अवसर पड़ा और न कोई पत्र ही इस बीच मे लिख सका, बीच मे एक बार मैं देशपाण्डे जी से तथा आपसे मिलने आगरे गया था किन्तु आप दोनो मे से कोई भी नही मिला, यह तो आपको ज्ञात ही होगा इस वर्ष यहा से चार डेलीगेट पुरी गये थे, बाबाजी, नारायणसिंह जी आदि ने ज्ञान सिंह की मारफत हमारे चुनाव के खिलाफ एक फर्जी दरख्वास्त दिलाकर हमे त्रिपुरी पहुँच जाने पर यह सूचना दी कि कार्यकारिणी ने आपका चुनाव अनियमित करार दिया है। आप लोग त्रिपुरी सेशन मे भाग नही ले सकते। हमारे साथ-साथ गोकुलजी असावा तथा एक दो अन्य लोगो को भी इसी तरह के झगड़े लगा कर उन्हे deligation से खारिज करा दिया। गाधीवादियो की एक-एक वोट उन्होंने गिनकर खारिज करदी, बहुमत उनका था। उधर working committee के सब सदस्य स्तीफा देकर बैठे थे। A.I.C.C. मे भी मामला ले जाने मे हमे न्यायप्राप्ति की उम्मीद नही थी। मै सरदार पटेल से मिला था, उन्हे ने यही कहा कि A.I.C.C. मे अर्जी तो देनी चाहिये अभी तो हम लोगो के हाथ मे भी कुछ नहीं है, उस समय हमने कोई अर्जी नहीं दी किन्तु अब अपनी complain A.I.C.C. मे भेजी है। उस पर A.I.C.C. के मन्त्री से कैफियत मागी है हमारे पास भी जवाब आ गया है देखें क्या होता है। आप अपने विचार लिखने की कृपा करें।

कांग्रेस से लौटने के बाद हमने यहां राजनैतिक कार्य करने के लिए प्रजामण्डल बना लिया है। गत राष्ट्रीय सप्ताह प्रजामण्डल की ओर से ही मनाया गया था, प्रभात फेरी निकाली गई, प्रजामण्डल के गायन तथा अन्य राष्ट्रीय गायन

गाते हुए शहर की गली-गली में सात रोज तक चक्कर लगाये, चार पांच रोज तक हरिजन समिति की ओर से, खादी की ओर से, कांग्रेस कमेटी की ओर से तथा प्रजामण्डल की ओर से मीटिंग की। प्रजामण्डल की मीटिंग में कुछ प्रस्ताव पास किये जिनकी एक प्रति इस पत्र के साथ भेजी जा रही है, कौमी नारे लगाये गये, सदस्य बनने के लिए अपील बांटी गई। यहां के मौजूदा रिवाज के मुताविक हमारे ये सारे काम गैर कानूनी थे लेकिन राज्य ने अभी कोई step हमारे खिलाफ नहीं लिया है हां जो सरकारी मुलाजिम जो दो चार पांच हमारी मीटिंग में शरीक हुये उनके खिलाफ action लिए जा रहे हैं और राज्य ने एक सक्यूलर इस मजबून का निकाला है। कोई सरकारी मुलाजिम माफीदार या अन्य कोई भी व्यक्ति जो राज्य से कुछ मुफाम उठाता हो राजनैतिक हलचलों में भाग न ले वरन् सख्त तहारूक किया जायगा। इस प्रकार प्रजामण्डल की प्रगति को रोकने की चेष्टा चल रही है। जयपुर का अभी तक कोई फैसला नहीं हुआ। जयपुर के आन्दोलन का यदि अच्छा नतीजा निकल आता तो अन्य राज्यों पर उसका अच्छा असर होता, अब जयपुर के मामले में क्या हो रहा है लिखें, आप क्या कर रहे हैं, आगे का क्या निश्चय है, उत्तर देने की कृपा करें।

भवदीय

त्रिलोकचन्द

(P S.) प्रजामण्डल के लिए हमें आर्थिक सहायता की आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में मैंने देशपाण्डेजी को भी लिखा है। आप हमारी मदद करा सकते हैं, ऐसी हमें आशा है।

(Encloser with the letter)

करौली राज्य प्रजामण्डल द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव

(1) करौली राज्य निवासियों की यह सभा प्रस्ताव करती है कि करौली राज्य में शासन सुधार करने के लिए पांच आदमियों का एक कमीशन नियत किया जाय जैसाकि कई अन्य राज्यों में किया गया है। इस कमीशन के तीन सदस्य प्रजा द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि हों तथा दो सदस्य सरकारी हों जिन्हें अपनी रिपोर्ट तैयार करने की सब सुविधायें प्राप्त हों।

(2) यह सभा प्रस्ताव करती है कि करौली राज्य के किसानों को नीचे लिखी हुई सुविधायें तुरन्त दी जायें।

(अ) हजूर तहसील के किसानो की फसलो को सुअरो के कारण नुकसान हुआ करता है, जिसकी वजह से वे बरबाद हुए जा रहे हैं। इसलिए यह सभा महाराजा साहब से प्रार्थना करती है कि वह अन्य तहसीलो की भांति इस तहसील से भी सूअर मारने की पाबन्दी उठाने की कृपा करें।

(ब) करौली राज्य मे बहुत स्थानो पर कुओ का पानी बिल्कुल सूख गया है, किन्तु किसानो से चाही जमीन का लगान वसूल किया जा रहा है, अतएव यह सभा प्रस्ताव करती है कि जब किसानों ने अवपाशी की ही नही है, तब उनसे चाही जमीन का लगान लेना मुनासिब नही है, इसलिए महाराजासाहब से प्रार्थना है कि वह ऐसी सूरत मे किसानो को मुजराई देने की उदारता दिखलायें।

(स) करौली राज्य में किसानो से बंजर खेती का लगान वसूल किया जाता है, एव किसान। के लावारिश मर जाने पर उनकी आराजी जबरदस्ती उनके रिश्तेदारो के खेता मे बाध दी जाती है जो सर्वथा अनुचित है इसलिए यह सभा महा-राजा साहब से प्रार्थना करती है कि यह प्रथा एकदम उठा दी जाए।

(द) करौली राज्य मे किसानो को अपनी जमीनो पर मौरूसी हक प्राप्त नही है, इसलिए उन्हें अपनी जमीनो पर उसी प्रकार की सब सुविधायें दी जायें जैसी कि सयुक्त प्रान्त की कांग्रेस गवर्नमेण्ट ने अपने हाल मे पास किये गये टैनेसीएक्ट द्वारा दी हैं।

(य) किसानो को कम सूद पर कर्जा प्राप्त करने के लिए यह सभा आवश्यक समझती है कि उनकी उन्नति के लिए सहयोग समितियो (Co operative Societies) कायम की जायें।

(3) यह सभा प्रस्ताव करती है कि करौली राज्य द्वारा ली जाने वाली महाजनों, कण्डेरो, दर्जियो, नाईयो, तेलियो, कुम्हारो, कोलियो, गाढ़ियो, कसाईयों, खरादियो आदि जातियो से एव

किसानों से ली जाने वाली सब प्रकार की बेगारें बन्द कर देनी चाहिए।

(4) करौली राज्य के चमार बेगार की प्रथा से बिलकुल बरबाद हो रहे हैं, एवं इस सम्बन्ध में लोग बहुत दिनों से फरियाद कर रहे हैं, किन्तु उनके साथ अभी तक पूरा-पूरा न्याय नहीं हुआ है। ता० 28-7-39 को महकमा खास के हुकम द्वारा चमारों को जो रियायतें दी गई हैं, वे बिलकुल ना काफी हैं, इसलिए यह सभा महाराजा साहब से प्रार्थना करती है कि मनुष्यत्व (इन्सानियत) का लिहाज करके उदारतापूर्वक चमारों से ली जाने वाली सब प्रकार की बेगार शीघ्र से शीघ्र बन्द किये जाने की आज्ञा प्रदान करें।

(5) म्यूनिस्पल कमेटी शहर करौली की मियाद आगामी अगस्त मास में समाप्त होने वाली है। इस म्यूनिस्पल कमेटी का प्रबन्ध अब तक नामजदगी की प्रथा पर चल रहा है। इसलिये करौली राज्य निवासियों की यह सभा प्रस्ताव करती है कि नामजदगी की प्रथा शीघ्र बन्द करके उसके स्थान पर निर्वाचन प्रणाली शीघ्र जारी करदी जाय और कमेटी का चेयरमैन निर्वाचित सदस्यों में से उनके द्वारा ही चुना हुआ हो।

(6) इस राज्य में स्थानीय शासन प्रणाली (Local self govt.) के ढंग पर कोई डिस्ट्रिक्ट बोर्ड नहीं है, इसलिए यह सभा प्रस्ताव करती है कि यहां की देहातों की उन्नति के लिए तहसीली हलकों को शीघ्र म्युनिस्पल अधिकार दे दिये जाये तथा एक डिस्ट्रिक्ट बोर्ड भी कायम कर दिया जाये।

(फाइन आर्ट प्रिंटिंग काटेज-दौलतमारकीट आगरा)

(10)

त्रिलोकचन्द
करौली (राजपूताना)
ता० 26-6-39

प्रिय उपाध्याय जी,

सस्नेह वन्दे, कृपापत्र मिला, धन्यवाद आप 7-8 जौलाई को अजमेर

लौट रहे हैं, हम बहुत चाहते थे कि आपकी वापसी मे एक दो रोज आपको इधर ठहरा लेते, किन्तु सयोग से मुझे 1 जुलाई को बम्बई अहमदाबाद वगैरह की ओर जाना पड रहा है इन दिनो खादी का स्टाक बढ जाने से काम मे बडी ढिलाई आ गई है, इसलिये हमे दु ख है कि मेरे उपस्थित न रहने के कारण आपके इधर आने का हम लोग उचित उपयोग न कर सकेंगे। श्री राधाकिशनजी तथा जानकी देवी जी 23 जून को हिण्डोन आये थे। मै उनसे मिलने गया था और इधर आने का आग्रह किया था किन्तु उनका प्रोग्राम पहले से ही निश्चित था इसलिए इधर न आ सके, अब शीघ्र ही राधाकिशन जी के इधर आने की सम्भावना नही है, अतएव सब मित्रो की राय है कि आपको किसी अन्य अवसर पर बुलाया जाय और देशपाण्डेजी आदि को पहले ही सूचना देकर उस समय आने को राजी कर लिया जाये।

हम लोगो का अजमेर जाने का विचार नहीं था किन्तु अजमेर से ओकारलालजी यहा आये और उन्होने आग्रह किया कि हम लोगो को जाना अवश्य चाहिये, फिर जैसी परिस्थिति हो वैसा रुख अखत्यार करने मे हम स्वतन्त्र है, आपको यह मालूम ही है कि नारायनसिंह जी से बहुत दिनो से मतभेद चल रहा था, इसलिये यह सोचा गया कि वहा एक बार चलना अवश्य चाहिये। यह सोच कर हम लोग वहा गये भी थे, मीटिंग से पहले गोकुलजी तथा बालकृष्णजी मिले थे। उन्होने ऐसी इच्छा जाहिर की कि हमे या तो आना न था या neutral रहना चाहिये। मीटिंग का दृश्य देख कर हम लोगो के मन पर बहुत बुरी छाप पडी। इन्दौर के दो प्रतिनिधियो के प्रश्न को लेकर दोनो मे काफी तनातनी हो गई। कामरेडो की ओर से एक दो आदमी लाठी एव छुरी बाध कर आये थे। इसी प्रश्न पर वे लोग walk out कर गये, उनके चले जाने के बाद गौरीशकर जी के तरफदार लोग ही मीटिंग मे रह गये। उन लोगो ने मुझ पर काफी दबाव डाला कि मैं कार्यकारिणी मे आ जाऊ तथा उनकी पार्टी का साथ दू क्योकि वे लोग सब अपने को गाधीवादी कहते थे, मैंने उनसे साफ कह दिया कि अगर आप लोगो को गाधीवादी होने का गर्व है तो आप पहले महात्माजी के विश्वास भाजन बनें तब हम लोग आपके साथ सहयोग कर सकते हैं। ज्वालाप्रसाद जी मुकर्जी आदि हमे मिले उनसे भी हमने यही कहा और हम लोग लौट आये। आपके न होने से हम लोग कभी कभी बडे असमजस मे पड जाते हैं। उधर प्रान्त की हालत देख कर दु:ख होता है और इधर अपनी कोई पार्टी न होने की वजह से काम करने मे पूरी दिक्कत महसूस होती है। अब आप कोई तरीका सोचिये

और अपनी पार्टी को संगठित कीजिये और हम लोगों को भी साथ लीजियें। योग्य सेवा से सूचित कीजिये ।

भवदीय
त्रिलोकचन्द

(11)

त्रिलोकचन्द माथुर
ता० 16-11-39

प्रिय शंकरलालजी,

सप्रेम वन्दे, पत्र करौली मिला। शान्ती के लिये अभी कोई तजवीज नहीं हुई है। आप लोगों ने क्या सोचा, मैं 14 तारीख से मथुरा आ गया हूं। यू. पी. राजनैतिक सम्मेलन के अवसर पर यहां पूर्वी राजपूताने के राज्यों की एक कान्फ्रेंस हो रही है। मुझे संयोजक वनाया है। यह कान्फ्रेंस 30 नवम्वर को होगी तव तक मैं यहीं रहूंगा। हो सका तो एक दो रोज को वीच में भरतपुर आऊंगा तव शान्ती के वारे में वातचीत करेंगे। शामा भी मथुरा आई हुई है शेष वच्चे सव करौली में है।

भवदीय
त्रिलोकचन्द माथुर करौली वाले
पुराना वरफखाना,
मथुरा

(12)

त्रिलोकचंन्द माथुर
करौली (राजपूताना
ता० 19-11-39

प्रिय उपाध्याय जी,

सस्नेह वन्दे, यू. पी. राजनैतिक सम्मेलन के अवसर पर राजपूताने के कतिपय कार्यकर्ताओं ने इस अवसर से लाभ उठानेके लिये राजपूताने के राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन करना निश्चित किया है। देश की जैसी हालत है उसको देखते हुए राजपूताने के राज्यों की प्रजा के संगठन तथा उसकी सभी समस्याओं पर विचार कर लेना वहुत जरूरी है यह विचार गम्भीरतापूर्वक होना चाहिये, और

एक workable plan बनाकर आगे बढने की जरूरत है। हम लोगो ने इस अवसर पर सभी विचार के कार्यकर्ताओ को निमनत्रण दिया है। राजपूताने के सभी महारथी नेताओ को परामर्श के लिये बुलाया है। ऐसे अवसर पर आपका सम्मेलन मे शरीक होना नितान्त आवश्यक है आप खुद पधारें तथा शास्त्रीजी से भी आग्रह करें कि वे भी अपने सभी साथी कार्यकर्ताओ के साथ सम्मेलन मे पधारने की कृपा करें, कृपया आप यह भी लिखें कि हम राजस्थान के किन किन कार्यकर्ताओ को खास तौर से पत्र लिख कर बुलावें उनके नाम तथा पते भी लिखें।

सम्मेलन मे आने वाले कार्यकर्ताओं के ठहरने एव भोजनादि की व्यवस्था प्रबन्ध समिति की ओर से की जावेगी।

ऐसे अवसर पर उपेक्षा वृत्ति के कारण अवाछनीय लोगो को अवसर मिल जाता है। इसलिये आपसे प्रार्थना है कि अगर कोई बहुत बडा कारण आपके मार्ग मे बाधक नही हो तो आप अवश्य पधारें और Full force मे आवें, उत्तर लौटती डाक से देने की कृपा करें, समय बहुत कम रह गया है।

भवदीय
त्रिलोकचन्द माथुर
रेवतीशरण
C/o भरतपुर राज्य प्रजामण्डल

(13)

Trilok Chand Mathur
B. A. (National)
Karauli (Rajputana)
No ....

त्रिलोकचन्द माथुर
बी. ए (राष्ट्रीय)
करौली (राजपूताना)

ता० 13-7-40

प्रिय उपाध्याय जी,

सप्रेम वन्दे, कुछ दिन पहले आपको एक पत्र लिखा था किन्तु उसका कोई उत्तर नही मिला, मुझे बडा दुख है कि प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी मे एक जुम्मेवार पद लेकर मै कोई सेवा नही कर पाया, दिन पर दिन परिस्थिति बिगडती जा रही है। यह समझ कर मेरे पद ग्रहण करने से पार्टी को लाभ होगा, आप सज्जनों की राय से ऐसा किया था, उस समय मुझे आशा थी कि मैं अपने स्थानीय कार्य से समय निकालकर कुछ सेवा कर सकूंगा, परन्तु परिस्थिति वश आज मैं पार्टी की

कुछ भी सेवा करने में मजबूर हूँ इसके लिए मुझे बहुत खेद तथा लज्जा मालुम होती है।

यहां के सारे कार्य का आधार हमारा खादी का काम है, किन्तु युद्ध के कारण खादी का काम एकदम बन्द ही सा है। अप्रेल, मई में हमारे पास कोई आर्डर नहीं है पिछले माह में मैं बम्बई, अहमदाबाद, सूरत आदि स्थानों में गया था। तमाम भण्डारों में स्टाक भरे पड़े हैं। बहुत कोशिश करने पर भी कोई आर्डर नहीं मिल सका। हमारे यहां काफी स्टाक हो गया है, जून से लोगों को वेतन देना बन्द कर दिया है। लागत तथा अन्य आवश्कीय खर्चे का निकलना मुश्किल हो रहा है। हमारी संस्था में सारा रुपया हमारी जुम्मेवारी पर दूसरे लोगों का लगा हुआ है। निज की कोई पूंजी नहीं है। काम घाटे से चला तो लोगों का रुपया देना मुश्किल हो जायगा। यह स्थिति कब तक रहेगी, इसका कुछ तयः नहीं है, ऐसी सूरत में हमारी लगभग सभी संस्था बड़े आर्थिक संकट में है। थोड़े दिन यही हालत रही तो बन्द कर देनी पड़ेगी। यहां की परिस्थिति के अनुसार सार्वजनिक कामों में कोई पैसा नहीं मिल सकता, गरीबी तथा शिक्षा की कमी दोनों ही इसके कारण हैं।

दूसरी बात यह है कि तीन चार मास से मेरा स्वास्थ्य बिल्कुल गिरता जा रहा है। मेरे बोलने की शक्ति जाती रही है, मैं भाषण देने के सर्वथा अयोग्य हूँ, जोर से बोला नहीं जाता, अगर कहने की कोशिश करता हूँ तो गिन गिनाने लग जाता हूँ, आवाज बैठ जाती है गले में हमेशा खुश्की रहती है, इन परिस्थितियों में एक राष्ट्रीय संस्था के जुम्मेवार पद पर रहकर उसकी कुछ भी सेवा करने में समर्थ नहीं हूँ। ऐसी सूरत में यदि पार्टी के हित को कोई हानि नहीं हो तो और कोई दूसरी व्यवस्था करके मेरा स्तीफा मन्जूर कर लेना अच्छा होगा।

अगर आप एवं अन्य मित्र लोग केवल मेरे नाम का ही उपयोग कर सकें तो दूसरी बात है। आप सोचकर एवं परामर्श करके उत्तर लिखें। जब मैं काम करने के योग्य ही नहीं हूँ, उस सूरत में तो मुझे इस गुरुतर भार से मुक्त करना ही अच्छा होगा।

अपनी राय स्पष्ट लिखें।

भवदीय
तिलोकचन्द

(14)

करौली राज्य प्रजामण्डल, करौली (राजपूताना)

करौली ता० 15-7-46

पूज्य दा साहब,

सादर प्रणाम, हटूडी से ता० बिना दस्तखतो का पत्र गाव के दौरे से लौटने पर कल मिला, ठीक है, प्रजा मण्डल के खर्च की व्यवस्था कुछ स्थानीय और कुछ बाहरी मित्रो से करली जायगी, मेरे खर्च के बारे म आपने पूछा है। हम पाच आदमी हैं छोटा बच्चा 6 वर्ष और बडा 14 का है बडा मुकुन्दगढ पढता है। खर्च का हिसाब 70) मासिक से कम नही बैठना चरखा सघ पिछली फरवरी मे छोडा है, वहा करीब 80) मिलते थे, मकान, रोशनी, पानी की सुविधा अलग थी उतने म काम अच्छी तरह चलता था, लेकिन अब कुछ कम अच्छी तरह सही 70) की व्यवस्था होने पर काम चलेगा। 221956

यहा के खादी कार्य के बारे मे आपको समय समय पर जानकारी मिलती रही है, चरखा सघ के जन्म के साथ यहा का काम चालू हुआ। प्रदेश के अच्छे उत्पत्ति केन्द्रो के समान यहा का काम और ख्याति थी और अब यह काम अनुपयुक्त हाथो मे होने के कारण नष्ट हो रहा है, इन लोगो ने अन सर्टीफाइड काम शुरू कर दिया है। अगर श्री जाजू जी मान जायें तो ठीक होगा कि यहा चर्खा सघ की ओर से काम चालू हो जाय दूसरा विकल्प यह है कि यहा के दूसरे जिम्मेदार कार्यकर्ताओ के हाथ मे यह काम रहे, आप यहा के काम को बचाने का प्रयत्न करें तो श्रेष्ठ होगा।

आपका

चिरन्जीलाल शर्मा

(15)

करौली राज्य प्रजामण्डल, करौली (राजपूताना)

करौली ता० 25-11-46

पूज्य दा साहब,

सादर प्रणाम् कार्य समिति की बैठक के अवसर पर आप करौली आयेंगे ऐसी आशा थी लेकिन आप नही आये।

करौली में खादी कार्य फिर से चालू करने के विषय में एक वार पहले भी मैंने आपको लिखा था, अब प्रान्तीय कार्यालय में कुछ रद्दो वदल हुआ है। और करौली में काम चालू करना या कराने की आशा फलवती हो सकती है, गोविन्दगढ़ में श्री भीमसेन जी, रामेश्वरजी से वात करली है वे प्रमाण पत्र भी दे सकते हैं, ग्राम सेवा मण्डल जैसी संस्था निर्मित करके काम प्रारम्भ करने का विचार है, मुझे तो प्रजा मण्डल के काम से विलकुल अवकाश नहीं मिल सकता अतः रामसिंह जी तथा एक दो अन्य मित्रों को इस काम में लगा देना है, 5 आदमियों का एक ट्रस्टी मण्डल वनाना है और संस्था की अपनी कुछ पूंजी भी जुटानी है, आपसे निवेदन है कि उसी मण्डल में आपका भी नाम रहे तो आपको कोई एतराज तो नहीं है, काम निहायत खूबसूरती और ढंग के साथ होगा अपको किसी प्रकार की शिकायत का कोई मौका नही मिलेगा, मैं सक्रिय काम तो नहीं कर सकूंगा मगर देख रेख रहेगी।

आप से तो कहे और विना पूछे भी हम लोग अधिकार रखते हैं कि आपका और आपके नाम का उपयोग करें

श्री ओंकारसिंह जी अपना प्राइवेट काम करते हैं मैं उनसे भी वात करना चाहता हूं यदि अपना अन सर्टीफाइड काम वन्द करके वे इस काम में सहायता दे सकते है। और नई संस्था के प्रति अपने को अर्पित कर सकते हों सो हम उनका भी स्वागत करने को तैयार है आशा हैं आपकी उचित सलाह और पथ प्रदर्शन मिलेगा।

विनीत
चिरन्जीलाल शर्मा

(16)

करौली राज्य प्रजा मण्डल, करौली (राजपूताना)

करौली ता० 8-7-47

पूज्य दा. सा.

सादर प्रणाम्, कार्ड मिला, कल ही वम्वई से और केशवदेव जी नेवटिया द्वारा भिजवाया चैक मिल गया है। वारह मास का हिसाव साफ हुआ।

खादी कार्य चालू हो गया है, श्री शास्त्री जी का तार आया था सो रामसिंह जी पांच सात दिन के लिये वनस्थली गये है, रामसिंहजी का इधर आना श्री शास्त्री जी को पसन्द नहीं रहा है लेकिन अव तो रामसिंह जी को यहीं का काम सम्भालना है गुजरात चर्खा संघ वालों को लिखा है उधर से पांच सात गांठ सूती रुई की आने पर वाकी माल तैयार होने लगेगा, अभी तो देशी रुई का

मोटा 10, 12 न० का माल तैयार होने लगा है खादी पर कस्टम माफ होने सम्बन्धी कागज स्टेट कांसिल में चल रहा है। कस्टम कमिश्नर ने अच्छी राय लिख दी है, अक्टूबर तक काम भली प्रकार चल निकलेगा। क्षेत्र तो यहा का अच्छा है ही। आपका पत्र लेकर श्री साहनलाल जी से जयपुर मिला था, उस दिन बाजार में भावों का उतार चढाव ज्यादा था कहने लगे "पाछे बात करस्या आज तो मौको कोनी।" शायद उन्हे घाटा भी लग गया। फिर मैंने दूसरे दिन भी बात नही की और मामला श्री जोशी के सुपुर्द कर दिया वे समय पर उनसे बात करेंगे, भागीरथ जी ने दो हजार के लिये लिख तो दिया है लेकिन कुटीर वालों से मिलने पर रुपया दे सकेंगे।

राज द्वारा एक सुधार कमेटी बनाने का एलान हुआ है। 11 मैम्बर नामजद किये हैं। प्रजा मण्डल की बिलकुल उपेक्षा की गई है। प्रजामण्डल के दो आदमी लिये अवश्य हैं लेकिन व्यक्तिगत हैसियत से लिये हैं प्रजामण्डल से पूछकर नही, दीवान की नीति प्रजामण्डल को अलग टाल रखने की है, दोनो सदस्यो से स्तीफा दिलवाना है और कमेटी का विरोध करना है, अभी हमें तो दिखता है कि शायद संघर्ष करना पड़े क्योंकि राजवाले हमारे खिलाफ प्रतिगामी लोगों का गुट बना रहे हैं, कमेटियों में उन्ही लोगों को ले रहे हैं। प्रजा मण्डल की उपेक्षा करते हैं।

कल्याण प्रसाद जी गुप्ता को कन्ट्रोल सम्बन्धी मामले में 1 साल की सख्त सजा व 300) जुर्माना कर दिया है, उन्होंने जेल में पहुचते ही भूख हड़ताल प्रारम्भ कर दी है आज दसवा दिन है, उनका कहना है कि मेरे मामले को बाहर कही हाईकोर्ट में भेजा जाय या इजलास खास में सुनवाई हो, दीवान कहता है कि यहा की हाईकोर्ट से फैसला हो गया आगे कही सुनवाई नही हो सकती, 500 आदमियो का डेप्यूटेशन राजा के यहा भी गया वह भी इन्कार हो गया है, मामला उलझ रहा है, काम करने वालो को फौजदारी जुर्म मे फसाने की राज की चाल है इस मामले मे भी वही बात है, राजवालो ने इरादतन फसाने बदला लेने की भावना से उसे सजा दी है, अजमेर के जगत नन्दन यहा चीफ जस्टिस हैं लोगों का इन पर विश्वास नही है, कहते हैं रिश्वत लेने वाले आदमी हैं इस मामला को सार्वजनिक रूप भी नही दिया जा सका है क्योंकि कल्याण प्रसाद जी के खिलाफ अधिकाश राज्य कर्मचारी और जनता मे भी बहुत से लोग है, दुकानदारी के मामले में बहुत से लोगो से उनके स्वार्थ उलझे हुये थे, भूख हड़ताल भी बड़े गलत ढग से की गई बिना किसी पूर्व सूचना के जेल मे पहुचते ही करदी गई और तीन दिन बाद मारे रखी गई, इस मामले मे प्रजामण्डल की

स्थिति विचित्र बन गई हैं, कल उनसे जेल में फिर मिल रहा हूँ जैसे भी हो उनकी प्राण रक्षा तो करनी ही है, कोई सम्मान जनक मार्ग निकल आये तो ठीक रहे ।

बम्बई की सहायता के सम्बन्ध में अपनी एक साल के लिये बात हुई वह साल खत्म हुआ, मैं तय नहीं कर पाया कि आखिर अपने खर्च का सवाल कैसे हल किया जाय, कोई काम शुरु करें और उसमें पूरा समय नहीं लगायें तब तक वह जम नहीं सकता, जमने पर आधा समय काम करने पर भी खर्च निकल सकता है, यहां के काम की जुम्मेवारी भी इजाजत नहीं देती कि अपने किसी काम में पूरा वक्त लगाया जाय ।

बम्बई वाली सहायता अगर कुछ समय तक और चालू रख सकें तो जारी रखवा दी जाये और आगे किस तरह विधि बैठाई जाय यह भी बताइये । यहां सरकारी के अलावा और कोई प्रेस नहीं है, मैं सोचता हूँ कुछ मित्रो से पैसे लगवाकर प्रेस का काम शुरू करवाया जाय, अभी मशीन ठीक नहीं मिल रही है महगी भी है, कुछ मित्रा से बात भी की हैं आठेक हजार रुपया लगवाया जा सकता है, यह काम अपने सार्वजनिक काम से मेल भी खाता है, आपकी क्या राय है लिखने की कृपा करें ।

विनीत
चिरन्जीलाल शर्मा

(17)

करौली राज्य प्रजामण्डल, करौली (राजपूताना)

करौली ता. 23-7-46

पूज्य दा. सा.

सादर प्रणाम आपका 19 का पत्र मिला, अब स्वास्थ्य का कैसा हाल है, आशा है पहले से कुछ सुधार हुआ होगा ।

आपने कोष के काम में कुछ समय देने के लिये कहा है, कोष के बारे में थोड़ी जानकारी दीजीयेगा, कमेटी में कितने आदमी हैं और कौन कौन हैं, अब तक क्या काम हुआ है पैसा किस सर्किल से मिलेगा, हमारे जैसे आदमी पैसा इकट्ठा कर सकेंगे क्या? क्योंकि आज कल पैसा प्राप्त करना कठिन होता जा रहा है, धनिक वर्ग कांग्रेस और सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं से सशंकित होने लगे हैं, पहिले जैसे सुखद भविष्य की कल्पना और भावुकता का स्थान अब यथार्थता ने ले लिया है, जिससे कुछ मतलब हल होता दिखता है लोग उसी संस्था या व्यक्ति को पैसा देते हैं ।

एक दो मास का समय तो निकाला जा सकता है, काम के बारे में कुछ रुपये रखा भेजें कहां-कहां, और किन लोगों के पास जाना होगा और वहां किन 2 लोगों से मदद मिलेगी, अपने प्रान्त में और प्रान्त के बाहर भी।

श्री कल्याण प्रसाद जी का अनशन बिना किसी शर्त के समाप्त हो गया है ग्राम सेवा मण्डल का काम चल रहा है।

वर्षा सब जगह हो गई हैं, खेती बो दी गई है।

आपका

चिरन्जीलाल शर्मा

Selections from Haribhau Upadhyay Papers
2. Agrarian Movement in Madhya Pradesh

The records published below are about Agrarian Movement in Madhya Pradesh. Haribhau Upadhyay has played an important role there too. The affairs of Malwa or Central India were linked up with Rajputana leaders.

Sitamau was a small state in Malwa but the agrarian refoms which tookp'ace there are important. In 1940-41 the subjects of the State were releaved from heavy taxation. All most a halfe was abolished. The credit goes to Maharajkumar Dr. Raghuvir Sinh, who is a well known historian of our age.

The another incident is regarding Birla Mill in Nagda in the former state of Gwalior The agricultural land was forcibly acquired by the mill authorities and a very megre compensation was offered. The leaders of the kisans, though they themselve were rot agriculturists, sought the intervention from Late Shri Haribhau Upadhyay. An existence of Gwalior Rajya Kisan Sabha is also proved by these papers,

The papers preserved in original at Private Paper Collection Section of Nehru Memorial Museum and Library, New Delhi are important not only for further researches in the field of Agrarian Movements in Madhya Pradesh but also for studying economic and social history point of view.

It is proved here also that the leadership in the kisan movements was an external factor. (In my book *Agrarian Movement in Rajasthan* Delhi, 1974 I have given similar arguments). It is also a matter of the further investigations that the leadership was not of the view to be in struggle against the ruling princes of the princely states.

(1)

वन्देमातरम्

सीतामउ

29-9-40

श्रीमान् दादा साहेब, सेवा मे हम नीचे हस्ताक्षर करने वालो का सप्रेम सादर वन्दे स्वीकार हो, अपरंच हमारी यह प्रार्थना है कि आप गांधी जयंति पर मन्दसोर पधार रहे हैं इसलिए श्रीमान् से प्रार्थना है कि एक दिन के लिए आप सीतामउ पधार जायँ ताकि हम लोग भी आप के सामने गांधी जयन्ति मना सकें, आप पधारेंगे तो राजनैतिक परिस्थिति भी कुछ सुधर जायगी और हम लोग भी आपके दर्शन कर लेंगे। आशा है आप हमारी प्रार्थना पर ध्यान देकर एक दिन के लि सीतामउ जरूर पधारेंगे।

आपके दर्शन अभिलाषी

श्री सज्जनसिंह

नथरमलाल पोरवाल

बसन्तीलाल

बदरीलाल

Ratan Lal Lodawalı

सोभागमल

शंकरलाल सोनी

कन्हैयालाल कठाली,

उमाशंकर खतरी

आप जयपुर पधारें

गोवरधनलाल टोपी

नन्दलाल दलाल

गोवरधन

के एम केकट लाना

कृपाराम

गोवरधनलाल सुनार

कन्हैयालाल दर्जी

(2)

Revenue Ministers Office
Sitamau State
Sitamau C. I.

श्रीयुत् उपाध्याय जी साहब, 194..................

नमस्ते आपसे मिलकर मुझे प्रसन्नता है। आपका सहवास थोड़े समय रहा उसी में मुझे यह अवश्य जान पड़ा कि आप सहृदय; सज्जन और सत्य प्रिय हैं। जो यह एक कारण और दूसरा आप मेरे कृपा निधान डाक्टर अंबेलाला जी साहब के मित्र इन्हीं दो बातों ने मुझे यह पत्र लिखने का रास्ता सुझाया है इस पत्र द्वारा व्यर्थ आपका समय नष्ट करने की क्षमा चाहता हूं।

कतिपय ऐसे सज्जन जो महात्मागांधी की सफेद टोपी का बनावटी लोटा उठाकर सत्य और अहिंसा के महात्मा जी के प्रिय सिद्धान्तों को कलंकित और कलुषित करने का उद्योग अपने अनुचित फायदे के लिए मन्दसोर आदि स्थानों से कर रहे है, उन्होंने सीतामऊ स्टेट में और मेरे लिए व्यर्थ की बातें जाटाराम आदि स्थानों में बकी इनके विषय में मैं आपको 3 पत्रों में तीनों अलग-अलग बातों को सूक्ष्म दिगदर्शन कराना चाहता हूं मेरे लिए तीन बातें कही गई उनके विषय में इतना ही काफी समझता हू कि—

1. कृषि कारान के साथ मेरा किसी भी प्रकार का लेन देन नहीं है
2. 30 वर्षों में किसी कृषिकार से ज्यादे तो क्या एक पोस्त भी अनुचित सीरी होना अथवा कोई चीज मुफ्त लेना
3. किसी कृषि का० के साथ कभी अनुचित हुए व्यहार करना।

कोईपुरुष प्रमाणित कर दे तो मैं 100) रुपये उसके नजर करूंगा।

इन सब बातों का आप का इतिमीनान आप चाहेंगे तो डाक्टर साहब से करा दूंगा—केवल आपके ध्यान में रहने वास्ते यह लिखता हूँ। मुझे और कोई मतलब नहीं। आपने परोक्षमूल से वार्ता समय में इन बातों को जताया था। इसीलिए आप जैसे सज्जन की तबीयत पर कोई बात जमें यह मैं नहीं चाहता हूँ इसी वास्ते यह पत्र लिखा है।

दूसरे पत्र से स्टेट सम्बन्धी बातों में सार के विषय का दिग्दर्शन करूंगा।

कृपा है
आपका शुभेच्छु
लालसिंह नौलखा

(3)

Revenue Ministers Office
Sitamau State
Sitamau C. I

श्रीयुत् उपाध्याय जी साहब

नमस्ते, सीतामऊ के कृषिकारो के साथ घोर अन्याय का दूसरा विषय–

प्रथम तो रियासत से बाहर रहने वालो ने किससे यह वृतान्त पाया 1–2 गुण्डे जो अपने स्वार्थ के लिए बकवाद करते फिरते हैं वह स्वय कृषिकार नही केवल अपने स्वार्थ की सिद्ध न होने से असन्तोषी हैं न उनकी प्रजा में कोई इज्जत न शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों पर प्रभाव।

द्वितीय मालवे की अन्य रियासतो के मुकाबले मे सीतामऊ मे कौन सी विशेष बात है यह बताई नही गई कर किस स्थान पर नही,

अब मैं यह बताता हूँ 2 वर्ष मे कृषिकारो के सुधार का क्या-क्या किया गया।

1. लगान 119000 को घटाकर 96000 रखा गया।
2. 1,13,000 बकाया माफ की गई।
3. फसलो की लाग बेगार, कलाई उठाई गई।
4. मोरूसी हक खाते का कायम कर दिया गया।
5. दरखत खातो के कृषिकारो के माने गये।
6. तकावी का सूद 18 फीसदी से घटाकर 9 फीसदी सालाना किया गया।
7. कूओ की तकावी बिला सूद रख दी गई।
8. बीज कीमतन दिलाया जाकर वह मुदसवी रुपया फसल पर लिया जाता मुनाफा या सूद नही।
9. खाद (Grain) की वसूली के वक्त जो लाग (Extra grain) लिया जाता था वह बन्द किया गया।
10. वीटरनरी अस्पताल कायम किया गया।
11. (Biochemic) दवाओं का बाटब देहात मे किया गया, सात सेन्टर अब तक कायम हुए हैं वहा मुफ्त दवा दी जाती हैं। सीतामऊ ही के नही आसपास ग्वालियर के गावों के लोग भी वहा से दवा ले रहे हैं।

12. एक विलेज डिस्पैन्सरी खोली गई एक गांवों के लिए वैद्य मुकर्रर किया गया, एक कम्पाउण्डर ट्रैवलिंग कम्पाउण्डर के तौर पर नियत किया गया, सवारी स्टेट ने उसके लिए रखदी।

13. एक ग्रेजुएट ग्राम सुधार के लिए नियत किया जो इस वक्त U. P. गवरमेंट के Rural Development Department के अण्डर लखनऊ में ट्रेनिंग पा रहा है।

14. शहर सीतामऊ में जो फसल की चीज बिकने आती थी उस पर कर लगता था वह कूतिया उठा दिया गया।

15. कपास पर महरटटा आदि के वक्त के 4 रुपये माटी थे उसके बजाय 2 रुपये किये गये।

16. गन्ना बाहर ले जाने का मैंसूल था वह उठाया गया।

अब आप ही सोचिये कि एक छोटी सी स्टेट जिसकी आय अधिक नहीं इतना काम 2 वर्ष में करे, यह कम नहीं है स्टेट को चन्द लोगों व लगान आदि में काफी खमयाजा आपमें उठाना पड़ा है और खूबी यह है कि ये सब बातें अपनी खुशी से समय देख कर की गई हैं। कास्तकारों ने कभी कोई मांग सिवा कपास टैक्स के नहीं की, कपास टैक्स लिए केवल कास्तकारों की दरख्वास्त गुजरी थी। (वह भी स्टेट ने)

200 रुपये पर स्थाई कर दिया 100 इलाका 16 माइल पूर्व पश्चिम 18 माइल उत्तर, दक्षिण इतनी छोटी सी जगह में यह किया है। गांवों में 9 ब्रांच स्कूल कायम हो चुके हैं और कुछ बढ़ाने का विचार हो रहा है। मैंने जो कुछ लिखा इसकी सत्यता और असत्यता का पता कागजात से कोई भी देख सकता है। अब आप ही विचारें कि आपके अनुयायी लोग कितना झूठा प्रोपोगेन्डा करके अपनी आत्मा और महात्मा जी के सिद्धान्तों को कलंकित करते हैं।

शेष पुनः

आपका

(अपाठ्य)

(4)

Revenue Ministers Office
Sitamau State
Sitamau C I
25 फरवरी, 1941

श्रीयुत् उपाध्याय जी साहब,

नमस्ते, व सिलसिले पूर्व के पत्रों मे यह अन्तिम पत्र उसे पढ़ने का परिश्रम आपको दे रहा हू।

सीतामऊ एक छोटी सी रियासत है केवल 200 मुरब्बा माइल ऐरिया है, पूरब पश्चिम अथवा उत्तर-दक्षिए 17—18 माइल से विस्तार नही है 33000 जनसख्या है। पूरे तीन लाख की नेट आमदनी है 40 गाव खालसे और 60 गाव जागीर धर्मादा भी है।

आसपास इससे बड़ी रियासतें हैं। किसी सैन्ट्रल इण्डिया की रियासत (सिवाय नागौद) मे सीतामऊ दरबार तुल्य अब तक शासन सुधार किये है यहा क्या सुधार हुए उसकी कापी अलग भेज रहा हूँ आरम्भ ही मैं मेरे ख्याल मे शासन सुधार यहा हुए वैसे कम स्थान पर रियासतो मे हुए है, आप भी विचारें कि दो वर्ष के अन्दर यह सब कुछ हुआ है।

मेरा यह नही कहना कि यहा बहुत विशेषता हो गई अथवा कृषक और अन्य लोगा की हालत बिल्कुल सुधर गई मेरा मतलब यही है कि अल्पकाल मे यह सब कुछ हुआ है और स्थानो से अवश्य ठीक है और आरम्भ ठीक हुआ है भविष्य मे भी यदि राजा प्रजा के ऐसा ही व्यवहार चलता रहा, परस्पर भाव ठीक रहा, राज्य का ध्यान ऐसा ही रहा तो धीरे-धीरे तरक्की ही होगी राजा और प्रजा के इस समय अच्छा व्यवहार चल रहा है उनको भग करना व्यर्थ प्रजा को बहकाकर शान्ति बिगाडना यह बुद्धिमानी नही मुझे तो अब न विशेष दिन सर्विस करना है। साठ बरस की आयु हुई स्वास्थ्य भी बिगड रहा है इस हालत मे मेरा खास कोई मतलब नही।

परन्तु जो जिसकी मर्जी आये वह बकवास करे आप जैसे सज्जन उसमे भाग लें यह उचित नही...............

मन्दसौर

आदरणीय उपाध्यायजी, 25-3-1941

सादर सप्रेम वन्दे, आपका कृपा पत्र कानपुर पधारते हुये आगरा से ता० 22-3-1941 का लिखा हुआ मिला, समाचार मालुम हुये, मैंने हिन्दुस्तान में प्रकाशित आपका सीतामऊ सम्बन्धी लेख पढ़ा था, जिस दृष्टि से यह लिखा था उसके लिये मेरा भी यही अनुमान था जैसा आपने पत्र में लिखा हैं, मुझे तो उसके लिये कोइ आपत्ति न थी न हैं और न ही सीतामऊ में भी किसी मित्र या अन्य व्यक्ति ने उसके लिये कोई आपत्ति जनक सूचना मुझे दी, मैंने तो अपने मामले को ही नहीं वल्कि अपने आपको आपके जुम्मे कर रखा है। इस परिस्थिति में मेरा क्या कर्तव्य है। उसे मैं एक सेवक के नाते अच्छी तरह समझता हूँ।

ता० 17 मार्च का वम्वई का 'साधना' पत्र मैंने देखा, सीतामऊ सम्बन्धी लेख, 'एक सीतामऊ निवासी' के नाम से प्रकाशित हुआ, वह पढ़ा मुझे उसके लिये वड़ा दुःख हुआ, मैने दलाल जी को लिखा वे ता० 20 को यहां आये उनसे भी पूछा कि यह सम्वाद आपने या अन्य किसी मित्र ने सीतामऊ से भेजा है क्या ? उन्होंने इन्कार किया कि हम तो जानते भी नही, मैं उस सम्वाद की कटिंग के साथ पत्र आपको लिखने वाला था ही कि आपका पत्र मिल गया, मेरा तो अनुमान है कि सीतामऊ से तो किसी ने भी यह संवाद नहीं भेजा, हो सकता है वैद्य जी ने प्रकाशित कराया हो या और कोई हो जो सीतामऊ की परिस्थिति से परिचित हो, मैंने तो तो यह समझा है कि जिसने यह संवाद प्रकाशित कराया है उसने आपके साथ कमीनापन तो किया ही है साथ ही सीतामऊ की स्थिति सुलझाने का विरोधी व मैं हर प्रकार से कष्ट और कठिनाईयों में ही रहूं यह वह चाहता है।

आप पर उछाले गये कीचड़ के सम्बन्ध में 'हिन्दुस्तान' और 'आवाज' में लेख भेजा है आपने भी वहुत अच्छा किया कि इन्हें जवाव भेज दिये। ला. नन्दलाल ने भी महिदगर जाने को कहा था सम्भवतः वे आप से वहां मिलेंगे।

श्रीयुत तल्लमलजी जैन मिनिस्टर व श्रीयुत देश पाण्डे जी जयपुर रा. च. संघ के मन्त्री ता० 24 मार्च को यहा आये हैं, यहां रियासत की तरफ से कम्वल वनाने की योजना चालू होने वाली है। उनके ठीक यहां ठहरने का प्रोग्राम तो मालुम नही हुआ है फिर भी 5-6 दिन ठहरने का वतलाते हैं।

श्रीयुत तल्ल मल जी मोटर द्वारा ही यहां आये है और मोटर से ही वापिस जायेंगे, आपकी दया से मैं एवं चौथमल जी आदि सव प्रसन्न हैं। आपके स्वास्थ्य एवं प्रसन्नता के वारे में लिखते रहें, यहां योग्य सेवा कार्य लिखावें, आपने मार्च में इधर पधारने के लिये कहा था तो अव कव तक पधारना होगा

लिखावें। आगे मुझे इस मामले मे क्या करना है यह भी लिखने की कृपा करें, मगर निकट भविष्य म ही इधर पधारने का हो तो मिलन से सब बातचीत हो ही जावेगी, अगर कुछ देरी हो और आप उचित समझे तो सीतामऊ के अन्दर 2 साल में जिन सुधारा के लिये रेवेन्यू मिनिस्टर साहब ने लिखा है उन्हें लिख भेजने का कष्ट फरमावें।

मेरा विचार ता० 27 को मुरार जाने का है। यहां श्री वकील सा. रामनारायणजी आदि 4-5मित्र सेन्ट्रल कमेटी में पहुच रहे हैं, मगर जाना हुआ तो मैं 3 या 4 अप्रैल तक वापस यहा पहुच जाऊंगा। स्नेहभाव बनाये रखे।

आपका हितेच्छु
शकरलाल कटलाना

(6)

वन्देमातरम्

मन्दसौर
14-4-1941 ई०

आदरणीय श्री उपाध्याय जी,

सादर सप्रेम वन्दे, आपका पोस्ट कार्ड इन्दौर से ता. 6-4-41 का प्राप्त हुआ। मैं बाहर गया हुआ था इससे उत्तर में विलम्ब हुआ आशा है आप इसके लिये मुझे क्षमा करेंगे।

मैंने यहाँ से तो 26 मार्च को 'हिन्दुस्तान' और 'आवाज' को प्रतिवाद की एक 2 प्रति बुक पोस्ट से भेजी थी, कारण समझ नहीं आया, यह पत्र वहाँ क्या नहीं पहुचे, खैर मैंने पुन अपना स्पष्टीकरण 'हिन्दुस्तान, राजस्थान, स्वराज्य और आवाज' मे बन्द पत्र के साथ भेजा है।

आपका उत्तर (17 मार्च के आवाज का) 'राजस्थान' व 'आवाज' में प्रकाशित हो चुका है। ता. 9 अप्रैल के 'हिन्दुस्तान' में सीतामऊ की स्थिति पर आपका लेख देखा है।

समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों से तो इन्दौर सत्याग्रह की स्थिति विषम प्रतीत होती है।

आपका इधर पधारना कब तक होगा, लिखने की कृपा करें, श्रीमान् वाफना साहब ने जो कार्य बताया था अब वह 1 अप्रैल से बंद है। सीतामऊ की परिस्थिति भी दिन प्रतिदिन जटिल बनती जा रही है, सुना हैं पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट ने इस्तीफा दे दिया है। कुछ लोगों का कहना है रियासत को उनके कार्य से संतोष न हुआ, इससे डिसमिस कर दिया, अब उनके स्थान पर रतलाम के रेवाशंकर जी ओझा की सिफारिश जोरों से चल रही है किसी पंजाबी महाशय के आने की भी सुनी है। रेवेन्यू मेम्बर सा. ने भी स्तीफा दे दिया मगर दरबार ने उसे स्वीकार नहीं किया।

श्रीमन्त नरेश तो इस समय ऋषिकेश पधारे हुये हैं। युवराज सीतामऊ ही हैं।

आपकी दया से यहाँ सब कुशल प्रसन्न हैं आपके स्वास्थ्य एवं कुशलता के समाचार लिखावें, यहाँ योग्य सेवा कार्य लिखावें।

आपका हितेच्छु
शंकरलाल कटलाना

(7)

आवाज

दिनांक 7-4-1941
पृष्ठ 10

सीतामऊ की समस्या हल करने में मैं काफी सफल हुआ हूं।

सीतामऊ निवासी अनर्गल बातें कहकर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी न मारें।

श्री हरिभाऊ उपाध्याय द्वारा स्पष्टीकरण

हिन्दुस्तान में छपे मेरे एक लेख के सीतामऊ सम्बन्धी कुछ वाक्यों पर बुरी तरह बिगड़ कर एक 'सीतामऊ निवासी' के नाम से किसी महाशय ने बम्बई के 'आवाज' में मुझे बेतरह गालियां दी हैं। मेरे वाक्य जो उन्होंने उद्धृत किये हैं, वे हैं—सीतामऊ शासन सुधार की दृष्टि से वहां का राजकीय वातावरण प्रगतिशील मालूम हुआ।' (दमन की दो घटनाओं की चर्चा करते हुए आप कहते हैं) इन्हें वहां के शासन सूत्र धारों के प्रगतिशील विचारों व नीतियों के खिलाफ पेश नहीं किया जा सकता।' सीतामऊ सम्बन्धी मेरा पूरा पैरा इस प्रकार है :—

"हाल ही मे मैं सीतामऊ, बून्दी व कोटा राज्य से होकर लौटा हूँ। सीतामऊ बहुत छोटी रियासत है, फिर भी शासन सुधार की दृष्टि से वहा का राजकीय वातावरण प्रगतिशील मालूम हुआ। यद्यपि श्री शंकरलाल पटलावा को सीतामऊ से देश निकाला—दे दिया गया है, व श्री दलाल पर मुकदमा चल रहा है जो कि सीतामऊ की प्रगति के लिए वाछनीय नहीं है, तथापि इन्हे वहा के सूत्रधारो के प्रगतिशील विचारो व नीतियो के खिलाफ पेश नही किया जा सकता। व्यक्तिगत पारस्परिक विचारो व गलत फहमियो मे इनकी बुनियाद है। मुझे आशा हुई है कि ये चीजें वहां अधिक समय तक न चलेंगी।"

मैं सीतामऊ दो बार गया हूँ महाराज कुमार व राज्याधिकारियो से भी मिला हूँ, वहा के जनसेवको से भी मिला हूँ।

नेताओ से तो अक्सर ही मिलने का अवसर मिलता रहता है, तब स्थिति का व घटनाओं का अध्ययन करके वहा के शासन विधान को देखकर समझ तोल बुद्धि से जो राय मैंने बनाई, उससे किसी का मतभेद नही है तो "गाली दे बैठना इसका उपाय नहीं" हो सकता।

सीतामऊ के सार्वजनिक नेताओ के बराबर बुलाने व आग्रह करने पर मैंने उसके प्रश्न को हाथ मे ले लिया और सीतामऊ गया। अब भी इस पत्र के लेखक या उनके कोई पृष्ठ पोषक वहा समस्याओ का हल कर देते हो तो मुझे बहुत खुशी होगी व सीतामऊ के जन सेवक जनता उन्हें धन्यवाद देगी। सीतामऊ मे जन सेवकों का जितना रास्ता मैं साफ कर आया हूँ और शेष की सफाई में अब भी लगा हुआ हू, उसके बारे मे अभी अखबारों मे कुछ लिखना वहा के कार्य को बिगाडना है। मैंने सीतामऊ के शासन के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा, वह वहा की स्थिति के सुधार की दृष्टि से लिखा था। मगर अफसोस तो यह है कि हमारे एक सीतामऊ निवासी, जिन्हें अपना नाम देने का भी साहस नहीं होता है। अपने व अपने राज्य की जनता के हित को देखने की अपने शत्रु व मित्रो को पहिचानने की भी बुद्धि या धैर्य नही रखते। मेरा 'नग्न रूप' उन्हें देखना हो, या मेरी 'असफलता' की परीक्षा करनी हो तो मेरे साथ रहने की कृपा करें। अखबार के एक दो वाक्यो से भडक कर अपने पाव कुल्हाडी मारने की गलती न करें।

हरिभाऊ उपाध्याय

(8)

नवजीवन

अजमेर
ता. 16-6-41

सीतामऊ

स्थिति असन्तोषजनक है।

यहां की स्थिति काफी दिनों से असन्तोषजनक चली आ रही है। श्री शंकरलाल जी के निर्वासन का प्रश्न ज्यों का त्यों बना हुआ है समावन्दी कानून भी नही हटा है पब्लिक पुस्तकालय पर अब भी ताले पड़े हुये है श्री नन्दलाल दलाल पर चल रहा राजनैतिक मुकदमा भी अभी नहीं उठाया गया।

क्या हमारे साहित्य प्रेमी राजकुमार रघुवीर सिंह जी के शासन काल में भी उक्त अनुदार मनोवृति से काम लिया जाता रहेगा। प्रान्त के मान्य नेता श्री हरिभाऊ उपाध्याय का भी इस ओर हम विशेष ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं।

(9)

पोस्ट कार्ड

डा० चौबे
NUTAN SAHITYA PRINTING PRESS
NAGDA B C 6 I

Gwalior State

Ref No.........   Date 20-6-1945

माननीय उपाध्याय जी,

आपका कृपा कार्ड प्राप्त हुआ। धन्यवाद ! आपका यहां पर आना अत्यन्त आवश्यक है। आप शीघ्र अति शीघ्र ही आने का प्रयत्न कर आवें, मनाना जी ने जो आपको पत्र दिया था उसमें जमीन किसानों को वापस हो गई सूचना थी, किन्तु ता. 14-6-45 को पुनः किसानों की जमीन वापस मिल को दिला दी है। यह सब गैर कानूनी कार्यवाई हुई है, स्थिति गम्भीर होती जा रही है, किसानों के खेतों में पुलिस कैम्प लगा हुआ है। आपके आने से कोई सुगम मार्ग समझौते का शायद निकल आये, इसलिए आप जल्द (दूसरी तरफ कार्ड पर) से जल्द

आवें । मुझे भी शर्म आ रही है कि आपका स्वास्थ्य ठीक न होते हुए भी आपको कष्ट दे रहा हूँ । परन्तु मजबूरन आपको कष्ट दे ही पा रहा हूं इसके लिए क्षमा प्रार्थी हू । आप अपने आने की सूचना तार द्वारा देवें ।

आने मे विलम्ब न करें । शेष कृपा बनाये रखें । सेवा से सूचित करें,

आपका बन्धु
ह० चौबे

श्री युत,
हरिभाऊ जी उपाध्याय
c/o खादी भण्डार
अजमेर
Ajmer

(पोस्ट कार्ड पर अजमेर पोस्ट आफिस की 22 June 45, 12.30 A.m. की मुहर स्पष्ट है)

(10)

(पोस्ट कार्ड)

जावरोद
20-8-45

आदरणीय दादा सा,
सादर वन्दे,

आपका पत्र मिला, मैं शाजापुर में नोमीनेशन पेपर दाखिल करने गया था, वहां से आया तब आपका पत्र मिला, यहा पर नागदा के कार्यकर्ताओ की गिरफ्तारी के बाद मिल वाले तथा उनके एजेण्ट व दलालो ने किसानो पर दबाव डलवाकर व बहकाकर राजीनामे दाखिला करवा दिये, किसी को 30) किसी को 35) तथा किसी को 40 रु० बीघा दिया और कुछ दलालो ने यह भी कहा कि बाद में और ज्यादा दूसरों को मिलेगा तो फिर तुम्हें और देंगे, लेकिन मिल वाले यह कहते है कि हमने ऐसी बात नही कही, बीच मे मिल मैनेजर श्री विलासराम (य) ने मुझसे कहा था कि अभी हम सभी काश्तकारो को 48) रु० प्रति बीघा किसानो को दे देवें और हमारे खर्चे से एक मुकदमा Test Case के तौर पर

लड़ा जाय, अदालत से उस पर जो कुछ रकम तयपाय उस हिसाब से हम बाकी रकम फिर दे देंगे, मैंने कहा मैं किसानों को इस पर राजी कर लूंगा, बाद में मनाना साहब व अन्य मित्रों से सलाह करके, इस बात पर राजी करके श्री विलासराम जी से कहा तो वे बोले अब हम वह नहीं चाहते कारण हमारे वकील साहब व पुजारी जी की राय नहीं है, अभी और पीछे जो जमीन ली गई है उसके कातस्कार डटे हुये हैं और उनके मामले चल रहे हैं, उस पर भी दबाव देना पड़ रहा है, बाकी (दूसरा पृष्ठ पोस्ट कार्ड का) के मकान भी acquire किये जा रहे हैं, फिर उन पर किसानों को रहने को मकान भी मिलना मुश्किल होगा, जो जमीन है वहां जहांबादीपुर वालों के मवेशी चरते थे, वहां चरने से मना कर दिया गया हैं, किसान परेशान हैं, अदालत में मामला उलझा है, सप्ताह के बजाय कई मास लग सकते हैं और तब तक............किसान शायद जो मिले लेने पर राजी हो जावें।

नागदा के कार्यकर्ताओं ने गिरफ्तारी दी हैं, हाईकोर्ट में एक अपील की है और Transfere application भी Move की है, वहां से कुछ भी निर्णय अभी तक नहीं हुआ। 1 मास तो हो गया है, Special class मिलने को इन्होंने अनशन कर दिया था, मैंने चौथे दिन पर समाप्त करवाया, अब Special class मिल गया है, परन्तु उनमें से अधिकतर बहुत कमजोर हो गये हैं और बीमार हैं। दवाई व खाने का ठीक प्रबन्ध नहीं है। रहने का प्रबन्ध ही ठीक है, इन लोगों का स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है, शेष कुशल समाचार भेजता रहूंगा।

आपका
राधेश्याम व्यास

POST CARD
ADDRESS ONLY
Gwalior
INDIA POSTAGE
श्रीमान् हरी भाऊ जी सा.
उपाध्याय को मिले
हाथी भाटा
अजमेर (राजपूताना)
Ajmer

(11)

ग्वालियर राज्य किसान सभा
(अ० भा० किसान सभा की शाखा)

पत्र संख्या 338

हैड ऑफिस उज्जैन
तारीख 22-8-1945

अध्यक्ष
बटेश्वर दयाल शर्मा
सैक्रेटरी :-
भैरव भारतीय

श्रद्धेय महोदय,

सादर वन्दे ।

आपका कृपा पत्र प्राप्त हुआ । नागदा के किसानो के मामले मे दिल-चस्पी ले रहे हैं इसके लिए मैं किसान सभा व सम्बन्धित सभी किसान आपके मशकूर हैं ।

आपने यह जानने की इच्छा की है कि 40 रु बीघा जो मुआवजा दिया जा रहा है वह क्योंकर ठीक नही है उसका संक्षिप्त उत्तर इस प्रकार है ।

कानूनन किसान इस जमीन की बाजारू कीमत पाने के हकदार हैं जमीन की बाजारू कीमत क्या है इसके लिए कानून मे खुलासा है कि पचकूत यानी पचों द्वारा निर्णय होना । अगर 40/ बीघा जो मिल की ओर से दिया जा रहा है वह ठीक है तो मिल को पचकूत कराने मे क्यो एतराज है ? फिर किसाना को डरा धमका एव पुलिस की सहायता लेकर कानूनी कार्य करना कहा तक ठीक है । बात दर असल यह है कि नागदा मे जमीन की कीमत 100) बीघा से 600) बीघा तक है । इसके प्रमाण, यदि आप चाहें तो, जमीनरहन नामे व बयनामे हुए हैं उनकी नकलें तहसील से लेकर भेजी जा सकती है । दूसरे तीन गाव 60 किसान परिवार आज से हमेशा के लिए जमीन खो रहे हैं उनकी जीविका वे खेती करके ही पूरी कर सकते हैं । आज पहले तो जमीन मिलती ही नही और अगर कही मिले भी तो 100) बीघा से 600) बीघा तक बाजारू कीमत है फिर भला गरीब किसान, बिडलाजी द्वारा दिये जाने वाले 40) बीघा से कैसे जमीन पा सकते हैं ? गिर्द जिला जो रियासत ग्वालियर के अन्दर ही है वहा पर टाटा आदि की मिल बन रही है—अभी जमीन पर मिल का कानूनी कब्जा नही हुआ फिर भी श्री सूबा सा० ने 200) की बीघा मुआवजा देना तय

किया है, जिसे महाराजा सा० ग्वालियर ने उचित ठहराया है। और हूलूल आराजी कानून में इस बात का खुलासा है कि जो जमीन मिल कारखाने आदि के लिए ली जायें वह किसानों की मर्जी एवं उन्हें सन्तोषजनक मुआवजा दिलाकर ही हासिल करना चाहिए।

उपर्युक्त कारणों से आपको ज्ञात होगा कि किसान जो 100) बीघा हासिल करना ही चाहते हैं वह उनकी मांग गलत या कि बेबुनियाद नहीं कही जा सकती। सरकारी रेट 4/बीघा है—मानलो 15 वर्ष के लिए किसानों को रेट (लगान) देना पड़े तो 60/होते हैं और पेड़ खाद, आवपाशी, उपजाऊ जमीन आदि की कीमत जोड़े तो 100) से भी ऊपर पहुँच जाती है ऐसी सूरत में जो 100) बीघा की मांग किसानों ने रखी है, हमारी ही राय में नहीं तो प्रत्येक व्यक्ति की राय में जायज करार दी जावेगी।

अब हम इस बात पर जोर देते हैं, कि एक पंच मुकर्रर किया जावे—जिसमें सभी दलों के नुमाइन्दे (किसान, किसानसभा, सार्व-सभा० सरकार मिल) हों और वे ईमानदारी से मुआवजा तय करें।

उम्मीद है मेरे इस पत्र से आपके चाही हुई जानकारी ही मिलेगी।

पत्र की प्रतिक्षा में हूं

भवदीय
H. C. Parmar
सेक्रेटरी
ग्वालियर राज्य किसानसभा

(12)

कन्हैयालाल मनाना
बी. ए. एल एल. बी.
हाई कोर्ट वकील
सराफा उज्जैन

पूज्य दा साहब,

सादर प्रणाम, सिहस्य तथा अस्वस्थता के कारण आपकी सेवा में नागदा मिल सम्बन्धी साहित्य आपकी सेवा में प्रेषित नहीं कर सका, उसके लिए क्षमा चाहता हूं अब आपकी सेवा में भेज रहा हूं।

किसान सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तिका में प्रायः सभी जानकारी है।

अभी वर्तमान मे ता० 4-6-45 को विरला द्वारा 'वह जमीन' जिसका उल्लेख उस रिपोर्ट पृष्ठ 21 पर है मे सडक का कार्य आरम्भ हुआ था, स्थानीय किसान द्वारा इसका विरोध होकर सत्याग्रह किया गया था, उज्जैन से दो पुलिस गार्ड मय जिला इन्सपेक्टर भी भेजे गये थे स्थानीय सूवा श्री सी डब्लू पडित सिह जो देवास के हैं इन्होंने किसानों को बुलाया था व श्री भैरव भारतीय जी भी गये थे, इनके बीच मे जो समझौता हुआ वह भी भेज रहा हू 500 बीघा भूमि का मुआवजा किसानों को ता० 7-6-45 को दिया जा चुका है। इस समझौते की कुछ तामील बाकी है। सूवा सा० मिले थे, आशा है वह भी हो जायगी यह तो एक दरम्यानी बात हुई है। मूल प्रश्न बाकी है। इसमें आपकी पूरी सहायता सहानुभूति व आशीर्वाद तथा प्रयत्नो की आवश्यकता है हमारा विश्वास है कि आप इस समस्या को हल भी करा सकेंगे। आपसे प्रार्थना है समय निकालकर एक रोज के लिए आप स्वय नागदा पधार कर सब परिस्थिति तथा भूमि का अवलोकन कर लेवें तो अच्छा होगा।

(13)

कला घघेरिया बधाना
परगना नीमच, जिला मदसौर
ग्वालियर

श्रीमान प्रेसीडेन्ट साहेब प्रान्तीय काग्रेसी कमेटी राजपूताना

अजमेर,

माननीय महोदय, हम नीचे हस्ताक्षर करने वाले किसान अपनी दुःख एव कष्ट कहानी आपके सामने उपस्थित कर रहे हैं आशा है कि आप हमारे दुखो को मिटाने मे सहायक होंगे, हम सब तरफ से हताश होकर यह करुणा आपके समक्ष उपस्थित कर रहे हैं।

हम चन्द किसानों ने कुछ आर्य समाजी भाइयों से उपदेश ग्रहण करके सन् 1927 मे एक व्यायाम मण्डल कायम किया है। उसके द्वारा व्यायाम, सध्या, हवन आदि किया करते थे, उसका अच्छा सगठन होने पर हरियाली अमावस्या को एक किसानोत्सव करने लगे जिसमें कुछ गांव के किसान हर श्रावणी अमावस्या को एकत्रित हुआ करते थे।

कुछ काल पश्चात्, यहा के पटेल श्री भवानीसिह जी जो बड़े धनी पूजीपति हैं हमारे इस कृत्य से चिढ गये और कहने लगे कि तुम आर्य समाज के

अनुसार यह जो काम कर हो मैं इसको पसन्द नहीं करता तुमको साधारण किसान मूर्ख श्रेणी में रहना चाहिये, पटेल जी को बहुत समझाया गया परन्तु वे नही माने इससे वे चिढकर हमको नाना प्रकार के कष्ट देने लगे जो नीचे लिखे अनुसार है –

(1) हमारे कई उत्साही बन्धुओं पर नाना प्रकार के षड़यंत्र रचकर अदालत हाजा में केस चलाये, जिससे हमारी धन जायदाद को वर्बाद कर दिया और सजायें तक भोगनी पड़ी।

(2) हमारे संगठन को छिन्न-भिन्न कर दिया गया और लोग भय के मारे गांव छोड़ गये।

(3) थोड़े-थोड़े कर्ज में चौगुना, अठगुना हमारा माल कुर्क करवा लिया गया।

(4) हमारी बहू बेटियों के साथ बलात्कार किया गया, जिसका उदाहरण तो अभी एक ठाकुर रूपसिंह जी हैं उनकी धर्म-पत्नी का है।

(5) डरा धमका कर हमसे रुपये वसूल करना।

(6) हमारे मवेशियों को चारागह जमीन में नहीं चरने देना और यदा कदा कृषि को भी उजड़वा देना।

(7) पटेल साहब के कारनामें कई प्रतिष्ठित व्यक्ति जानते हैं।

(8) पटेल साहब के अत्याचारों से दु:खी होकर हमने परगनाधीश जिलाधीश महोदयों को भी प्रार्थनायें भेजी तथा श्रीमंत महाराजा साहब को तार तक दिया गया परन्तु इसका कोई परिणाम नहीं निकला।

इस प्रकार कई अत्याचार आये दिन पटेल जी द्वारा होते रहते है, हम कहां जावें और क्या करें, हमारी गरीबी, अशिक्षित अवस्था और भुखमरी हालत हमको पहिले ही दुर्बल बनाये हुए हैं अतः पटेल जी के कारनामों से हम बहुत तंग हैं अभी एक मुकदमा फिलहाल झूठा चला रखा है जो घास में आग लगाने बाबत है। परमात्मा जाने आग किसने लगाई और दावा किया हम लोगों पर।

Selections from Haribhau Upadhyay papers
3 political activities in Rajaputana States

The letters reproduced below are from the Private Papers Collection preserved in the Nehru Memorial Museum and Library, New Delhi The first three letters are from the Bharatpur Rajya Prajamandal and the fourth one from the Dungarpur Rajya Praja-mandal The letters selected here are to dispel the very notion of various historians and reserch scholars that Prajamandals in various princely states have been the political movements like Indian National Congress in British India territories.

The first letter very clearly shows that the leaders wanted to subdue the resolution on ultimatum but could not succeed before the majority However they diluted the same into 'a message of peace and understanding', the second clarifies the position of office bearers throwing the b ame on printing mistakes and giving exp lanation for the same, the third one assures the despatch of the progress reports of their activities indicataing about recon ciliation moves with the State authorities The fourth and very important letter of much value throws ample light on the socio economic activities being carried on by the Prajamandal in Dungar pur state The activities enamerated there are all reformative and socio economic in nature There is no hint of political activities in all the papers preserved These reformative activites even were learn t by the Palace authorities and the Prajamandal had to give them up and wait till the states were merged with larger political entities It is hoped that the historians will try to evaluate the role of the Prajamandals in the light of the private collections like these before jumping into the conclusion that they were political in nature rather than socio economic and agrarian

(1)

भरतपुर राज्य प्रजा-मण्डल

कैम्प अछनेरा, यू. पी.

दिनांक 11-4-38

आदरणीय उपाध्याय जी,

आपका ता० 27-3-38 का कृपा पत्र हमें कुछ देर से मिला कारण कि हम लोग बाहर थे, आफिस से बिना हमारे परामर्श के उत्तर नहीं दिया जा सकता था इसीलिए देर हुई तारीख 8-4-38 की मीटिंग में हमने उस पत्र को रखा। भरतपुर की वर्तमान परिस्थिति को लक्ष्य में रखकर अल्टीमेटम रोकना कार्यकारिणी ने स्वीकार नहीं किया, हालांकि हम दोनों ने काफी बल लगाया, हां, यह तय हो गया कि युद्ध काल में पूज्य बापू की आन्दोलन रोकने की आज्ञा प्राप्त हुई तो हम अवश्य रोक देंगे। एक बात यह भी है कि भरतपुर अधिकारियों की ओर से यह अफवाह जोरों से फैलाई जा रही है कि भरतपुर प्रजा-मण्डल के पास कोई भी शक्ति नहीं है। देशराज और रेवतीशरण दिल्ली में महात्मा जी से केवल इसलिए मिले हैं कि महात्मा जी का बहाना लेकर सत्यागृह करना बन्द कर दें।

यह जानकर आपको प्रसन्नता होगी कि हमने भरतपुर में रचनात्मक कार्य भी आरम्भ कर दिया है। इस समय राष्ट्रीय सप्ताह मनाया जा रहा है, खादी वेची जा रही है, सरकारी अफसरो के घर जाकर खादी वेचने का भी आज और कल का प्रोग्राम है, भरतपुर में यह पहला ही अवसर है।

कल अल्टीमेटम प्रेसिडेण्ट कौंसिल के पास दस्ती भेज दिया गया है, किन्तु उसमें अल्टीमेटम जैसी बात नहीं, उसे आवेदन पत्र ही समझना चाहिए। प्यून बुक में हमने उसका नाम 'शान्ति और सद्‌भावना का संदेश' लिखा है।

आपका निश्चित पता क्या रहेगा, यह हमें सूचित कर दें ताकि हम अपनी प्रगतियों से आपको सूचित करते रहें।

सदा आपके,

देशराज, रेवतीशरण

(2)

भरतपुर राज्य प्रजा-मण्डल

दिनाक 19-6-38

श्रद्धेय उपाध्यायजी,

सादर बन्दे

आपका तथा श्री शकर लालजी का पत्र मय सशोधन के मिला। उसकी पूर्ति करा दी गयी है। एक कापी सशोधन की भी सेवा मे प्रेषित है मैं बाहर था इस कारण कुछ विलम्ब हुआ, क्षमा करें। मुझे खेद है कि कुछ गल्तिया आपके लिखे हुए समाचारो में छप गई, असावधानी के लिए मैं ही जिम्मेदारी अपने ऊपर समझता हूँ कारण दफ्तर से मेरी अनुपस्थिति से समाचार गये वह कुछ गल्ती कापी करने मे रह गई। एक दो शब्द तो समझ मे नही आने से रह गये बताये, गल्तिया के सम्बन्ध मे जो गल्ती है वह मिस प्रिंट है तथा एक और भी गल्ती मिस प्रिंट है आगे से विशेष सावधानी स काम होगा। या फिर आपके द्वारा ही ऐसा सम्वाद भिजवाया जाया करेगा। शेष कुशल है।

भवदीय
रेवती शरण

जब वह समाचार सही नही पढा तो उसे भेजने मे मैं बडा ही नरवस हुआ, परन्तु कोई बताने वाला नही था, और समाचार रोका भी नही जा सकता था अत जहाँ तक सम्भाल सकें सभाला। लेकिन प्रेस के भूतो ने एक दो गल्तिया करके हमारी मुसीबत को और भी बढा दिया। यह मेरी सफाई है।

आपका सेवक,
शि० शर्मा

(3)

भरतपुर राज्य प्रजा-मण्डल

दिनाक 10-8-39

आदरणीय उपाध्यायजी,

सादर बन्दे

मैं लगभग 10 दिन से कार्यालय से बाहर घूम रहा था। अत आपका 3 तारीख का पत्र आज ही पढ पाया हू। और इसलिए उत्तर भी आज से पूर्व

न दे सका कृपया क्षमा कीजियेगा। आपके धौलपुर वाले समाचार तो मैंने उसी समय पहुँचा दिये थे, यहां के आन्दोलन के सम्बन्ध में अभी तक पंडित जवाहर लालजी के पास कोई समाचार सीधा भेजा नहीं जा सका, अब आपके आदेशानुसार अवश्य भेजते रहेंगे। प्रेसीडेण्ट की ओर से कुछ Move समझौते के लिए हुआ है, विस्तृत हाल आपको एक-दो रोज में लिखूंगा।

कृपया अपने अमूल्य परामर्श से हमको सर्वदा सूचित करते रहियेगा।

भवदीय
रेवतीशरण

(4)

डूंगरपुर राज्य प्रजा-मण्डल

डूंगरपुर
ता० 22 जून, 1945

पत्र संख्या :—

प्रिय महाशमजी,

सप्रेम वन्दे।

आपके भेजे परिपत्र नं० 1 व नं० 2 प्रवास से यहां आने पर आज मिले। धन्यवाद।

परिपत्र नं० 1 की कुछ विशेष जानकारी आवश्यक है अतः उसको बाद मे उत्तर देने के लिए रोक रखा है।

पिछले 10-12 वर्षों से यहां सेवा संघ डूंगरपुर द्वारा राज्य की 80% किसान जनता में पूज्य महात्मा जी का बताया हुआ 15 मुखी रचनात्मक कार्य-क्रम किया जा रहा था। सन् 1942 के मध्य तक यहां 9 केन्द्रों में शिक्षा प्रचार, समाज सुधार कृषि सुधार औषधि वितरण, कूप निर्माण, वस्त्र स्वावलम्बन आदि का कार्य चल रहा था। प्रायः 1500 छात्र और 250 कन्यायें शिक्षा प्राप्त रही थीं पर अगस्त आन्दोलन के जमाने में राज्य ने सेवा संघ के इन सब केन्द्रों को बन्द करवा दिया एवं पाठशालाओं, छात्रालयों और औषधि वितरण पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। जिससे वह सारा कार्य बन्द है हमारी पाठशालाओं के ऊंची कक्षाओं के 50 भील छात्रों को हम बेसिक स्कूल उदयपुर, राजस्थान

विद्यापीठ, उदयपुर और हरिजन उद्योग शाला दिल्ली में पढ़ा रहे हैं। इन दिनो सेवा सघ एक खादी उत्पत्ति एव बिक्री का केन्द्र और एक वाचनालय चला रहा है।

राज्य के प्रतिबन्ध के कारण कार्य सीमित ही रह गया था। अत अगस्त 44 मे सघ ने अपना विधान स्थगित करके श्री हरिदेव जोशी को उसका सारा कार्यभार सौंप दिया है।

यदि शिक्षा क्षेत्र पर लगे प्रतिबन्ध उठा दिये तो सघ शीघ्र ही अपना कार्य पूर्ववत् जारी कर देगा।

विनीत
हरिदेव जोशी

Rajputana-Madhya Bharat Sabha-Report

Many histrorical studies have taken their nucleus from freedom struggle in the various erstwhile kingdoms of Rajputana.[1] The treasure of historical importance is very vast so it is very likely that all the available material for re-casting the history of people's movement in the princely states has not been used. The material which is being presented here is among the records which have been used scarcely.

Rajputana-Madhya Bharat Sabha was founded at the occassion of Delhi session of Indian National Congress on 28 Dec 1918 with late Jamna Lal Bajaj as its *Subhapati*. Headquarters of *Sabhā* were fixed at Ajmer in the British territory in Rajputana. Its last session was held at Ahemdabad under the chairmanship of Rai Bahadur Govind Lal Pitti. Kunwar Chand Karan Sharda of Ajmer happended to be its Secretary. The report begins with thanking *Almighty* that the *Sabha* has completed its successful 5 years and entering in the 6th year (It is believed that after that nothing has been heard about the Sabha).

Objectives

It has been asserted that the main objects of *Rajputana-Madhya Bharat Sabha* were :

(i) Establishing *Seva Samitis* in the various areas of the states of Bikaner and Jaipur.

(ii) Organising various conferences of *Sabha* at the different places like, Nagpur, Delhi, Ahemdabad, just to seek the co-operation of the other Rajasthanis residing at these places.[2]

---

1. May refer to the works like K. S. Saxena, Political Awakening in Rajasthan—Delhi 1971 and Ram Pande, Agrarian movement in Rajasthan, Delhi, 1974.

2. In fact the Sabha's members were mostly from the Marwari businessmen community of these places. Though it collected huge amount in the name of public welfare in the Native States but it was not much popular with masses of Rajasthan.

(iii) Assisting the Bhils of Sirohi and other areas (Bundi etc) in their struggle against the oppression of the ruling chiefs

(iv) It has also been pronounced that the *Sabha s* one of the aims was to establish the schools for un-touchables [3]

(v) To stage an agrarian satyagraha in Bisau, Pisangan and Khetri against the high handed oppressions of local authorities, Jagirdars etc

The main contents of the report

This report of Rajputana Madhya Bharat Sabha at the end of its 5th year gives a detailed account of its achievements, or, the various activities which were conducted by it They are discussed under the various heads, important are given below —

(i) Khetri Agitation It is said that some of the volunteers of *Chirava Seva Samiti* of the Sabha established some Piaos to serve the Shekhawati people In the establishment of these piaos, the Raja of Khetri[4] smelt some sort of agitation against his authority, so some persons namely Gulab Rai Nemani, Dharm Kishore Shrivastava and Pyare Lal Gupta were arrested by Raj authorities Receiving the report of their arrest the Sabha Secretary Kunwar Chand Karan Sharda and Dalpati of Ajmer Seva Samiti Kanhaiya Lal Kalantri with some volunteers reached Chirawa and started agitation Their demand was to release the arrested persons

The agitation did not remain limited upto the limits of Khetri thikana but the Marwaris living in Calcutta also started

---

3 There s no reference about the working of this aim in report itself nor we have any other document to get the knowledge of its implementat on

4 Khetri was one of the Estates under the overall sovere ngty of Ja pur State its pos t on was of a semi independent State l ke that of Sikar The Khetr House s well known for spreading the Indian Culture out s de the country It was the Raja of Khetri who ass sted Swam Viveka nand to reach in World Religious Conference at Ch cago The Raja of Khetri belonged to the Shekhawat Branch of Kachhawah clan On Khetri one may refer Khetri ka Itihas by Jhawar Mal Sharma

agitation there fore getting the release of the arrested persons.[5]

It is asserted in the report that the Raja of Khetri was afraid of Calcutta movement and so he released the captives. On the other hand the report itself reads that the Sabha also sent an Arzdast to the Maharaja of Jaipur to intervene. On receiving of the request the Jaipur Maharaja called the Raja of Khetri and instructed him to do the needful.

2. Bhumia Agitation of Jaipur

This has been reported that Jaipur State levied some new *lags* on the Bhumias of Tanwarbati area of the State. These Bhumias who were agriculturist by profession but had a little higher status than the peasants[6] opposed it and prepared for a showdown. The state authorities forced these Bhumias to sell their cattie-greys on very nominal prices for their horses and other cattles. This infuriated the Bhumias who adopted the rebellious path. When the Sabha came to known of this unrest sent Kanhaiya Lal Kalantri to get the spot news. After reaching Shri Madhopur in Shekhawati area Kalantri reported about the happenings. Howevere, Sabha, approached Maharaja of Jaipur and affected a peaceful agreement, the various clauses of which are given in the report itself. But this movement was not a political movement, it was an act of self-defiance against the local authorities of the state.

3. Bhil Affairs of Sirohi & Bundi.

In 1921-22 the Bhils of Mewar, Dungarpur, Idar, Sirohi Bundi and Danta revolted against the disparity of taxes They demanded that the different standard of taxation should be replaced by a uniform system throughout the treck inhabited by them. Moti Lal Tejwat persuaded the Bhils to be organized and rise in rebellion against the disparities. With the efforts of Bijai Singh Pathik Bhils agreed to hold a conference and to decide the matter peacefully. Bijai Singh Pathik also persuaded Moti Lal Tejawat to lead a non-violent Bhil Movement. But, instead of adopting peaceful means the state authorities of the above states took

---

5. Calcutta Marwaris agitated because they belonged to this area and their near relatives were affected so it was quite natural for them to respond to the call of Sabha.

6. Ram Pande, Agrarian Movement in Rajasthan, Page 69.

to repressive measures This agitated Bhils very much and they became furious The state authorities set on fire so many Bhil villages [7]

The Bhil movement either of Sirohi or of Bundi was launched under the auspicies of *Rajasthan Sewa Sangh* of Bijai Singh Pathik [8] The Rajasthan Sewa Sangh s activities were banned by these states Their workers were arrested and prohibitory orders on their leaders were served The Rajputana Madhya Bharat Sabha's leaders contribution towards these movements is that they collected some sort of funds and some clothes for poor & suffering Bhils The report says that in all Rs 6,088 were collected and only Rs 1,600 were sent to Bijai Singh Pathik upto June, 1922 The another contribution of the Sabha, mentioned in the report is a trial to affect some agreement between peasents and the authorities It is also written in the report that Sirohi Dewan, Ramakant Malviya returned the help, the details of which are available in the report

4 Peasants Movement In Pisangan, Bisau and Bijolia

Ajmer was a province under Government of India till the country attained Independence Thereafter it was declared a state and remained so till 1956 when it became a part of Rajasthan State There was Istmarars enjoying judicial rights prior to abolition of Jagirdaris

The Raja of Pisangan levied a new lag. The ryot was already in the grip of *begars, lages bags* etc Chandkaran Sharda, secretary of the Rajputana Madhya Bharat Sabha, Ajmer went there to see the Pisangan Raoraja and tried for some relaxation but all in vain The Sabha then decided to strengthen the Gram Hitkarini Sabha and a movement aginst the new tax started However, the Commissioner of Ajmer interferred and an agreement was reached between the parties The tax and begar were removed as is evident from the information contained in the proceedings of the Rajputana

---

7 For details see Chapter on Bhils in Ram Pande s above cited work

8 For life story of Bijai Singh Pathik one may refer to "Bijai Singh Pathik Ki Jivni by S S Saxena and Ram Pande s work

Madhya Bharat Sabha, Ajmer as well as the private papers of Ram Narain Chaudhary, Hari Bhau Upadhyaya and Manik Lal Verma etc.[9]

Local Jagirdar of Bisau was oppressing the peasants from variovs folds. This was reported in the Newspapers by the Sabha. The Jaipur Maharaja was also requested to take action against the tyrant Jagirdar.

But, this has not been mentioned in the report that what type of ill-treatment was going on in the Bisau Thikana, and what has been its fate. Besides this, the Bijolia-Movement and Ratangarh incident of Bikaner state has also got a mention in the report, but very briefly.

Report Poses the Problems.

The study of Rajputana Madhya Bharat Sabha report poses so many problems, but most important of them is the existence of two organizations, namely Rajputana Madhva Bharat Sabha and Rajasthan Sewa Sangh. both had headquarters at Ajmer. This is an interesting study of the nature and working procedure of both these organizations. The Sabha was dominated by Late Jamna Lal Bajaj and his inmates while Sangh was an organization of Bijai Singh Pathik and his fellow workers The difference of these two personalities may seen in this report. Pathik never became a man of rulers while Sabha's relations with ruling princes are mentioned to be cordial. Besides this, Jaipur ruler and Kota Darbar also are mentioned whole hearted sympathiser of the Sabha. Though all the peasants and other movements were directed against the officials of the state and not against the rulers, but Sabha was cordial with Dewans of the States. The relationship between Kota Dewan Raghunath Chaube and Sabha is worth mentioning Sabha approached the Dewan for its annual conference at Kota. The ruler and the Dewan were almost agreed The difference of opinion remained only on the Chairmanship of the conference. The proposal cou'd not be materialized as Ragaunath Chaube died shortly afterwards. This incident leads us to take up a fresh study of Pratap Singh Barhats career at Kota.

---

9. Ram pande opcite, Page 87.

ओ3म्

जासु राजप्रिय प्रजा दुखारी ।
सो नृप अवशि नरक अधिकारी ।।

राजपूताना मध्यभारत सभा अजमेर की

रिपोर्ट

सभा का संक्षिप्त इतिहास

यह सभा 28 दिसम्बर सन् 1918 को दिल्ली कांग्रेस के अवसर पर स्थापित हुई थी। उस परम पिता परमात्मा को अनेकानेक धन्यवाद है कि सभा उत्तरोत्तर उन्नति कर रही है और पाच वर्ष समाप्त कर छठे मे पदार्पण कर रही है। परम पिता हमे बल दे कि हम अपने उद्देश्या की पूर्ति के लिए सदा अग्रसर हों। अत्याचारो, अन्यायों को हटाने को सदा तत्पर रहे। दमन की कुछ भी परवाह न करते हुए आपत्ति ग्रस्त भाइयो को ऊचा उठावें, हमारे देश को स्वतन्त्र करें। परमात्मा के अमृत पुत्रो मे से अस्पृश्यता आदि कुरीतियो को हटा कर समानता के अधिकार दिलाने का सदा प्रयत्न करते रहे।

खेतड़ी के अत्याचार

खेतडी के राव राजाजी ने चिडावा सेवा समिति के स्वय सेवक गुलाबरायजी नेमाणी, धर्म किशोरजी श्रीवास्तव व बाबू प्यारेलालजी गुप्त आदि को अकारण ही गिरफ्तार कर लिया। ये स्वय सेवक गरीब किसानो को रेतीले जगल मे प्याउएं लगाकर पानी पिलाने का प्रबन्ध करते थे। इसमे भी खेतडी राव राजाजी को राजद्रोह की गध आई और उन्होंने सेवा समिति तोडकर उत्साही स्वय सेवको को जेल मे ठूस दिया। सभा को यह समाचार ज्ञात होते ही सब समाचार पत्रो में तीव्र आन्दोलन किया गया और सभा के मन्त्री कुंवर चादकरणजी शारदा, कन्हैयालाल जी कलत्री, अजमेर सेवा समिति के दलपति रामकृष्णजी और कुछ स्वय सेवको को साथ लेकर मार्ग मे हजार कष्ट होने पर भी घटना स्थल पर पहुंचे। चिडावे वा खेतडी मे लोग भयभीत थे और इस अन्याय के प्रतिकार मे कोई उफ तक करने को तैयार नही था। सभा की ओर से तार देने पर भिन्न-भिन्न सेवा समितियों के वीर स्वय सेवक चिडावा मे एक-

त्रित हो गये और सत्याग्रह प्रारम्भ किया उनमें मुख्य पं० भीष्म देवजी शास्त्री व वन्शीधरजी सुवर्णकार थे।

राज की ओर से पूर्ण प्रयत्न किया गया कि कुंवर साहब आदि धर्मशाला में नहीं ठहरने पावें। इनके भोजन का प्रबन्ध न हो। परन्तु वहां पर तो सब सत्याग्रह मण्डली जेल जाने को उद्यत थी। इस वास्ते राजवालों की धमकी में कोई न आया और राजवालों की दाल न गली। तीसरे पहर चिड़ावे के चौक में व्याख्यान देने का सत्याग्रहियों ने निश्चय किया। राज के कोतवाल और पुलिस ने आकर जबरदस्ती दरियें उठादी और लोगों को भगाने का प्रयत्न किया। परन्तु वीर सत्याग्रही अड़े रहे और उपदेश करते रहे। दूसरे दिन चांदकरणजी स्वयं सेवकों को लेकर खेतड़ी पहुंचे और राव राजा जी से मुलाकात कर के सब मामला शांति से निवटाने का प्रयत्न किया परन्तु खेतड़ी राजाजी ने मिलने से इंकार किया। तब शारदाजी ने खेतड़ी के मजिस्ट्रेट से मुकदमे की दफे तथा बयानों की नकलें आदि मांगी। परन्तु मजिस्ट्रेट ने यह सूखा जवाब दे दिया कि उजरत देने पर भी हमारे राज्य में नकलें देने का कायदा नहीं है। जेल पर स्वयं सेवकों से मिलने भी नहीं दिया। परन्तु मंत्री जी अपनी स्वयं सेवक मंडली सहित जेल के दरवाजे पर पहुंचे और कहाकि हम से यह अन्याय नहीं देखा जाता या तो हमें गिरफ्तार करलो या स्वयं सेवकों से हमें मिला दो। इतने में ही स्वयं सेवकों को मजिस्ट्रेट ने बुलाया और मंत्री जी आदि ने स्वयं सेवक कैदियों को वीर, धीर रहने का उपदेश किया और उनके पीछे पीछे अदालत तक चले। तत्पश्चात् मजिस्ट्रेट ने गुलाब राय जी आदि को ऊपरी कमरे में एकान्त में लेजाकर बहुत डराया धमकाया और माफी मंगवाने का प्रयत्न किया परन्तु वीर स्वयं सेवकों ने माफी मांगने से इंकार कर दिया। इसी बीचमें रामगढ़ के डाक्टर अमरसिंह जी भी आकर सत्याग्रह में सम्मिलित हो गये क्योंकि खेतड़ी राव राजाजी ने रामगढ़ सेवा समिति के उत्साही सेवक वंशीधरजी को गिरफ्तार कर लिया था। चिड़ावा सेवा समिति के स्वय सेवक गुलाबरायजी आदि निरपराध पकड़े गये थे और खेतड़ी राजाजी इसी विचार में थे कि मारवाड़ी चुपचाप जुल्म सह लेते हैं। परन्तु जब खेतड़ी राव राजाजी ने कलकत्ते के मारवाड़ियों का तीव्र आन्दोलन देखा और राजस्थानियों की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था राजपूताना मध्य भारत सभा के मंत्री और स्वयं सेवकों का सत्याग्रह देखा और उनको जेल के कष्ट भोगने को उद्यत देखा तो वे भयभीत हो गये और चिड़ावा और रामगढ़ के स्वयं सेवकों को फौरन छोड़ दिया। सभा की भारी विजय हुई और सभा का यश और गौरव सारे राजस्थान में फैल गया। हम कलकत्ते की मारवाड़ी जनता व समाचार पत्रों के अनुग्रहीत है जिन्होंने इस

विषय मे पूर्ण आन्दोलन कर हमे सहायता पहुचाई। इस विषय मे जयपुर के उच्च अधिकारियो को भी बहुत कुछ लिखा गया था और सब के प्रयत्नो के फल॰ स्वरूप स्वय सेवको को छुडाने मे कृतकार्यता प्राप्त हुई।

पीसागण सत्याग्रह में सभा की भारी विजय

अजमेर इलाके मे एक इस्त-मुरारी इलाका है जिसका नाम पीसागण है। वहाँ राजा साहब पीसागण राज्य करते है। उन्होने प्रजा पर एक नया कर लगा दिया था। प्रजा पहिले ही बेगार लागता व करो से पीडित थी। इससे नये कर का विरोध किया और सभा को सूचना दी। सभा के मत्री कु वर चादकरणजी शारदा वहा गये। राजा साहब से प्रार्थना कर राजी नामे का बहुत प्रयत्न किया परन्तु जब न हुआ तो वहा ग्राम हितकारिणी सभा को दृढ किया। ग्राम निवा॰ सियो के लिये शारदा पुस्तकालय खोला और खूब आदोलन किया। मुकदमे भी चले, परन्तु प्रजा नही डरी और नया टैक्स नही दिया। अन्त मे कमिश्नर साहब अजमेर के बीच मे पडने से राजी नामा हो गया। टैक्स व बेगार माफ हो गई। सभा की विजय हुई। पीसागण की जनता को बधाई है।

जयपुर और बीकानेर राज्य में कार्य

सेठ जमनालाल जी बजाज, चादकरण जी शारदा, गौरीशकरजी भार्गव व कु वर नारायणसिहजी, कन्हैयालाल जी कलन्त्री आदि ने शेखावाटी में खद्दड के प्रचारार्थ व सेवा समितियो के स्थापनार्थ दौरा किया। सीकर, लक्ष्मणगढ, फतेहपुर, बिसाऊ, रामगढ आदि स्थानो मे शान्ति पूर्वक व्याख्यान हुए। वहा पाठशालाओं व पुस्तकालयो का निरीक्षण भी किया गया। परन्तु ज्यो ही डेप्यु- टेशन चुरू पहुचा तब बीकानेर का इन्सपेक्टर जनरल पुलिस कहने लगा कि तुम बीकानेर रियासत से चले जाओ। डेपुटेशन के सभासदो ने कहा कि हमे लिखित आज्ञा दो। यह उन्होने देने से इन्कार किया। इस कारण सेवा समिति चूरु मे व्याख्यान दिये गये और चूरु सेवा समिति से जो डेपुटेशन के सभासदो को अभि- नन्दन पत्र दिया गया था वह स्वीकार किया गया। परन्तु पुलिस रात भर पहरा लगाती रही और सुबह सेठ जमनालाल जी बजाज के नानेरे मे भोजन करने जाने से भी रोका गया। इस पर सत्याग्रह किया गया और डेपुटेशन ठीक वक्त पर प्रोग्राम के अनुकूल भोजन करने लगा।

बाद मे डेपुटेशन के सभासद रेल मे बैठ कर रतनगढ के लिये रवाना हुए। रतनगढ के स्टेशन पर सैकडो पुरुष प॰ माधोप्रसादजी एम॰ ए॰ की

अध्यक्षता में स्वागत के लिये उपस्थित थे । परन्तु बीकानेर की पुलिस ने उनको बेतें मार कर स्टेशन के प्लेट फार्म से बाहर कर दिया । और सेठ जमनालाल जी व चांदकरण जी आदि को जो प्लेट फार्म पर उतर आए थे जबरस्ती सिपाहियों ने गोदी में उठा कर गाड़ी में ढकेल दिया । सभा का डेपुटेशन शान्त पूर्ण उपायों से बीकानेर राज्य की भलाई के लिये ही वहां गया था परन्तु बीकानेरम हाराजा ने उसके साथ अनुचित और अमानुषिक वर्ताव किया ।इस कार्य से महाराज की नौकरशाही ने अपने पर वह काला धब्बा लगा लिया है जिसको वे नहीं धो सकेंगे और इसका उनको अवश्य आयु पर्यन्त पश्चाताप रहेगा ।

विसाऊ राज्य में अत्याचार

विसाऊ ठाकुर साहब ने अपनी प्रजा पर घोर अत्याचार कर रखे हैं । इसकी सूचना हम समाचार पत्रों में दे चुके हैं । यहाँ पर केवल हम जयपुर महाराज से प्रार्थना करते हैं कि वे इन अत्याचारों को शीघ्र हटाकर तथा अन्यायी को दण्ड देकर यश के भागी बनें

सीरोही में भील काण्ड

ईडर मेवाड़ व सिरोही आदि राज्यों के भील दुःखी और दरिद्र हैं । पानी की कमी से अनाज कम निपजा । घूंसखोरी की अति हो गई । टैक्सों के भार व बेगार का दुःख सहते 2 अत्यन्त दुःखी हो गये और जब महाराजाओं ने उनके आर्त नादों पर ही तर्स न खाया तो निर्बलों का अन्तिम उपाय सत्याग्रह उनको करना पड़ा । उन्होंने धार्मिक शपथ खाई कि हम लगान न देंगे और शान्ति पूर्ण आन्दोलन करेंगे । ईडर, मेवाड़ और सिरोही के राजाओं को भीलों का संगठन बुरा लगा और उन्होंने उन पर नाना प्रकार के अत्याचार किये । सिरोही में गोली वर्षा कर खून खराबी भी की गई व झोपड़ियें भी जलाई गईं परन्तु गरीब भीलों की ओर से प्रतिकार में अस्त्र प्रयोग नहीं किया गया । वे अहिंसात्मक रहे सभा के सहकारी मंत्री भीलों के अत्याचारों की तहकीकात करने स्वयं सिरोही गये व भाई मनिलाल जी कोठारी सभा के सदस्य ने अधिक खून खराबा रोकने का पूर्ण प्रयत्न किया । तत्पश्चात् कन्हैयालाल जी मंत्री सभा आपत्ति ग्रस्त भीलों की सहायतार्थ चंदा एकत्रित करने कलकत्ते गये और वहां जाकर चंदा एकत्रित किया जिसका विवरण इसी रिपोर्ट में दिया गया है व उस समय कुंवर चांदकरणजी शारदा अन्यायी नौकरशाही द्वारा छः मास का कठिन कारागृह भोग रहे थे । इस वास्ते कलंत्री जी ने जेल में मिल कर अनुमति ली थी । जेल से छूटने के बाद सभा की ओर से कुवर चांदकरण जी पं० अर्जुनलालजी सेठी, पं० रामचन्द्र

जी वैद्य, डाक्टर अम्बालाल जी आदि सिरोही के दिवान, प० रमाकान्त जी मालवीय से भीलो के सहायतार्थ मिले। उन्होने उत्तर दिया कि भीलो के दु ख दूर कर दिये गये हैं। पूर्ण शान्ति है और सभा की ओर से भीलो की सहायतार्थ दिये हुए 100 कुरते व 200 टोपिया उन्होने अजमेर मे स्वीकार कर ली परन्तु सभा के किसी प्रतिनिधि को सिरोही राज्य मे जाकर सहायता बाटने की आज्ञा न दी और न भीलो की शिक्षा के लिए स्कूल खोलने की ही आज्ञा दी। हमे दु ख से सूचित करना पडता है कि भील सहायता फण्ड का एक पैसा भी सभा के कोष मे जमा नही हुआ। कुछ रुपया बी० एस पथिकजी के पास रह गया और कुछ रुपया रामकिशन जी मोहता कलकत्ते वालो के पास जमा है। इसका ब्योरेवार हिसाब इसी रिपोर्ट मे प्रकाशित है। हमे पूर्ण आशा है कि कलकत्ते के दानी सज्जन भील सहायता फण्ड का रुपैया सभा कोष मे भिजवाने पर पूर्ण बल देंगे ताकि इस रुपये को भील सहायता मे व राजस्थान के आपत्ति ग्रस्त देशी राज्य निवासियो की सहायता मे व्यय किया जावे।

हम सेठ रामकिशनजी मोहता को धन्यवाद देते हैं जिन्होने सभा के रुपये जो वैदिक प्रेस से प० अर्जुनलाल जी सेठी लेकर मनमाना उपयोग करना चाहते थे वह नही करने दिया और रुपये रोक दिये।

बिजोलिया का समझौता

22/9/56

सभा यह सहर्ष सूचित करती है कि जो आन्दोलन सभा ने चार वर्ष पहिले उठाया था वह सफलीभूत हो गया है और किसानो मे व रावजी दोनो मे परस्पर राजी नामा हो गया है। किसान अनुचित करों व लागो से बच गये हैं और सत्याग्रह की विजय पर अत्यन्त प्रसन्न है। हम बिजोलिया की वीर महिलाओ व पुरुषों के सत्याग्रह की विजय पर हृदय से बधाई देते हैं और राजस्थान सेवा सघ ने जो इस विषय मे सफलता प्राप्त की उसको भी बधाई देते हैं।

सभा की ओर से भेजे हुये कुरते टोपी वापिस

जिन कुरते टोपियो को सिरोही के दिवान श्रीमान् रमाकान्त जी मालवीय भीलो मे बाटने के लिये सभा की ओर से ले गये थे वे वापिस लौटा दिये। कितना अधेर है, कुछ रजवाडो की ऐसी ही दकयानूसी चाली पालिसी है। न खुद करते हैं, और न दूसरे को करने देते हैं। गरीब भीलो मे न स्वय वस्तु बाटते हैं। न दूसरो को बाटने देते हैं। इसी प्रकार इन भीलो के उद्धारार्थ न स्वय स्कूलें खोलते हैं और न दूसरो को खोलने देते हैं। परमात्मा इन देशी नरेशो को सुबुद्धि दे।

जब रमाकान्त जी मालवीय ने कुरते टोपी लौटा दिये तो पं० अर्जुन-लालजी उनकी बजाय सभा के दफ्तर मे पहुंचाने के अपने घर ले गये। सभा की ओर से पत्र लिखने पर भी उन्होंने नही लौटाये और उनका मन माना उपयोग किया।

भील ग्रासिया फंड विवरण

सिरोही राज्य के भीलों के दुःखित और आपदग्रस्त कुटुम्बों को सहायता पहुंचाने के अर्थ चंदा एकत्रित करने के लिये सभा के मं० भं० श्री कन्हैयालाल जी कलंत्री कलकत्ते गये।

उस समय श्री वी० एस० पथिक जी ने रा० से० संघ की सहयोगिता की उनसे प्रार्थना की। श्री कलंत्री जी ने कुल 6088 रु० का चदा एकत्रित किया जिनमें से 641 रु० राजस्थान सेवा सघ और रा० म० भारत सभा की संयुक्त रसीदों में किया गया, परन्तु फिर भी उन्होंने सहयोगिता के नाते 3162.50 रु० राजपूताना मध्य भारत सभा के सेवा विभाग के स० म० श्री डाक्टर अम्बालाल जी तथा इसी सभा के कोषाध्यक्ष श्री पं० रामचन्द्र जी वैद्य के द्वारा सेवा सघ में पथिक जी के पास भेज दिये। ता० 2 जून तक लगभग 1600 रु० पथिकजी को भेजा जा चुका था।

बूंदी के अत्याचार

बूंदी राज्य की प्रजा वहां की चाकर शाही के अत्याचारों से अत्यन्त दुःखी हैं। राज्य कर्मचारियों के लुटेरे पन तथा बेगार से गरीब किसान जर्जरित हो रहे हैं। बूंदी के बरड़ जिले में राजपूती गौरव आन व शान के विरुद्ध स्त्रियों तक पर हाथ उठाया गया और उनको लठियों से पीटा व बेइज्जती की। इस समाचार को सुनकर सभा ने अपना प्रतिनिधि उनकी सहायतार्थ तथा तहकीकात के लिये भेजा। हमारे प्रतिनिधि ने जो वहां जाकर तहकीकात की व दुःख दूर करने का प्रयत्न किया उसकी रिपोर्ट हम नीचे प्रकट करते हैं।

बूंदी की जांच

बूंदी में जो आजकल असंतोष की लहर उठ रही है उसकी जांच करने के लिये मैं कलंत्री वहां गया था कोटा पहुंचने पर ज्ञात हुआ कि बूंदी राज्य से कार्यकर्त्ताओं का, चाहे उनका कार्य किसी प्रकार का विधेयात्मक क्यों न हो, जाना एकदम बंद है। बूंदी जाने के लिये जो सड़क बनी हुई है वह उस राज्य की सीमा में बहुत ही दुर्दशा-पन्न है। खास नगर मे न सड़क है, न म्युनिसिपल कमेटी

ही। स्टेट कर्मचारियो का वेतन बहुत ही न्यून है। आठ 2 दस 2 रुपये मासिक वेतन के सब इन्सपेक्टर और तीस 2 रुपये महावार तक के तहसीलदार हैं। इसलिये राज्य मे रिश्वत का बडा दौर दौरा है। दान का भाग भी उसी को मिल सकता है जो अधिकारियो को भेट पूजा दे। एक दो को छोडकर राज्य के कर्मचारी प्राय दूरदर्शी नही हैं। व्यापार व कृषि की राज्य भर मे कोई सुविधा नही है। फिर भी अनाज घी आदि खाद्य पदार्थों का बाहिर निकलना बद होने के कारण वहां उपरोक्त वस्तुए दूसरे राज्यों की अपेक्षा सस्ती है। सभा की ओर से श्री कलत्री जी ने श्री बूंदी नरेश तथा अधिकारियो से मिलना चाहा। श्री नाजिम पन्नालाल जी तथा 3,4 दूसरे अधिकारी उनसे मिले जिनके साथ बूंदी बरड जिले की परिस्थिति पर लगभग 1 30 घन्टे तक बातचीत होती रही। आपने कहा कि बरड मे यदि पथिकजी के साथी पुरुषो को कानून भग के लिए और स्त्रियो को लठ लेकर राज्य के नौकरो का सामना करने के लिए नही उभारते तो यह घटना कदापि नही होती। लगभग 6 बजे बूंदी नरेश से मिल कर निम्नलिखित बातें निवदन की।

1. प्रत्येक 200 घरो के गाव मे एक हिन्दी स्कूल कायम किया जाय और हर एक कस्बे म एक लोअर मिडल अग्रेजी स्कूल खोला जाय।

2. हर एक गाव मे निर्वाचित पचों की पचायतियां कायम की जाये।

3. कस्बो मे और राजधानी में म्युनिसिपलटियां कायम की जायें जिसमे आधे सदस्य सरकारी और आधे सदस्य प्रजा द्वारा निर्वाचित रहा करें।

4 राज्य की काऊन्सिल म प्रजा द्वारा चुने हुए मेम्बर नियुक्त किये जायें।

5 आय-व्यय का बजट प्रति वर्ष बन कर सम्मति के लिये जनता के सम्मुख रखा जाय।

6 अनुचित लागतें और बेगार उठा दी जाय।

7 अजगरों की लूट खसोट रोकने का शीघ्र प्रबन्ध किया जाय।

8 राजनैतिक कैदियो के खानपान का प्रबन्ध भिन्न प्रकार का और सुविधाजनक हो।

9 स्वय दरबार प्रतिदिन प्रजा की पुकार सुना करे।

इस पर नाजिम पन्नालाल जी ने श्री दरबार की ओर से विचार कर दूसरे दिन उत्तर देने का वादा किया। और कलंत्री जी रा० मध्य भारत की ओर से नियमावली भेंट कर चले आए। दूसरे दिन श्री पन्नालाल जी ने कहा कि श्री दरबार ने कल के परामर्श पर धन्यवाद देते हुए फर्माया है कि बेगार बन्द कर दी गई है और राजनैतिक कैदियों को भी सुविधायें दे दी गई हैं शेष बातों को यथा सम्भव शीघ्र ही काम में लाने की चेष्टा की जावेगी। राज्य की मनशा दमन करने की नहीं है। सच्चे हालात जानने के लिये पौलिटिकल एजेंट हाड़ौती दौरा कर रहे हैं। देखें वे क्या करते हैं। हमें इतनी ही प्रसन्नता है कि बूंदी के अधिकारियों ने सभा के उद्देश्यों से सहानुभूति दिखलाई।

कोटा

यहां के दरबार साहब और दीवान साहब दोनों बहुत भले है। दरबार स्वयं प्रजा की शिकायतें गौर से सुनते हैं। अन्य राज्यों की अपेक्षा यहां की प्रजा को आराम और आजादी दोनों ज्यादा है। हां राज्य के अधिकारी आजकल अधिकतर जागीरदार वर्ग में से लिए जाते हैं। इससे साधारण प्रजा में असंतोष की झलक आने लगी है। प्रजा को पूरे म्युनिसिपल हक प्राप्त हैं। सं० मन्त्री कलंत्री जी ने दीवान बहादुर चौबे रघुनाथदास जी से मिल कर रा० म० भारत सभा का आगामी अधिवेशन कोटे में करने की अनुमति चाही। इस पर दीवान साहब ने पूछा कि सभापति कौन है और देशी राज्यों में पहले कोई अधिवेशन हुआ या नहीं।

इसका यथोचित उत्तर दिया गया तथा सभा की रिपोर्ट और नियमावली को देख कर उन्होंने उत्तर देने को कहा। रिपोर्ट भेज दी गई परन्तु कोई उत्तर न मिला। सभा के मन्त्री कुंवर चांदकरणजी शारदा भी कोटा में पधारे थे। उनका व्याख्यान विना रोक टोक हुआ। उन्होंने कोटे की म्युनिसिपल कमेटी की कार्यवाही स्वयं कमेटी में भाग लेकर देखी। कोटे की म्युनिसिपल कमेटी के सभापति महोदय व सभासदों ने उन्हें आदर से बैठाया। हमें पूर्ण विश्वास है कि जिस प्रकार माइसोर, बड़ोदा, ट्रावनकोर, इन्दौर आदि राज्यों में प्रजामंडल का आज्ञा देते हैं उसी प्रकार कोटा नरेश भी राजपुताना मध्य भारत सभा का अधिवेशन कोटा राज्य में करने की आज्ञा प्रदान कर यश के भागी बनेंगे।

शोक

हमें दुःख है कि दीवान बहादुर चौबे सर रघुनाथदास जी दीवान कोटा का स्वर्गवास हो गया। हम उनके परिवार से हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हैं

और उनके सुयोग्य पुत्र से जो उनके स्थान पर नियुक्त हुए हैं यही निवेदन है कि वे अपने योग्य पिता के पदचिह्नों मे चलते हुए कोटा राज्य की उत्तरोत्तर उन्नति करे और प्रजा को अधिकाधिक शासन मे भाग प्रदान करे ।

तंवरा घाटी के भोमियो का फैसला

हमे अत्यन्त प्रसन्नता है कि तवराघाटी के भोमियो का निम्नलिखित शर्तों पर फैसला हो गया है। हम इन्हे हृदय से बधाई देते हैं।

जयपुर का भोमिया आन्दोलन
निर्णय की नकल

श्रीयुत ग्लेन्सी अध्यक्ष मन्त्री मण्डल जयपुर ने गत 18 सितम्बर को नीमका थाना मे भोमियो के समक्ष निम्नलिखित घोषणा की —

(1) जो जमीन भोमिया के कब्जे मे सदा से इस्तमरार के रूप मे चली आती है अथवा उसका इस्तमरार इजारा उनको किसी ऐसी आज्ञा द्वारा दिया गया है जिसका पता चल सकता है वह खालसे नही की जा सकेगी सिवाय ऐसी हालत के कि जब उनकी ओर से नाफरमानी जाहिर हो। इस जमीन पर लगान भी नही बढाया जायेगा। जिस व्यक्ति को यह उज्र हो कि इस प्रकार की इस्तमरार जमीन पिछले तीस वर्ष के समय मे खालस से करली गई अथवा उनका लगान बढाया गया वह अपने मुकदमे की दुबारा सुनवाई की जाने की प्रार्थना कर सकता है। उनके विषय मे कमिश्नर साहब जाच करेंगे और उसकी अपील कौंसिल में होगी। ऐसे मुकदमे की कोई फीस वसूल नही की जावेगी। ऐसी दशा मे यदि कोई विरुद्ध प्रमाण नही दिये गये तो यह समझा जावेगा कि सिवाय मामला खिराज या चकौती (?) की अदायगी इस्तमरारी के हक मे शामिल है।

(2) इसी प्रकार यदि किसी को यह उज्र हो कि पिछले तीस वर्ष मे वह बसर भोम (लगान मे से कुछ हिस्सा) पाने से वंचित रहा तो उपरोक्त व्याख्या के अनुसार मुकदमे की फिर से सुनवाई होने की दरखास्त कर सकता है।

(3) भोमिया अपने अधिकार के गाव की खान से अपनी घरू जरूरत के लिए जितना चाहे पत्थर ले सकेगा, उसका कोई बदला नही लिया जावेगा इसी तरह अगर राज्य को किसी सरकारी मकान बनवाने के लिए पत्थर की आवश्यकता होगी तो उसके लिये भी बिना मूल्य दिये पत्थर लिया जा सकेगा

राज्य की स्वीकृति लेकर खान का ठेका देने का भी हक होगा परन्तु आधा रुपया राज में जमा कराना होगा।

(4) शराब की जितनी भट्टियां भोमियों के घरू काम के लिए इस समय विद्यमान है वे इसी प्रकार कायम रहेगी। परन्तु आबकारी की नई व्यवस्था होने पर सारी घरू भट्टियां बन्द करदी जावेगी और भोमियों को उचित बदला दिया जावेगा।

(5) तंवरावाटी की सीमा के भीतर रेल्वे स्टेशनों के सिवाय और सब राहदारी (सायर) की चौकियां उठा दी जावेगी। जहां पर राज्य के बाहर से माल आता हो वहीं महसूल लिया जायगा। फिलहाल तंवरावाटी और शेखावाटी के बीच की और राज्य की दोनों सीमाओं पर चौकियां स्थापित रहेगी।

(6) नाता घडीचा (पुनर्विवाह) का कर लेना भोमियों का हक स्वीकार किया गया।

(7) लावारसी (अनाथ सम्पति) पर भोमियो का अधिकार मन्जूर किया गया।

(8) सेटलमेन्ट कमिश्नर समस्त सूचनाओं की फिर जांच करेंगे और उनके निर्णय तक जो अबवाब (लाग) मालगुजारी से 20 प्रति सैकड़ा से अधिक हो गे वे मांफ किये जावेंगे।

(9) साधारणतया कसर भोम के देने का ढंग यह होगा कि माल-गुजारी का रुपया तहसील में जमा हो जाने पर कसर भोन उसमें से काट दी जावेगी। अगर किसी भोमिये को यह उज्र है कि जितनी कसर भोम वर्तमान में प्रति रुपया उसे राज्य की ओर से दी जाती है वह उससे अधिक लेने का अधिकारी है या यह कि मालगुजारी का रुपया तहसील में जमा होने के पहले ही कसर भोम उसमें से काट लेने का उसे हक हैं तो वह इस्तमरार वालों की तरह अपने मुकदमे की सुनवाई सेटलमेन्ट कमिश्नर के इजलास में करा सकता है। यदि वह सिद्ध करा सकेगा कि पहले तीस वर्ष में बिना अपराध उसका हक छीना गया है तो उसका हक फिर से दिलाया जावेगा।

(10) जो भूमि हाल में खालसा (जब्त) की गई है अर्थात् उदाहरणार्थ उदक इनाम वगैर, पर कसर भोम ली जा सकेगी। यदि कोई भूमि भाग पड़त

रह जावे और उसमे भोमिया का कसूर न हो तो लगान मे उतनी कमी करदी जायेगी और अगर नई जमीन बोई जायेगी तो उतनी लगान मे वृद्धि की जायेगी।

(11) जो वृक्ष अपने आप उगेंगे उन पर किसी प्रकार का कर नही लिया जावेगा।

(12) नजराने की बाबत जो निर्णय सम्वत् 1897 मे हो चुका है उसके अनुसार नीमकेथाने मे व्यवहार किया जायेगा। खालसे के दूसरे गाँवो के विषय मे यदि भोमिये यह सिद्ध कर सकते हैं कि पिछले तीस वर्ष मे किसी तारीख तक किसी उनके खास गाव मे यह परिपाटी रही है कि भोमिया नजराना लेता रहा तो यह हक स्वीकार किया जावेगा। परन्तु प्रत्येक ऐसे गाव वालो को जिसमे उनका हक का दावा है चाहिये कि सेटलमेन्ट कमिश्नर के पास अपना हक स्थायी कराने का अलग दावा पेश करके उस परिपाटी को प्रमाणित करे। यदि किसी गाव वाले अपने लिये इतने हक का निर्णय प्राप्त नही करेंगे तो फिर नजराना राज्य का पुराना हक समझा जावेगा।

(13) आज तक जितने आज्ञा भग आदि अपराध भोमियो की ओर से हुए हैं वह क्षमा किए जाते है परन्तु दूसरे जुल्म इनमे शामिल नही होंगे।

जयपुर के तंवरावाटी के भोमियां का झगड़ा

जयपुर के तवरो भोमियो पर कुछ नये लाग तथा कर लगाये गये हैं। ये वीर राजपूत नई लागते नही चाहते। कहीं जयपुर राज्य से लड कर ये खून खराब न कर ले इसलिए इनके शातिपूर्ण उपायो से काम करने के लिए शिक्षा देने को कन्हैयालाल जी कलन्त्री गये। उन्होने श्री माधोपुर मे तहकीकात की और वहा व्याख्यान भी दिया। गुडा आदि मे इन तवरो के मुखिया भरे है। उनसे ज्ञात हुआ कि वे केवल आत्मरक्षा के लिए आन्दोलन कर रहे हैं कोई राजनैतिक भाव से नही। रियासत के कर्मचारी अपने घोडे गायो के लिए घास गरीब मजदूरो से जबरदस्ती आधे मोल मे ले लेते हैं। सभा के उद्देश्यो की ओर इनका विशेष ध्यान आकर्षित किया गया है। परन्तु इन तवरो का असतोष अभी नही मिटने पाया है। जयपुर के राज्य कर्मचारी इसे निपटाने का पूर्ण प्रयत्न कर रहे हैं।

सभा का कार्य

खेतडी स्वय सेवको को कैद से छुडाना जयपुर बीकानेर राज्य मे सेवा समितियां स्थापित करना, नागपुर दिल्ली व अहमदाबाद मे सभा के बृहद

अधिवेशन करना, भिन्न स्थानों में सभा की कई शाखायें स्थापित करना, भीलों की सहायता के लिए सिरोही जाना तथा उनके लिए रमाकान्तजी मालवीय को कुरते व टोपियां देना, अछूत पाठशालायें खोलना, पीसांगण में सत्याग्रह बिसाऊ के अत्याचारों को हटाने का प्रयत्न करना, अन्य रियासतों के नाना प्रकार के अत्याचारों को हटाने के लिए बारम्बार समाचार पत्रों में आन्दोलन करना, राजस्थान में बेगार विरोधी तथा कई ट्रेक्ट राजस्थान की जनता में मुफ्त बांटना आदि अनेकों कार्य सभा ने किये हैं जिनका विस्तार भय से हम यहां केवल संकेत मात्र देते हैं और राजस्थानियों से निवेदन करना चाहते हैं कि इतने थोड़े रुपये से इतनी विघन बाधायें होते हुए जो कुछ सभा ने किया है वह अपनी शक्तिनुसार अच्छा ही किया है।

राजपूताना मध्य भारत सभा के अधिवेशन

राजपूताना मध्य भारत की कार्यकारिणि सभा की बैठक स्थान:- मारवाडी पुस्तकालय चांदनी चौक दिल्ली समय ता० 5 नवम्बर सन् 1921 रात्रि के 8.30 बजे, उपस्थित:-सेठ जमनालाल जी बजाज, कुंवर चांदकरण शारदा, स्वामी नरसिंह देव सरस्वती, डाक्टर अम्बालाल जी दाधीच, कन्हैयालाल जी कलंत्री. भूरालाल जी कथाव्यास, मणिलाल जी कोठारी, गणेश नारायण जी सोमाणी, केसरलाल जी अजमेर, केसरलाल जी कटारिया जयपुर। सागरमल जी बियाणि सीकर, हरीकृष्ण जी सोढाणी सांभर, रामप्रसाद जी हुरकुट सांभर, जानकी प्रसाद जी शर्मा बगड़ हटा रतनगढ़, केदारनाथ जी गोयन का दिल्ली, कुन्दनमल जी पारख जावरा, कालुराम जी नाहर जावरा, शिवपूजन सहायजी सम्पादक मारवाड़ी सुधार आरा, कर्ण कविजी सम्पादक महेश्वरी दिल्ली, उदितमिश्र बीकानेरी दर्यागंज नं० 24, दिल्ली, विश्वनाथ जी गुप्त बी० ए० दिल्ली, निरंजन शर्मा जी अजीत भरतपुरी सम्पादक वैभव दिल्ली, पूरनचन्द जी मेहरा दिल्ली, प्रोफेसर सुधाकर जी दिल्ली, डा० भानकरण जी शारदा, ज्वाला प्रसाद जी गुप्त दिल्ली, मगनलाल जी शर्मा उदयपुर, गोपाल प्रसाद जी चौबे दिल्ली, धर्म किशोर जी श्रीवास्तव निड़ावा, मणिलाल जी कोठारी लीमडी कठियावाडा, जगन्नाथदास जी अधिकारी भरतपुर, ब्रजमोहनलाल जी जयपूर आदि उपस्थित थे।

श्रीमान् सेठ जमनालाल जी बजाज ने सभापति का आसन ग्रहण किया। नहीं आने वाले सभा सदों के सहानुभूति सूचक पत्र पढ़े गये। जेल में गये हुए सभासदों को बधाई का विषय प्रस्तुत हुआ। बहुत वादविवाद के बाद निम्न प्रस्ताव स्वीकृत हुये।

1 प्रस्ताव यह सभा देशहितार्थ जेल में गये हुए निम्नलिखित सभासदों को हार्दिक बधाई देती है -प० सत्यदेव जी विद्यालंकार सम्पादक राजस्थान केसरी वर्धा प० माखनलाल जी चतुर्वेदी सम्पादक कर्मवीर जबलपुर, गणेशशंकर जी विद्यार्थी सम्पादक प्रताप कानपुर, बाबू रामनारायण जी चौधरी मैनेजर राजस्थान केसरी वर्धा श्रीमान् बाबू भगवानदास जी अग्रवाल मउछावनी, राधामोहन गोकुलजी कलकत्ता।

2 प्रस्ताव यह सभा श्रीमान् बालमुकुन्दजी पराणी इन्दौर सेवा समिति के मन्त्री की असामयिक मृत्यु पर शोक प्रकट करती है और मृतात्मा को परमात्मा से शांती प्रदान की प्रार्थना करती है तथा उनके परिवार के साथ सहानुभूति प्रगट करती है।

3 निम्नलिखित सभा सद सर्व सम्मति से चुन गये कार्यकारिणी सभा के सभासद :-

1 गुलाबराय जी नेमाणि चिडावा।

2 डॉ० अम्बालाल जी दाधीच अजमेर।

3 प० उदित मिश्रजी दरियागंज कोठी न० 5 दिल्ली।

4 स्वामी गोपालदास जी चुरू (बीकानेर)।

5 कुंवर नारायणसिंह जी फतेहपुर (जयपुर)।

6 केदारनाथ जी गोयनका मारवाडी पुस्तकालय दिल्ली।

7 गोरीशंकर जी भार्गव अजमेर।

8 कुंवर मदनसिंह जी करौली।

4 प्रस्ताव :-कार्य अधिक होने से सभा के लिये वैतनिक मन्त्री नियुक्त किये जाने पर विचार हुआ कि 100 मासिक तक का एक वैतनिक मन्त्री 3 तीन मास के लिए रख लिया जावे। सेवा संघ व कांग्रेस के साथ सभा को मिलान की जरूरत नहीं। निम्नलिखित चार सज्जनों को उपमन्त्री नियुक्त करने का अधिकार है।

1 गणेश नारायण जी सोमाणी — 2 चांदकरण जी शारदा

3 स्वामी नृसिंहदेव जी — 4 बी० एस० पथिकजी

5 प्रस्ताव -राजस्थान केसरी के बारे मे श्रीमान सेठ जमनालाल जी बजाज का खुलासा पर विचार हुआ और सर्व सम्मति से निश्चय हुआ —

प्रधानजी के कथन से तथा पूर्व पत्र व्यवहार से पाया जाता है कि राजस्थान केसरी का सम्बन्ध रा० म० भारत सभा से अद्यापि है इस कारण राजस्थान केसरी के लिए जो सहायता श्री पथिकजी अध्यक्ष राजस्थान सेवा संघ ने प्राप्त की है व अन्य किसी अधिवेशन भद्र पुरुष ने कहीं से पाई है वह सब शीघ्र ही सेठ जमनालाल जी बजाज वर्धा के पास भेज दें।

6 प्रस्ताव :-वार्षिक अधिवेशन की तिथि तथा स्थान निश्चित करने का विषय प्रस्तुत हुआ कि वार्षिक निर्वाचन आदि के लिए जनरल मीटिंग कांग्रेस के अवसर पर ता० 30 दिसम्बर को अहमदाबाद में की जावे।

7. प्रस्ताव :-देशी राज्यों में जहां अत्याचार हुआ या हो रहे हैं उन पर विचार हो कर सर्व सम्मति से निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

अ--यह सभा खेतड़ी राज्य पर घृणा प्रगट करती है क्योंकि राज्य ने *सेवा समिति चिड़ावा को बन्द करके स्वयं सेवकों को अकारण गिरफ्तार करके* बड़ा अन्याय किया है।

और जयपुर महाराज से प्रार्थना करती है कि वे खेतड़ी राजाजी से इस कुत्सित कार्य के लिए जवाब मांगे और भविष्य में ऐसे अन्याय अपनी रियासत में न होने देने के लिए प्रबन्ध करें। नोट-फलस्वरूप खेतड़ी राजाजी जयपुर बुलाये गये थे।)

आ--यह सभा चिड़ावा के वीर स्वयं सेवकों गुलाबराय जी नेमाणी, धर्म किशोर जी श्रीवास्तव, व प्यारेलाल जी आदि को उनकी दृढ़ता पर हार्दिक बधाई देती है और आशा करती है की वे देश हित मे सदा वीरता दिखाते रहेंगे।

इ--आज कई मास हुए कि पं० शिवनन्दजी शर्मा ज्योतिर्विद मन्त्री सनातन धर्म सभा जयपुर राज्य ने गिरफ्तार कर रखा है न कोर्ट उन पर बाकायदा मुकदमा चलाया जा रहा है और न कोई कारण ही जनता को प्रगट हुआ है अस्तु जयपुर राज्य से प्रार्थना की जावे कि पंडित जी पर या तो कोई केस चलाया जावे या निरपराध है तो तुरन्त छोड़ दिये जायें। (पंडित जी छोड़ दिये गये।)

ऊ--राजपूताना मध्य भारत सभा की कार्य कारिणि समिति का यह अधिवेशन महाराज बीकानेर के राज्य में श्रीमान् जमनालाल जी बजाज, कुंवर चांदकरण जी शारदा, गौरीशंकर जी भार्गव के प्रति किये गये असभ्य और कानून विरुद्ध वर्ताव के प्रति घृणा प्रगट करती है। और उक्त नेताओं ने जिस

वीरता तथा सहिष्णुता का परिचय दिया है उस पर बधाई देती है और इस प्रस्ताव की नकल महाराज बीकानेर के पास भेजती है कि वे सभा को सन्तोष जनक उत्तर दे और भविष्य मे ऐसी कुत्सित कार्यवाही कभी न होने दे।

घ—यह सभा अखिल भारत वर्षीय राष्ट्रीय महासभा से प्रार्थना करती है कि वह अपनी नीति देशी राज्यो के प्रति स्पष्टतया बतला दें।

ङ – उदयपुर महाराज के ब्रिटिश सरकार द्वारा अधिकार छीने जाने का विषय प्रस्तुत हुआ सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि इस पर आगामी अहमदाबाद कान्फ्रेंस मे विचार हो। सभापति जी को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई। नोट : (गवर्नमेन्ट ने खुलासा कर दिया है कि वे महाराणा साहेब की मर्जी के अनुकूल कार्य करेंगे किसी देशी राजा को गद्दी से नहीं उतारना चाहते।)

राजपूताना मध्य भारत सभा का पंचम अधिवेशन अहमदाबाद

राजपूताना मध्यभारत सभा का पचम अधिवेशन ता० 28 दिसम्बर सन् 1911 की रात्रि को 8 बजे बडी धूमधाम से अहमदाबाद (खादी नगर) मे हुआ श्रीमान् राजा बहादुर गोविन्दलाल जी पीती ने सभापति का आसन ग्रहण किया और सभा का कार्य आरम्भ हुआ। मन्त्री कुवर चांदकरण शारदा ने आगन्तुक प्रतिनिधियो व उपस्थित सज्जनो का सादर अभिनन्दन किया गत कार्य कारिणी सभा की बैठक जो दिल्ली मे हुई थी उसका कार्य पढकर सुनाया। मान्यवर सभापति जी व अन्य उपस्थित सज्जनो की सम्मति से वह पास हुआ। सभा की रिपार्ट व नियम पास हुये।

आगामी वर्ष के पदाधिकारी और कार्यकारिणी सभा के सदस्य निम्न-लिखित सज्जन चुने गये।

प्रधान—श्रीयुत राजा बहादुर गोविन्दलाल जी पीती	बम्बई
उप प्रधान—ठाकुर केसरीसिंह जी	कोटा
मन्त्री—हीरालाल जी जालोरी	कोटा
उप मन्त्री—डॉ० अम्बालाल जी दाधीच	अजमेर
,, कन्हैयालाल जी कलन्त्री	फलोदी
, सुखसम्पत्ति रायजी भण्डारी	इन्दौर
कोषाध्यक्ष—प० रामचन्द्र जी वैद्य	अजमेर

कार्यकारिणी सभा के सभासद निम्नलिखित चुने गये।

श्रीयुत बी० एस० पथिकजी अजमेर, श्रीयुत स्वामी नृसिंहदेव जी सरस्वती जयपुर, श्रीयुत सेठ जमनालाल जी बजाज वर्धा, श्रीयुत कुंवर चांदकरण जी शारदा अजमेर, श्रीयुत ब्रह्मचारी हरीजी अजमेर, श्रीयुत प्रकाश चन्द सेठी अजमेर, श्रीयुत राजा बहादुर मुकुन्दलाल जी पीती मुम्बई, श्रीयुत रामप्रसाद जी हुरकुट सागर, श्रीयुत गोपी कृष्ण जी मूंदड़ा जोधपुर, श्रीयुत सागरमल जी गोपा बम्बई, श्रीयुत कुंवर गोविन्ददास जी जबलपुर, श्रीयुत गुरां वाला जी जोधपुर, श्रीयुत माणिक्यलाल जी बिजोलिया, श्रीयुत ऊंकारदत्त जी इन्दौर, बृजलाल जी बियानी आकोला, श्रीयुत नित्यानन्द जी बूंदी, श्रीयुत नानूराम जी कोटा, श्रीयुत सत्यदेवजी विद्यालंकार वर्धा, श्रीयुत शंकरलालजी वर्मा वर्धा, श्रीयुत गोपीवल्लभ जी सहायक सम्पादक हिन्दी नवजीवन अहमदाबाद, श्रीयुत रामगोपाल जी शर्मा पन्ना, श्रीयुत विठलदास जी भोपाल,

सभा में निम्नलिखित सज्जन उपस्थित थे

श्रीयुत कुंवर मुकन्दलाल जी पीती बम्बई, प्रकाशचन्द्र जी सेठी अजमेर रामनारायण जी चौधरी अजमेर, स्वामी हरीदास जी चुरू बीकानेर, ब्रह्मचारी हरीजी अजमेर, कुंवर गोविन्ददास जी जबलपुर, बृजलाल जी बियाणी आकोला, श्रीकृष्णदास जी जाजू वर्धा, माणिक्यलाल जी वर्मा बिजोलिया, सीतारामदास जी बिजोलिया, शांतीप्रसाद जी व्यास नसीराबाद, सागरमल जी गोपा बम्बई, मोडसिंह जी पुरोहित खरवा अजमेर, इन्द्रलाल जी देवड़ा फतेहपुर जयपुर, रामप्रसाद जी हुरकुट सांभर, नित्यानन्द जी नागर बूंदी, पं० रतनलाल जी मेवाड़ नाथद्वारा, उमाशंकर शर्मा अजमेर, राष्ट्रीय हलवाई बिजोलिया मेवाड़, पन्नालाल जी महेश्वरी रतनगढ़ बीकानेर, नेत्र वैद्य बख्तावरलाल जी सोजत, छगनलाल जी वैद्य इन्दौर, ऋषीदत्त जी बूंदी, शोभालाल जी अजमेर, गौरीदत्त जी ब्राह्मण सुजानगढ़ (बीकानेर), कस्तूरचन्द जी फलोदी, भीष्मदेव जी शास्त्री रामगढ़ (जयपुर), घेवरचन्द जी फलोदी, गोपीकृष्ण जी मूंदड़ा जोधपुर, रामगोपाल जी शर्मा रतनगढ़, अमृतलाल जी बम्बई, लाला रूपचन्द जी मोजन, गुरू वालजी जोधपुर, भगवानदास जी भौरा जोधपुर, वैद्य रामचन्द्र जी अजमेर, मोतीलाल जी रतनगढ़. व्यास वत्सराज जी जोधपुर, कुंवर चांदकरण शारदा अजमेर, सेठ जमनालाल जी बजाज वर्धा, स्वामी नृसिंहदेव जी सरस्वती अजमेर, रामनारायण जी चौधरी अजमेर, सत्यदेव जी विद्यालंकार वर्धा, शंकरलाल जी वर्मा वर्धा, कन्हैयालाल जी कलंत्री वर्धा.

इत्यादि कई गणमा य सज्जन उपस्थित थे। राजा बहादुर गोविन्दलाल जी ने देशी राज्यों पर एक बहुत ही विचार पूर्ण भाषण दिया जो पृथक छपाया जायेगा : तत्पश्चात कुंवर चादकरण शारदा का प्रस्ताव पेश हुआ —

1 प्रस्ताव —यह सभा प्रत्येक राजस्थान व मध्य भारत के देशी राज्य निवासी से प्रार्थना करती है कि वर्तमान स्वतन्त्रता के युद्ध मे ब्रिटिश भारत को पूर्ण सहायता प्रदान करें। और विशेषतया अपने राज्यो मे स्वदेशी प्रचार, अछूतोद्धार व शराब निषेध मे आन्दोलन करें जो भाई अधिक बलिदान के लिये तैयार है वे ब्रिटिश भारत मे आकर स्वय सेवक बन।

प्रस्तावक	कुंवर चादकरण	अजमेर
अनुमोदक	सेठ जमनालाल जी	वर्धा
,,	डॉ० अम्बालाल जी	अजमेर
,,	महादेव प्रसाद जी पोद्दार	फतेहपुर (भागलपुर)

सर्व सम्पत्ति से पास हुआ।

2 प्रस्ताव :—यह कान्फ्रेंस नागपुर के गत चतुर्थ अधिवेशन म पास हुए प्रस्तावो का पुन समर्थन करती हुई देशी राज्य निवासियो व देशी नरेशो का उनकी ओर ध्यान आकर्षित करती है।

प्रस्तावक	—चाद करण शारदा	अजमेर
अनुमोदक	—वैद्य रामचन्द्र जी	,,

सर्व सम्पति से पास हुआ।

3—प्रस्ताव —यह सभा श्रीमान जयपुर नरेश से प्रार्थना करती है कि जयपुर सनातन धर्म मडल के मन्त्री प० शिवनन्द जी ज्योतिर्विद् जो कई मास से कोतवाली मे दुःख पा रहे हैं और जिन पर यद्यपि किसी प्रकार का दोष प्रमाणित किया जाकर प्रकाशित नही हुआ है या तो उनको मुक्त किया जावे या कोई दोष प्रमाणित हुआ है उसे प्रकट किया जाकर नियमानुकूल सजा दे जेल मे रखे जावें यदि जयपुर नरेश ने इस ओर ध्यान नही दिया तो प्रजा मे असन्तोष बढने की अधिक सम्भावना है।

प्रस्तावक —स्वामी नृसिंहदेव जी

अनुमोदक —छगनलाल जी वैद्य

सर्व सम्पति से निश्चय हुआ। (प० जी छोड दिये गये)

4—प्रस्ताव :—ब्रिटिश भारत में निकलने वाले कानपुर के निर्भीक पत्र प्रताप वर्धा के राजस्थान केसरी और दिल्ली से निकलने वाले वैभव आदि कई पत्र को कई देशी राजाओं ने बन्द कर रखा है। यह सभा इन नरेशों से अनुरोध करती है कि वे इस अवैध और अन्याय मूलक प्रवेश निषेध को शीघ्र ही रद्द कर दें।

प्रस्तावक :—डॉ० अम्बालाल जी

अनुमोदक :—सागरमल जी गोपा

सर्व सम्मति से स्वीकार हुआ।

5—प्रस्ताव :—अधिकतर गौवध का प्रधान कारण गोविक्रय है इस लिए यह सभा राजस्थान वासियों से प्रार्थना करती है कि अपनी रियासतों में ऐसा प्रबन्ध कर दें कि गोवंश ऐसों के हाथ में कदापि न जाने दें जिन के द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से रक्षा न होकर उनके प्राण हानिका भय हो।

प्रस्तावक :—राम प्रसाद जी हुरकुट, सागर

अनुमोदक :—सागर मलजी गोपा, बम्बई

6—प्रस्ताव :—इन्दौर में जो इन्दौर प्रजा परिषद हुई उसके लिए यह सभा वहां की प्रजा और राजा को बधाई देती है। और राजपूताना मध्य भारत की अन्य देशी राज्यो के प्रजा और राजा से इन्दौर की प्रजा का अनुकरण करने का अनुरोध करती है और इंदौर महाराज से सानुरोध प्रार्थना करती है कि इंदौर प्रजा परिषद द्वारा स्वीकार प्रस्तावों के अनुसार शीघ्र कार्यवाही करे और उन्होंने विलायत से आने के बाद प्रजा को राज्य कारबार में भाग देने की घोषणा की है उसे शीघ्र कार्यरूप में परिणित करें।

प्रस्तावक :—स्वामी नृसिंह देवजी सरस्वती

अनुमोदक :—कुंवर गोविन्द दासजी जबलपुर

" :—डा० अम्बालाल जी अजमेर

तत्पश्चात जमना लाल जी बजाज सभापति, मन्त्री कुंवर चांदकरण शारदा और सहकारी मन्त्री स्वामी नृसिंह देवजी सरस्वती आदि ने गत वर्ष जो कार्य उत्साह पूर्वक किया था उसका धन्यवाद कन्हैया लाल जी कलंत्री ने दिया। सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ। रुपये 101 जो राजा बहादुर मुकन्द लाल जी ने सभा में दिये उसका धन्यवाद दिया पश्चात् कुंवर चांदकरण जी शारदा जी

ने सभापति जी को धन्यवाद दिया और वन्देमातरम् व वीर भूमि राजस्थान की जय आदि जय घोषो में सभा विसर्जित हुई।

मन्त्री

चाद करण शारदा

राजपूताना मध्य भारत सभा अजमेर

प्रबन्ध कारिणि का विशेष अधिवेशन ता० 10–8–22 को हुआ।

स्थान :—कांग्रेस कमेटी

उपस्थित श्री कुंवर चाद करण जी शारदा

,, वैद्य रामचन्द्र जी

,, सुख सम्पति राय जी भण्डारी

,, कन्हैयालाल जी कलन्त्री

,, डा० अम्बालाल जी

,, प्रकाशचन्द्र जी सेठी

,, ब्रह्मचारी हरी जी

प्र०—1—श्री चाद करण जी शारदा, गणेश शकर जी विद्यार्थी, श्री ब्रह्मचारी हरी जी तथा श्रीमान् सेठी जी को देश सेवा उपलक्ष मे जेल जाने तथा सकुल लौट आने पर हार्दिक बधाई देती है।

प्रस्तावक :—डा० अम्बालाल जी

अनुमोदक :—सुख सम्पति राय जी भण्डारी

प्र०—2 श्री हीरा लाल जी जालोरी से कहा जाय कि आप आठ दिन के अन्दर आकर सभा के कार्य का चार्ज लेवे इसकी स्पष्ट सूचना हमें आठ दिन के अन्दर देवे।

सर्व सम्मति से पास।

3—प्रस्ताव :—भील सहायक फण्ड का प्रस्ताव बहुमत से निम्न प्रकार पास हुआ —

भील सहायक फण्ड के लिए सभा की ओर से श्री कन्हैयालाल जी कलन्त्री सं० मन्त्री ने अपील की थी उसका सब रुपया एक कमेटी के सुपुर्द किया जावे। इस कमेटी मे 6 मेम्बर्स सभा के, छः सेवा संघ के और 4 सज्जन कांग्रेस

कमेटी के लिए जायें तथा श्री पथिक जी से प्रार्थना की जाय कि जो रुपया भील सहायक फण्ड का उनके पास है या आया है वह इस कमेटी के सुपुर्द कर दिया जाय। सभा की ओर से

1-श्री चांद करण जी शारदा 2-वैद्य रामचन्द्र जी
3-सुख सम्पति राय जी भण्डारी 4-डा० अम्बालाल जी
5-श्री कन्हैयालाल जी कलंत्री 6-श्री अर्जुनलाल जी सेठी

नाम निश्चित हुए। भण्डारी जी को कनविनर मुकर्रर किया।

प्रस्तावक :—रामचन्द्र जी अनुमोदक :—भण्डारी जी

4—प्रस्ताव :—सभापति की ओर से श्री कलंत्री जी को उनकी सेवा के उपलक्ष में धन्यवाद दिया जाय।

दिनांक 28-8-22

स्थान :—प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी

उपस्थित :—सुख सम्पति राय जी भण्डारी

चांदकरण जी शारदा स्वामी नृसिंह देवजी सरस्वती कोरम नहीं होने के कारण तथा श्रीमान् कलंत्री जी के मुल्तवी करने के तार आने के कारण ता० 3-9-22 के लिए मुल्तवी की गई।

स्वामी नृसिंह देवजी चांदकरण शारदा
सामयिक सभापति क० कलंत्री
  स० मंत्री

ता० 3-9-1922 स्थान कांग्रेस कमेटी।

उपस्थित-स्वामी नृसिंह देवजी, चांदकरण शारदा, कन्हैयालाल कलंत्री।

सामयिक सभापति सर्व सम्मति से स्वामी नृसिंहदेव जी चुने गये। सं० मंत्री कन्हैयालाल कलंत्री ने नोटिस पढ़कर सुनाया जिसमें सभासदों को सूचना दी गई यदि वे 3-9-22 को सभा में उपस्थित न होंगे तो बिना कोरम ही कार्यवाही करदी जावेगी। अजमेर से बाहर वालों को भी डाक द्वारा सूचना दे दी गई है। अतः कलंत्री जी की यह सूचना स्वीकार की गई कि स्थगित मीटिंग होने से कार्यवाही प्रारम्भ करदी जावेगी।

1—प्रस्ताव —श्रीमान् कन्हैयालालजी कलन्त्री ने प्रस्ताव किया कि हीरालालजी जालौरी ने न तो अब तक मन्त्री का चार्ज ही लिया न पत्र तथा स्वय। जाकर मिलने पर उन्होने कार्य करना अस्वीकारा बल्कि सर्वथा असमर्थता प्रगट की अत सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि कुवर चादकरण शारदा से प्रार्थना की जाव कि जब तक कोई दूसरे मन्त्री का प्रबन्ध न हो सके तब तक वे पूर्ववत् मन्त्री का कार्य करें।

2—प्रस्ताव—कुवर चादकरण जी के स्थान मे श्री प० अर्जुनलाल जी सेठी सभासद चुने गये।

नोट—सभापति जी ने प० अर्जुनलाल जी सेठी से प्रार्थना की कि वे सभा मे सम्मिलित होने आ विराजें।

3—प्रस्ताव—क्योकि सेवा सघ वालो को कांग्रेस की ओर से भील सहायक एण्ड प्रबन्धक कमेटी मे लेने मे एतराज है अत यह प्रश्न उक्त कमेटी ही हल करे उसे शीघ्र बुलाने के लिये भण्डारी जी को कहा जाय।

4—प्रस्ताव—मन्त्री या आफिस की ओर से सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि ठाकुर किशोर सिंह जी 60 रुपये मासिक पर सभा का कार्य करने के लिये नियुक्त किये जायें। आफिस खर्चे के लिए श्री कलन्त्री 125 रुपय ला देने का वादा करते हैं।

5—प्रस्ताव—सभापति की ओर से। स० मन्त्री श्री कलन्त्री का कलकत्ता का हिसाब जाचने के लिए डा० गुलाबचन्द जी पाटनी व श्री प० अर्जुनलाल जी सेठी नियुक्त किये जायें और उनसे प्रार्थना की जावे कि वे शीघ्र जाच दें।

नोट—कोपाध्यक्ष रामचन्द्र जी वैद्य को भी बतला दिया जाय।

6—प्रस्ताव—स० मन्त्री श्री कन्हैयालाल जी कलन्त्री बूदी, कोटे, श्री माधोपुर परिस्थिति की जाच करने गये थे उसका हाल लिखकर मन्त्री के पास भेज दें और वे उस पर उचित कार्यवाही करें।

7—प्रस्ताव—सभा का आगामी वार्षिक बृहद अधिवेशन कोटे मे किया जाने का प्रयत्न किया जावे।

8—प्रस्ताव—श्रीयुत वी० एस० पथिकजी को लिखा जावे कि रुपया 200 दो सौ जो बेगार आन्दोलन के लिए सी एफ. एण्ड्रूज के जाच के दौर में

खर्च करने के लिए थे वे रुपये 15 दिन के अन्दर वापिस करदें। इसके लिए पहले भी कई बार लिखा जा चुका है और सी. एफ. एण्ड्रूज दौरा करने आए भी नहीं हैं।

नोट—(पथिकजी ने यह रुपया आज तक नहीं लौटाया)

9—प्रस्ताव—राजनैतिक विभाग के लिए निम्नलिखित 5 सज्जनों की उप सभा बनाई जाय इसके कनविनर श्री कलंत्रीजी रहें।

1—कुंवर चांदकरण जी शारदा 2—अर्जुनलाल जी सेठी

3—कन्हैयालाल जी कलंत्री 4—स्वामी नृसिंह देवजी

5—सुख सम्पति रायजी श्री भण्डारी

10—प्रस्ताव—सेवा विभाग के कनविनर श्रीमान् डा० अम्बालाल जी नियुक्त किये जावें और राजपूताना की सेवा समितियों से पत्र-व्यवहार करें।

सभा का हिसाब

इस वर्ष सभा को राजा मुकुंदलाल जी बहादुर ने 101) रुपये का एक सौ एक प्रदान किये इसके लिए सभा उनकी अत्यन्त कृतज्ञ है। ता. 1-10-21 तक का हिसाब गत वर्ष की रिपोर्ट में प्रकाशित किया जा चुका है। उस समय सभा के पास 1121॥) थे। इस वर्ष कुल आमदनी ता. 28-12-22 तक 190) हुई। इस प्रकार सभा के पास कुल 134॥) थे उसमें से 1086॥) व्यय हुआ अब सभा के कोष में 225) दो सौ पच्चीस रुपये हैं।

मान्यवर शारदाजी वन्दे—

आपकी आज्ञानुसार मैंने बाबू कन्हैयालालजी कलंत्री का हिसाब जांचा जिसमें उन्होंने वाउचर के बतौर दो रसीद बुकें मुझे दिखलाई एक रसीद बुक सेवा संघ और मध्य भारत सभा दोनों की तरफ से दिखाई और दूसरी केवल मध्य भारत सभा की ओर से रसीद नं० 19,5857 के 277 रुपये की रसीद वो जारी कर चुके मगर कहते हैं कि रुपया वसूल नहीं हुआ। इसके अलावा 2612 कलकत्ते में किसी के यहां जमा कराया है जिसकी रसीद उनके पास नहीं है इन दोनों बातों की तहकीकात सभा को करना चाहिये। 3162॥) रुपया पथिकजी के पास भेजा हुआ बतलाते हैं। मगर पथिकजी ने सिर्फ 3000 की आय प्रकाशित की है बाकी का झगड़ा भी सभा को तय करना चाहिये। खर्चे में सिवाय तारों

की रसीद के और कोई वाउचर नही है परन्तु इस पर मैं आक्षेप इस कारण नही कर सकता क्योंकि रेल का किराया, मजदूरी, खाना खर्च और मोटर किराया आदि के वाउचर इक्ट्ठे करना मुश्किल होता है। कुछ वाउचर उन्होंने टोपी और कपड़े के खरीद के बताये हैं जो ठीक मालूम होते हैं इसका ज्यादा जो सेवा आप मुझसे चाहे वो लिख भेजें ताकि वैसे ही किया जाय।

आपका सेवक
मलता प्रसाद
मन्त्री जिला कमेटी

(Kalantri's Clarification)

राजपूताना मध्य भारत सभा की रसीद बुक से कलकत्ते मे 5447 रुपये एकत्र हुए बाहर के रुपये 100 मिलाकर कुल रुपये 5547 भील सहायता खाते प्राप्त हुए। सभा और सघ की मीश्रित रसीद बुक से रुपये 641 प्राप्त हुए हैं। और सब 6188 हुए।

पथिकजी के पास रुपये 3162-।। आने मेरे द्वारा पहूँचे जिसमे से 3000 तो वे स्वीकार करते ही हैं और 100 नोट का आधा हिसा उन्हें मिला नही करके शोभालाल और डाक्टर पी० आचार्य कहते थे अत वे जमा नही किये तथा मैंने 54 रुपये द्वारकालाल को कलकत्ते मे दिये वो भी जमा नहीं किये और रुपये 7.।। आने का उनको सामान दिया वो भी नहीं है रुपये 2112 आर. के मोहता और 500 वासुदेव दूर्गादत्त के पास भी स० के जमा हैं।

रुपये 138 का हिसाब गजानन्द शर्मा ने भेजा है उसको म०श्रीजी के पास करने पर जमा खर्च होगा वे उसके लिए अत. नावे हैं रसीद 3 सभा के बुक से निकाली जिसके रुपये आर० के मोहता के यहां दिलवाये थे जमा नही हुए अतः केन्सिल है। न० 19-56-67 के 101, 15,125 सघ के मिश्रित रसीद से भी एक रसीद वाले ने आर० के मोहता के यहा 100 रुपये भेजने को कहा था वे भेजे नही गये। न० 117 केन्सील हैं इसके सिवाय मेरे स्वत के 38 रुपये जादे हुए वह मिलते हैं। अत. जमा है।

सफर खर्च के अलावा कलकत्ते मे मेरा निजी खर्च बिलकुल नही लिया गया है वह स्पष्ट ही है।

इसके अलावा यह खर्च मेरे ढाई मास मास काम मे और कलकत्ता जैसे स्थान मे हुआ है जो समाज डेपुटेशन मे तीन हजार होकर रहा है मुकाबले मे कितना कम है।

यह भी खर्चा जरूरत समझेंगे तो जरूर देंगे इसके अलावा पथिकजी को तार देकर तार में ही मगवाये वह दिखा चुका तथा वर्कर को मैंने बुलाया था वह भी और उनके हाथ की चन्दा करने की सनद भी और रसीद के लिए लिखा था वह डायरी भी दिखा दी है।

तत्पश्चात् ज्ञात हुआ कि 1613 रुपये पं० अर्जुनलालजी सेठी दलितोद्धार व हिन्दू स्वयं सेवक दल के नाम से उसी फंड से कलकत्ते से आर० के० मोहता साहब से लाये और अजमेर लाकर उन रुपयों को वैदिक यन्त्रालय में अपनी धर्म पत्नी के नाम से जमा करने का प्रयत्न किया। ये रुपये सभा के हैं उनका हिसाब पं० अर्जुनलालजी सेठी ने सभा को बताने से इन्कार दिया इस वास्ते इनमें से जितने रुपये वैदिक यन्त्रालय में जमा थे रुकवा दिये गये और श्रीमान् मोहताजी ने भी यही वैदिक यन्त्रालय को लिख दिया है कि यह रुपया पं० अर्जुनलालजी सेठी को न दिया जाय।

हमारी कलकत्ता निवासियों से यही प्रार्थना है कि ये रुपये कलकत्ता निवासियों ने गरीब भीलों की सहायता के लिये दिये थे इस वास्ते ये रुपये भीलों के लिए ही उनको विद्या पढ़ाने ऊंचा उठाने में व ईसाई मुसलमान होने से बचाने में व्यय किये जावे।

सेवा संघ का भीलों वाला हिसाब

जो भील ग्रामिया फंड का हिसाब राजस्थान सेवा संघ की ओर से प्रकाशित हुआ है वह झूठा बनावटी व फर्जी है उससे वे रकमें जमा नहीं की गई है जो सिरोही में रेल किराया वगैरे के लिए श्रीमान् रमाकान्तजी मालवीय ने इन्हें दी और न यो ही मोटी-मोटी रकमें प्रकाशित हुई है जो पथिकजी ने महात्मा गांधीजी के चेले बनकर भीलों से चढ़ाये में प्राप्त की। हम चाहते हैं कि राजस्थान सेवा संघ के पास जितना रुपया भीलों ने, भीलों की सहायतार्थ दूसरों से प्राप्त हुआ है वह भीलों के हितार्थ ही व्यय हो और सेवा संघ उसे दूसरे कामों में न लाये।

भील फंड के दान दाताओं की सूची (कलकत्ता)

11 किसनदयालजी जालान, 200 बाबू रगलालजी जाजोदिया, 5 बच्छराजजी, 11 नरसीचन्दजी 20 बाबु बैजनाथजी 75 एकदाता, 25 बाबू प्रभूदयालजी 101 एक सज्जन, 25 मगनचन्दजी चुन्नीलालजी, 5 रामनारायणजी महादेव, 11 सूरजसिंहजी मोहता, 5 गोरख रामजी जानकीदासजी, 5 मोहन-

लालजी बागड़ी 5 गोकुलदासजी बनाणी, 5 गोपालदासजी दमाणी, 5 बाल-
किसनजी, मोहता 101 चम्पालालजी बनाणी 11 हरिकिशनजी बियाणी,
11 मखनलालजी बजरंगलालजी, 21 बालमुकन्दजी मठड, 11 एक सज्जन
11 भोलानाथजी माखनदासजी, 11 मगनलालजी कोठारी, 10 फूलचन्दजी चौधरी
7 बैजनाथजी मगुनलाल तथा एक सज्जन, 7 छोटेलालजी भगवानदासजी,
7 वैद्यनाथजी गाडोदिया, 25 शिवभगवानजी गजानन्दजी, 51 मगनलालजी
शोभाचन्दजी, 101 गोरधनदासजी मरतिया, 35 एक सज्जन, 7 वासुदेवजी
दुर्गादत्तजी, 101 कलकत्ता पाट एसोसियेशन, 319 वीट एण्ड सीड्स एसोसियेशन
के मेम्बर 25 केसरीमलजी अग्रवाल (भगडा कोठी), 71 पनालालजी श्रीकिशन
पाचागली, 5 बाबू कुंजलालजी नारमल सुल्तानिया 51 गोरधनदास बालुराम
पाचागली 15 सदासुख कटला छेली ओल हस्ते बालुराम, 21 सुगनचन्द जी
बागडी, 51 एक सज्जन, 251 बा० माधोमल जी रघुमल जी, 51 फूलचन्द
जी केदारनाथ जी, 11 रतनचन्द जी गिरधर लाल जी, 100 भजूराम जी आट
110 छीटपटी की कमटी मनोहरदास कटला, 301 मन्त्री वीट एण्ड सीडस
एसोसियेशन, 51 एक सज्जन, 51 रावतमल जी भैरूदान जी, 50 थोकारामल
जी सर्राफ सुतापटी, 51 गोपीराम जी रामचन्द्र जी आर्मोनियम स्ट्रीट 50
रीधकरण जी कावरा कम्पनी, 25 एक सज्जन, 11 एक सज्जन, 51 जयदयाल
जी मदनगोपाल जी काली गोदाम नं 16, 51 लक्ष्मीनारायण जी रामचन्द्र जी,
51 चिरंजीव लाल कम्पनी, 51 बैजनाथ जी केडीया, 15 रामदेव जी,
101 हरसुखदास जी दूलीचन्द जी वा नन्द किशोर, 35 मिरजामल जी
जगन्नाथ जी राधा बाजार नं 14, 25 एक सज्जन (हीरालाल जी चपड़ा
बाजार), 31 शिवदत्तराय जी श्री निवास सुता पट्टी, 101 लालचन्द जी
बलदेवदास जी (श्री नारायण कपा नं 3 बे हरापट्टी), 101 साधुराम जी
तोलाराम जी, 151 एक सज्जन, 151 राधाकिशन जी सोनथलिया, 21 तिलोक
चन्द जी नेवर शेयर बाजार, 25 कोठारी कम्पनी, 40 घनश्यामदास जी
लोयलका हेलीडे स्ट्रीट नं 14, 11 गोपाललाल जी चुनीलाल जी दमाणी
21 ठाकुरलाल जी मूंदडा सुतापटी नं 1, 5 एक सज्जन, 5 एक सज्जन,
500 बाबू जुगल किशोर जी बिड़ला 101 रामदत्तजी गंगा बक्स जी कानोडिया
25 एक सज्जन 500 बा रामकिशन दास जी मोता स्टड रोड नं 28, 201
सुमेरमल जी सुराणा मनोहर कटला, 11 भवरीलाल जी कोठारी मगलचन्द जी
आनंदमल जी क्लाईव स्ट्रीट नं 20, 50 एक गुप्तदानी फलेदिया, 50 एक
सज्जन, 51 सुगनचन्द जी रूपचन्द जी नं 516 आर्मो नियम स्ट्रीट, 11 बा

रामचंद जी हनुमान बक्स जी रामकुमार जी जालान, 50 दौलतराम जी रावत मलजी हरिसन रोड़, 25 रंगलाल जी जाजोदिया, 100 सूरजमल जी जालान हरिसन रोड़ नं. 61, 111 बा हजारीमल जी सोमाणी काली गोदाम नं. 18, 31 पन्नालाल कोठारी जीतमल रावतमल मनोहरदास कटरा, 51 रामेश्वरलाल 21 बदरीदास जी रामेश्वर दूम का, 2। देवकरण जी प्रभुदयाल, 25 गणेश दास जी हरदतराय जी, 19 बा० वी० सी० दास, 25 गोपीकिसन जी कोठारी, 200 एक सज्जन (घणसामदास), 151 बा मुरलीधर जी सोमानी, 100 भागीरथ जी. 11 एक सज्जन (बद्रीदास जी केडिया), 11 परमसुख दास जी मूंदड़ा आर्मोनियम स्ट्रीट, 25 गोकुलदास जी, 251 अपर इंडिया एसोसियशन, 101 बद्रीदास जी पूंगलिया,

श्रीमान् भागीरथजी कानोड़िया पोलानी हाल कलकत्ता निवासी ने कलंत्रीजी को जो पुस्तकें राजस्थान में प्रचारार्थ तथा मुफ्त बांटने को दी वे निम्नलिखित पुस्तकें सधन्यवाद स्वीकार हैं, और जनता में बांटी भी गई।

100 म० गांधी का जीवन चरित्र	25 चर्खा और स्वराज्य
100 म० गांधी जी का सन्देश	16 हिन्दी का सन्देश
100 म० गांधी जी का पैगाम	10 स्वराज्य घोषणा
100 स्वदेशी और स्वराज्य	8 मनुष्यों का कर्तव्य का परिचय
100 सत्याग्रह रहस्य	3 स्वदेशी पर महात्मा गांधी
100 अदालतों का बायकाट	50 कांग्रेस घोषणा
100 असहयोग प्रोग्राम	15 वेदान्त का विजय मन्त्र
15 सुदर्शन चक्र चर्खा	10 किसानों का सुधार
4 हम असहयोग क्यों करे	2 संसार व्यापी असहयोग
5 भारत की स्वाधीनता का संदेश	25 जोगी फेरी
1350 महात्मा गांधी के चित्र	75 असहयोग
25 राजस्थान में बेगार	

वी० एस० पथिकजी को जेल

जिस समय उदयपुर दरबार द्वारा श्रीमान् वी. एस. पथिकजी की गिरफ्तारी के समाचार आये उसी समय सभा की ओर से श्रीमान् मेवाड़ के

दीवान साहेब को पत्र लिखा गया कि उन्होने बीमारी की हालत मे उन्हें पकड कर घोर अन्याय किया है और उन्हे शीघ्र ही छोड देने की प्रार्थना की।

सभा से त्याग पत्र

श्रीमान् प० अर्जुनलाल जी सेठी व स्वामी नरसिंहदेव जी ने सभा से त्यागपत्र दे दिया है।

राजपूताना मध्य भारत सभा द्वारा किया हुआ अस्पृश्य जातियो मे कार्य

सभा सदा दरिद्रियो और गरीबो की सहायक रही है इस वास्ते अछूत जातियो की दशा सुधारने का काम करने के लिए कुवर चादकरण जी ने बोभा उठाया। मुम्बई के कुछ उत्साही सज्जनो को राजस्थान की अस्पृश्य कहलाने वाली जातियो के उद्धारार्थ ध्यान आकर्षित किया और हर्ष है कि उन्होने इसकी प्रार्थना स्वीकार कर चन्दा एकत्रित किया। उस चन्दे मे से इस समय 6 पाठ-शालायें चल रही है। अजमेर नगर की तीन पाठशालाये दिल्ली दर्वाजे नगरा व रैगर मोहल्ले मे है। एक पाठशाला ब्यावर मे है और एक पाठशाला खास जयपुर मे है और एक रामगढ शेखावाटी मे है इन पाठशालाओ का प्रबन्ध ऐसे महानुभवो के हाथ मे है जिनका राजनीति से कुछ सम्बन्ध नही और न इन पाठशालाओं के खोलने का उद्देश्य किसी देशी राज्य के अन्दरूनी मामले मे हस्तक्षेप करने का है। यह तो केवल सेवा भाव को सामने रखकर खोली गई है हमें दुख है कि कुछ ना समझो के बहकाने मे आकर अथवा देश काल को बिना सोचे ही मलसीसर ठाकुर साहब ने अपने गाव मे गरीबो के लिए जो पाठशाला सभा ने खोली थी उस जबरदस्ती बन्द कर दी। रामगढ के कोतवाल भी उसी प्रकार अछूत पाठशाला के अध्यापक को दिक कर रहे हैं और पाठशाला का जबरदस्ती बंद कर रहे है जयपुर स्टेट काउन्सिल से सादर प्रार्थना है कि विद्या प्रचार के बाधको को दण्ड प्रदान करे पाठशालाओ के कार्य की विस्तृत रिपोट व इनका आय व्यय का हिसाब पृथक रिपोर्ट मे प्रकाशित होगा।

नाभा मे नरेश को राजगद्दी से उतारने पर विरोध

जिस समय नाभा नरेश को राजगद्दी से उतारा गया और यह समाचार पत्रो मे प्रगट हुआ तब ही सभा की ओर से महाराजा नाभा को पुन राजगद्दी पर बिठाने का व सरकार की अनुचित कार्यवाही का निंदा का पत्र भेजा गया।

देशी नरेश रक्षा कानून का विरोध

जिस समय प्रिन्स प्रोटेक्शन बिल प्रजा की इच्छा के विरुद्ध लाट साहब ने अपनी मर्जी से पास कर दिया तब सभा की ओर से इसका घोर विरोध किया

गया और इन कानून को रद्द करवाने को चीफ कमिश्नर साहब अजमेर द्वारा सेक्रेट्री आफ स्टेट को पत्र लिखा गया तथा सभा की ओर से समाचार पत्रों में भी इसका आंदोलन किया गया।

बड़ौदा राज्य के पीड़ित कालीपरज निवासी

नवसारी के भीलों में आत्मशुद्धि का आंदोलन चल रहा है। भील, के मांस मदिरा त्याग के पवित्र आंदोलनों को वहां के मजिस्ट्रेट पारसी ठेकेदारों के दवाव में मंत्री देशभक्त श्रीयुत कुंवर चांदकरण जी शारदा स्वयं नवसारी इस मामले की तहकीकात करने गये व मद्यपान निषेध मण्डल के प्रधान डाक्टर सुमन्त साहब से मिले व वारों नवसारी के देशभक्त जो काली परज की सच्ची सेवा कर रहे हैं वह जिनकी जवान पर डिस्ट्रिक्ट मेजिस्ट्रेट ने ताला लगाया है उनसे मिले व उनको उनकी दृढ़ता पर बधाई दी। वे कुछ भीलों से भी मिले व उनको पवित्र मार्ग पर धैर्य पूर्वक दृढ़ रहने का उपदेश दिया। हम हर्ष के साथ सूचित करते हैं कि बड़ौदा के प्रजा प्रिय श्रीमान महाराजा साहब ने उस मजिस्ट्रेट को बदल दिया है जिन्होंने इस गरीब प्रजा पर दमन नीति का प्रयोग किया था और हमें पूर्ण आशा है कि पतित पावन महाराजा साहब जिन्होंने अपनी भील प्रजा की उन्नति के लिये स्कूल और बोडिंग हाऊस खोली है वे कदापि सिरोहि व मेवाड़ जैसे पिछड़े हुए देशी राज्यों का अनुकरण नहीं करेंगे। वल्कि भील प्रजा की उन्नति मे अग्रसर हो दमन नीति करने वालों को दण्ड दे कर ससार मे यश के भागी वनेंगे।

बधाई

वी० एस० पथिकजी स्वामी प्रेमचन्द जी गोपीलाल जी लक्ष्मणसहाय जी पंडित नयनराम व स्वामी नारायणसिंह जी आदि मातृभक्त जो भीलवाड़े व बूंदी मे प्रजा के कष्ट निवारणार्थ जेलों में कष्ट भोग रहे हैं उनको हम हार्दिक बधाई देते हैं और मेवाड़ व बूंदी दरबार से प्रार्थना करते है कि वे इन्हें शीघ्र मुक्त करदें।

करौली राज्य में अत्याचार

यह समाचार पत्रों में सभा की ओर से कई बार प्रकाशित हो चुका है कि करौली राज्य के कुशासन से प्रजा दुःखी है। प्रजा की सारी खेती को सूअर खा जाते हैं। प्रजा को आत्मरक्षा का भी अधिकार नहीं, दोनालियों निशान वगैरो

मे खाये जाते हैं। परन्तु महाराजा साहब व अधिकारी वर्ग के कानो तक जू तक नही रेंगती। इस सम्बन्ध मे सच्चे वीर क्षत्रिय देशभक्त कुंवर मदनसिंह जी पूर्ण प्रयत्न कर रहे हैं। कुंवर साहब पवित्रात्मा है। हम करौली महाराजा से प्रार्थना करते है कि वे कुंवर मदनसिंह की बात मानकर सूअर पालने के दुर्व्यसन को छोड़ें ताकि प्रजा का कष्ट दूर हो।

मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी को धन्यवाद

देश मे नाना स्थानो पर भयकर बाढो मे अपूर्व सेवायें कर मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी कलकत्ता ने मारवाड़ियो का मुख उज्ज्वल किया है व राजस्थानियो का मस्तक ऊंचा किया है। हम इसे हृदय मे धन्यवाद देते हैं और परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दुःखित दरिद्री भारत की प्रजा की सच्ची सेवा करने का इनमे भाव सदा जागृत रहे।

हमारा आगामी कार्यक्रम

राजस्थानी प्रजा की वीरता नष्ट हो गई है और वर्षों की गुलामी से आत्मिक पतन हो गया है। यद्यपि बहुत से स्थानो से बेगार उठ गई है परन्तु फिर भी राज्य कर्मचारी बेगार लिये बिना नही मानते। राजस्थानियो का लेखन स्वातन्त्र्य, वाक् स्वातान्त्र्य मुद्रण स्वातान्त्र्य सब छिना हुआ है। प्रजा सभा सस्थायें खोले तो महान् कष्ट मे पड जाती है। स्वदेशी व्योपार चौपट है तभी तो हजारो लोग देश छोडकर बम्बई, कलकत्ता, कराची जा बसे हैं। लोगो को शासन में किंचित मात्र भी अधिकार नही, राजा विलासिता मे प्रजा की गाढी कमाई का धन उडाते हैं। राजालोग नौकरशाही के पोलिटिकल एजेन्टो के गुलाम हैं। अछूत जातियो के लिए पाठशालायें खोलना दुष्कर है हिन्दू राजा होते हुए भी मुसलमानो के अत्याचार हिन्दू सहते हैं हिन्दू विधवाए बराबर उठाई जाती और हिन्दू जाति व धर्म का ह्रास होता है। सभा सदा उपरोक्त दुर्गुणो के निवारण मे तत्पर रहेगी। राजा महाराजाओ की प्रतिष्ठा को दृष्टि से देखती हुई भी प्रजा को उत्तर दायित्व पूर्ण अधिकार दिलाने मे अग्रसर रहेगी।

अन्तिम निवेदन

बहुत से पाठक यह कहेंगे कि रिपोर्ट मे बहुत सी व्यक्तिगत बातें व आक्षेप हैं परन्तु क्या किया जाय इन बातो का आन्दोलन इतना अधिक हो चुका कि अब सभी की (पोजीशन) बिना इनके लिखे साफ नही होती। सभा का इस

1923 के वर्ष का खर्च इस प्रकार है कि 420 रुपये कुली वेतन व दफ्तर खर्च 150 प्रचार में और इस रिपोर्ट की छपवाई अभी बाकी है। सभा के पास एक पैसा भी नहीं है बल्कि कर्ज में है। अछूतोद्धार के कार्य की रिपोर्ट पृथक प्रकाशित की जायगी प्रत्येक दानशील महानुभाव का कर्तव्य है कि वह सभा को सहायता प्रदान करे। चाहे हमारे पास धन हो या न हो हमारा तो देश सेवा का व्रत है और हम बराबर करते रहेंगे।

A Description of Some Unknown Source Material

AGRARIAN MOVEMENT IN RAJASTHAN*

(Dr. Ram Pande, Jaipur)

The agrarian movement in Rajasthan has not been paid adequate attention by the scholars The source material for the topic is so vast that it cannot be covered within the narrow limits of the paper like this. However, I have tried to give a complete information in brief

The nature of land-holdings in Rajasthan was unique and distinct in many ways from the nature of land-holdings in other parts of the country The holdings belonged to the local kings, the *jagirdars*, *zamindars* and the *kisans* (peasants) respectively The peasants were not the owners of the land but were only the tenants They were subjected to heavy taxation, which were devised in many ways On the whole a peasant was subjected to 86 different kinds of taxes

The agrarian movement in Rajasthan may be dated from Bijolia unrest The peasants of the place had been agitating since 1899-1900 against the inequitable taxes, forced labour, acts of injustice and imposition of heavy land revenue The agitation was led by a *Sadhu*, Baba Sitaram Das till Bijai Singh Pathik, who settled down in Bijolia, assumed the command of the agitation *The Memoirs of Baba Sitaram Das*[2] are very good source about the peasants conditions The serious and pitiful condition of the *Kisans* compelled the *Sadhu* to defy the State and *Thikana*

---

* Reprinted from Indian Historical Records Commission Lucknow Session 1974

1 Bijolia a place now in Bhilwara district was a premier jagir of former State of Udaipur This is situated about 30 miles south west of Bundi in the Aravali Ranges

2 Baba Sitaram Das Ke Samsamaran Ms are available at Rajasthan State Archives Bikaner and also at the office of Shodhak a research digest (Journal) Jaipur

authorities. The year 1916 was a very bad year for Bijolia, for, monsoon had practically failed and so also the crops. Even then the *Thikana* authorities with the help of the State Police tried to collect the revenue alongwith the war fund.[3] Peasants under the leadership of Bijai Singh Pathik rose in rebellion. The matter was referred to the Resident, who ordered the *Munsif* to arrest Pathik and sent him to Udaipur. But the *Munsif* who was in collusion with Pathik allowed him to escape. Now leadership was assumed by Shri Manik Lal Verma alongwith others, while Pathik conducted the movement from the eastern boundary of Mewar.[4] *Thikana* authorities tried to supress the movement by oppressive methods. Mr. Trench, the Settlement Officer, even ordered firing in villages of Raita and Tilasman where many people fell victims to the bullets, but this strengthened the movement. This has been well depicted in the *Memoirs of Lata Shri Manik Lal Verma.*[5] Bijai Singh Pathik along with others attended the Congress Session of 1918, where he became very intimate with late Shri Ganesh Shankar Vidyarthi, the Editor of the *Pratap*[6] who strongly supported the cause of Bijolia, by writing an article on it. Bijai Singh Pathik also wrote some articles in the Pratap regarding Bijolia Movement. B. G. Tilak was also impressed by Bijai Singh Pathik, and Tilak's Paper, the *Maratha*[7] made Bijolia movement very popular in the country. Information about this movement is also available in other contemporary news-papers.[8] Few *geets* were composed to encourage the peasants. Manik Lal

---

3. Abhudaya 8-4-1916 talks of general drought in Rajasthan.
4. Hindustan Times 25-5-1927.
5. Manik Lal Verma Ke Samsamaran available at Rajasthan Archives, Bikaner and with Mrs. Narayani Devi M. P. widow of late Shri Manik Lal Verma at 219 North Avenue, New Delhi.
6. Pratap (Kanpur) issues for 1913 to 1941-41 available at Saraswati Library Fatehpur Shekhawati a place about 93 miles towards west of Jaipur City.
7. Maratha (Marathi) available at Fatehpur.
8. Arjun, Navyug Sandesh, Tyag Bhumi, Vishal Bharat, Young Rajasthan, Princely India available at Fatehpur and Bombay Chronicle, 9-2-1921 etc.

Verma's *Panchira*[9] Bijai Singh Pathik's *lok geets*,[10] Bhanwar Lal Swarnkar's[11] songs and Prem Chand s[12] *geets* are important, as these represent the sufferings of the *kisans*

The Kisans' appointed their own *Panchayats* to look after the matters of daily administration including crop affairs Thus *Thikana* administration was paralysed Ultimately the authorities yielded and a settlement took p ace in 1922 Accordingly, ' Small lags (Customary dues) shall not be paid and begar (unpaid forced labour) shall not be extorted, except in the case of the State Chief to which the peop'e agreed ' The first battle was won The settlement and references are well depicted in Government records like, *Foreign Political Proceedings, Fortnightly Reports, Settlement Reports* etc , Government records available at *National Archives of India, New Delhi* and *Bijolia Sambandhi Kagjats* available at the Rajasthan State Archives Bikaner

Bijolia movement pioneered new movements The agitation of the peasants even after 1922 was continued in Mewar Bundi and Sirohi Amet[13] and Sirohi Bhils revolted against the disparity of the taxes under Motilal Tejawat, who was finaliy put behind the bars and was released in 1936 Motilal Tejawat's *Atam Katha*[14] is the main and important source material for the incident This reveals that a *Kisan Sammelan* was organised at Barisal[15] under the Chairmanship of Motilal Tejawat This *Sammelan* prepared a big memorandum named *Mewar Pukar* and presented it to the Raja, but all in vain *Abhudaya*[16] a contemporary weekly

---

9 Manik Lal Verma s Panchira ava lable at the off ce of the Shodhak Jaipur

10 Bijai Singh Pathik s geets compilation is ava lable with Smt Janki Devi Path k widow of Shri Pathik teacher in a Local Girls School at Mathura

11 Bhanwarlal Swarnkar s songs are available at the office of the Shodhak Jaipur

12 Prem Chand s geets were more popular people st ll remember them

13 A place in Uda pur

14 Motilal Tejawat wrote his Memoirs in his Atam Katha Ms available at Hindi Sahitya Mandir Jodhpur

15 A place in Uda pur

16 Abhudaya 15 4 1922 22 4 1922 3 6 1922 issues are important and available at the National Arch ves of Indi New Delhi Abhuday s issues of 15 7 1922 and 22 7 1922 have also published the answer o Sirohi ruler clarifying about Bhil Subjection in Sirohi

newspaper published from Prayag is also a very good source regarding the Bhil movement of Amet and Sirohi. Government records are *Fortnightly Reports. Foreign Political Proceedings, Home Political Proceedings,* available at the National archives of India and *Bijolia Sambandhi Kagjot* at the Rajasthan State Archives, Bikaner.

In Bundi it took a different turn. Meetings were held to protest against several inequitable taxes, specially the war fund which was collected an anna per rupee on revenue. The *kisan* movement was organised under the leadership of Shri Nenu Ram Sharma. *Abhudaya*[17] is only source which give the fullest information on the incident besides Government records Some sketchy inferences are in Motilal Tejawat's *Atam Katha*[18]

Parsoli,[19] Mandesra[20] and Begu[21] in Mewar (Udaipur) faced a serious oppressian at the hands of the British, where many villages were set on fire Even women and childern were not spared by Trench in Govindpura (Begu), where a meeting of *kisan sabha* was fixed Sources on the Begu affairs are Memoirs of the leaders like Haribhai Kinkar[22] Ram Narayan Choudhary, Durga Prasad Choudhary,[24] Arjun Lal Sehi[25] and Rupaji Kirpali Dhakar.[26] Later's Memoirs are most important as he was directly involved in the affair. Besides this contemporary newspapers like *Bombay*

---

17. Abhudaya's issue of 10-6-1922 is most important and available at the, National Archives of India, New Delhi.
18. Atamkatha of Motilal Tejawat Op. Cit.
19. Parsoli is a place in Chittore District.
20. Mandesra is now in Chittore District.
21. Begu was also a premier jagir of Udaipur now a place in Chittore District.
22. Memoirs of Haribhai Kinkar available at Shodhak's Office, Jaipur.
23. Memoirs of Ram Narayan Choudhary are available with him at Palbichla Ajmer.
24. Memoirs of Durga Prasad Choudhary are published in Navjyoti, August, 1973.
25. Arjun Lal Sethi's Memoirs are available with Sethis' family at Jaipur.
26. Memoirs of Rupaji Kripaji Dhakar are available at Shodhak's office Jaipur.

Chronicle, *Daily Express*[18] *Pioneer*[19] also supply good information and represent public opinon

The British Government of India for economic exploitation arranged costly imports This necessitated increase in the land revenue and other taxes, which was done under cover of new revenue settlements in almost every State The result of these enhanced taxes was that the troubles broke out again in 1925 in different States The most tragic was the agitation in Neemuchana,[30] a *Thikana* in the former State of Alwar Quite a few small *jagirdars* felt hard hit by the enhanced rates of revenue collection but it was the *Thakur* of Neemuchana who openly defied the decision of the Government As a result of which army was called in and consequence of its firing 150 lives were lost and the entire village was destroyed Information about this is supplied by two contemporary news papers, *Princely India*[31] and *Tarun Rajasthan*[32] Another centre of trouble in the same year was the Jaipur State, where in Khetri and Sikar, the peasants, who were mostly jats, rose in rebellion The movement was conducted by Ram Narain Choudhary in the rural areas while Baba Narsingh Dass led the movement in Jaipur City Full information regarding this movement may be obtained from the Private Papers of Shri Ram Narain Choudhary[33] and the Memoirs left by late Baba Narsingh Das[34]

In 1927 Bijolia re-appeared on the scene, when the *Jagirdar* of the place increased taxes ignoring agreement of 1922[35] Bijai Singh Pathik who formed *Rajasthan Seva Sangh* and was its Chairman, was not in a position to render any direct help to the

---

27 Bombay Chronicle 9 2 27

28 Daily Express 16 2 1922 Cuttings are available at B Vidyamandir Shodh Pritisthan Bikaner

29 Pioneer 17-2 1922

30 Neemuchana a town in Alwar District

31 Princely India—16 8 32 (sic) available at Saraswati Library, Fatehpur

32 Tarun Rajasthan available at Fatehpur

33 Private Papers of Shri Ram Narain Choudhary are available at Palbichla Ajmer

34 Members of Narsingh Das were named by him as Rajasthan Ki Pukar (Rajasthan Archives Bikaner)

35 Bombay Chronicle 27 5 1927.

kisans as he was under prohibitory orders to enter Mewar. Thus Haribhau Upadhyaya was sent. Shri Haribhau Upadhyaya had an interview with the Maharana and effected a settlement. Accordingly *kisans* agreed to pay arrears while the State agreed to abolish all the extra taxes and to restore land to its original owners. Besides Government records, the memoirs of late Shri Haribhau Upadhyaya[36] constitute the source material for the second phase of Bijolia Movement.

In 1932 *Kisan* movement in Shekhawati was organised under *Jat Kisan Sabha.* In 1934 about 2000 peasants marched to Jaipur to interview the Maharaja and to put their demands and grievances[37] before him. By 1936 *Jat Kisan Sabha* of Sikar and Jhunjhunu[38] was re-organised by Pt. Tarkeshwar Sharma and was named as *Kisan sabha* only Pt. Tarkeshwar Sharma a native of Singhana[39] started a hand written newspaper titled *Gram Samachar*[40] through which he encouraged the agitation. However, by 1939 the agitation was crushed and leaders like Pt. Tarkeshwar Sharma, Hiralal Shastri, Deshraj,[41] Baba Narsingh Dass etc., were either imprisoned or exiled from the State. Deshraj and Tarkeshwar Sharma reached Agra and from there they published a newspaper *Ganesh*[42] through which they continued the agitation. Most

---

36. Memoirs of Late Shri Haribhau Upadhaya are available at Nehru Memorial Museum and Library, New Delhi under the Head Private papers of Shri Haribhau Upadhyaya. In Haribhau Upadhyaya's Tyagbhumi, a newspaper published from Ajmer (in the issue of Asad Chakaram, Vikram Samvat 1986 (1929) all the details regarding the second phase of Bijolia Movement has been described. Shri Upadhyaya states that he heard about the miserable conditions of peasants in Bijolia he could not control himself, and broke down in tears.
37. The National Call 25-5-1934.
38. Sikar and Jhunjhunu, now are two separate districts in the modern Rajasthan. This region is known as Shekhawati.
39. Singhana, a town in Jhunujhunu district about 20 miles South West from Jhunjhunu.
40. Gram Samachar's file for 1936-37 is available at Shodhak's office, Jaipur.
41. Deshraj was a Jat and belonged to the Jat State of Bharatpur, later on he wrote Jat Itihas.
42. Ganesh available at Saraswati Library, Fatehpur.

reliable source for this is the *Memoirs of Shri Hira Lal Shastri*[43] as he was one of the leading personalities of the former State of Jaipur and directly participated in the movement

In 1945–1946 Rajasthan witnessed another agrarian crisis at Dudhwa Khara and Rajgarh[44] in Bikaner State Peasants rose in rebellion under the leadership of Pt Magharam Other leaders were prof Kedar Nath[45] Raghuwar Dayal Goel[46] and Kumbha Ram Arya[47] though the *Kisan* were agitating since 1932 under the leadership of Choudhary Hanuman Singh of Dudhwakhara[48] The movement is well depicted in *Bikaner ka Rajnaitik Jagran aur Pandit Magharam*[49] This is a compilation of facts reports, proceedings of Praja Mandal etc The newspaper *Veer Arjun*[50] is also a good source where the Dudhwakhara s Kisans' view point, their difficulties and genuine demands are given in elaborate details

All these troubles of agrarian nature of these States during pre independence times were not solved till the abolition of *Zamindari* and *Jagirdari* in Rajasthan in 1950

---

43 Memoirs of Shri Hira Lal Shastri are preserved in the private paper collection section of Nehru Memorial Museum and Library New Delhi

44 Dhuhdwa Khara and Rajgarh are about 18 and 50 miles from Churu respectively

45 Prof Kedar Nath is an M L A Rajasthan and resides at Jaipur

46 Raghuwar Dayal Goel is an advocate and also has few papers like pamphlets Court arrest Warrants etc

47 Kumbha Ram Arya an M P (Rajya Sabha) narrated the story to the writer Other Important leaders were Sardar Har Lal Singh Ladhu Ram Joshi and Ghasi Ram Choudhary

48 Lok Yuddha files of 1946

49 Bikaner ka Rajanitik Jagran Aur Pandit Magharam a copy was made available to me by Shri Satya Narain Pareek Director Bhartiya Vidya Mandir Shodh Pratishthan Bikaner Shodhak also possess a copy of it Pt Magharam s son Shri Ram Narain Sharma is a Municipal Counciller in Bikaner He also possesses Private Papers of Pt Magharam files of Lokyuddha Newspaper Prajamandal records pamphlets and some cuttings of Veer Arjun Paper

50 Veer Arjun 22 12 1945

A Survey of Private Records Relating to Azad Morcha

(Dr. Ram Pande. Jaipur)

The Quit India Movement which Mahatma Gandhi launched in 1942 in the country was also meant to be started in the princely states with full vigour. Almost all these states were having small or big organisations with Congress affiliations. In the former state of Jaipur this organisation was named as *Jaipur Rajya Prajamandal*, which at that time was working under the leadership of late Pandit Heera Lal Shastri. What we have so far heard or read makes us believe that it was this organisation which was at the back of the entire independence movement being steered through in the princely state of Jaipur. However, the records which I am going to introduce here, explode this belief to a greater extent.

These records relate to hand written *Private Diaries* of late Baba Harish Chandra, which are currently in the possession of his son Shri Suresh Sharma who is a proof reader in the Government Central Printing Press Jaipur and lives in his parental house at Baba Harish Chandra Marg in Jaipur City. These Diaries are fifteen in number and mostly written in *Dundhari* language—a local dialect of Western Hindi. Some portions are written in Hindi language also.

In addition to these *Diaries* there are following other important records relating to *Azad Morcha* which also corroborate this theory :—

(i) *Letters* exchanged between Mirza Ismail the then Prime Minister of the Jaipur state and Baba Harish Chandra.

---

* Reprinted from Indian Historical Records Commission Bikaner Session 1975

These letters twenty in number are in almost tattered condition The language of these letters is, English, Urdu, Hindi and Dundhari

These letters are available with the family of late Baba Harish Chandra Neither the *Diaries* nor the *Letters* are arranged in good manner and almost in hoch poch way

(ii) *Proceedings of Azad Morcha* which are with various personalities—the important being with (1) Hans D Roy, Jamuna Dairy, Ajmer Road Jaipur, (2) Radhey Shyam Sharma, Johari Bazar, Jaipur, (3) Gopal Shastri, Purani Basti, Jaipur

Baba Harish Chandra has written in his *Diary* with profound distress that the executive members used to take away the proceedings and other articles of the *Morcha* Perhaps this is the reason why the reports proceedings etc are not available at one place but can be got only in a scattered form

(iii) Various *Pamphlets* which were issued by the *Azad Morcha* at that time and are available with Bhanwar Lal Samodia, a shopkeeper in Chandpole Bazar Jaipur

Shanti Lal Durlabhji who is presently in the condition not well also said to have certain documents relating to this *Azad Morcha*

From these records it is transpired that in response to Mahatma Gandhi's Quite India Movement slogan that a meeting of the *Jaipur Rajya Prajamandal s* working committee was convened Late Pandit Heera Lal Shastri was of the opinion that the aim of the *Jaipur Rajya Prajamandal* was to secure the responsible government in the State of Jaipur under the blessings of the Maharaja and it should be left to the organisation of Indian National Congress 1 to launch such movement to make the country free This statement was not appreciated by Baba Harish Chandra Shastri and other colleagues of the similar views It is also revealed that there was a hot and furious exchange of words and abuses among those present in the meeting Baba Harish Chandra and others of

similar views even went to the extent of making allegation against Late Pandit Heera Lal Sastri that the Maharaja of Jaipur had purchased him by giving substantial funds for the expansion of Banasthali Vidyapeeth which was being run by him and it was due to this that Lat Pandit Heera Lal Shastri had taken an attitude which was not becoming of the *Jaipur Rajya Prajamandal.* This led to a rift in the *Jaipur Rajya Prajamandal* and a new organisation with the name—*Azad Morcha*—was created under the leadership of Baba Harish Chandra. The other important persons were Hans D. Roy, Shanti Lal Durlabhji, Radhey Shyam Sharma Baba Govind Dass, Gopalji Shnstri and Bhanwar Lal Samodiya etc. It was this *Morcha* which conducted Quit India Movement of 1942 in Jaipur.[2]

This is also revealed from the *Azad Morcha* records that in 1945 when Late Pandit Jawahar Lal Nehru came to Jaipur to attend a meeting a purse of Rs. 26 thousand was collected by this *Morcha* and presented to him. It is also recorded in one of the *Diaries* of Late Baba Harish Chandra a chit was also given to Pandit Nehru stating that the Azad Morcha was also being dedicated to him. In this context all the Members of the *Azad Morcha* were admitted to Congress Socialist Party.

---

1. At Nehru Memorial Museums and Library the papers of Late Pandit Heera Lal Shastri are preserved. There is a File titled "Speeches and Writings" in which his Speech which he delivered at Hindaun Session of Jaipur Rajya Prajamandal is collected. He has expressed the similer views. He says "The aim of the Prajamandal is to secure the responsible Governments in the States while the aim of the Indian National Congress is securing Independence of India". He also said that the Prajamandal movement was in no way against the rulers.
2. In the Diary of Baba Harish Chandra, Late Pandit Heera Lal Shastri is charged to be in league with then Prime Minister of the Jaipur State Mirza Ismail.

Subhash Bose Visit to Jodhpur

Netaji Subhash Chandra Bose visited Jodhpur in 1938 in the capacity of President of Indian National Congress It was a sudden and short visit Still now very little is known about this visit How ever we are publising here this original police report The purpose of visit is not known from the report but some hectic activities were going on in the groups in the National Congress

❂❂❂

Government of Jodhpur

Confidential

Jodhpur
Dated 7th December, 1938

From —The Inspector of Police,
C I D Jodhpur

Subject —Arrival of Mr Subhash Chandra Bose

Reference —

Sir

I have the honour to state that the Eastbound K L M plane carrying Mr Subhas Chandra, President National Congress, landed at the Jodhpur aerodrome at about 7 20 P M with other passengers From the aerodrome Mr Subhas Chandra came n the K L M car to the State Hotel where he was visited by the following political workers of Jodhpur near the reception office of the Hotel, where he was awaiting his turn to enter his name in the visitors Register

1 Purushottam Prasad Naiyar
1 Ranchd Das Gattani
3 Abhey Mal Jain
4 Bhanv ar Lal Sharaff
5 Narsingh Das Lukar, and
6 One Ram Chandra Merchant of Bhatinda and two others

The politicat workers garlanded him and requested him to stay in Jodhpur for a day but he expressed his bitter inability to do so thereafter they accompanied him to his lodged room No 17 of the Hotel where they remained close till about 8 30 P M

In the meantime the following students alongwith Balmokand Bissa, Manager Khaddar Bhandar, also reached there to see Subhas Chandra Bose :—

Megh Raj, Tarak Prasad, a student of 1st Year Arts of Jaswant College, Jodhpur, Mahaveer Prasad, Udai Krishna, Jugg Raj Bora.

After finishing their talk, they all came down in the porch where Abheymal Jain introduced one Jugraj Bora to Subhash chandra Bose and said that he has been rusticated from the School for reading the address at the time of your last visit in the month of January, 1938.

Abheymal Jain further said that some students have come to see you and they have not been allowed entry by the Police and Hotel Chowkidar. Thereupon Subhas Chandra Bose alongwith the Political workers went the Hotel Gate where four students were waiting and met them but no policeman was there. He also enquired of the Chowkidar who was at the gate as to why they were not allowed entry. The chowkidar who checked them and said that they are waiting the reply of their card, which they sent for interview.

At about 9.35 P. M. when Subhas Chandra Bose finished with his diner went to his room Mesors Purshottam Prashad Naiyer Ranchod das Gattani and Narsingh Das Lukar again went into his room, and again closelled with him till about 10.25 P.M.

At about 10.30 P M. the Political workers and studdents left for their house.

Mr. Subhash Chandra Bose resumed his journey to Calcutta by the K.L.M. Eastbound today the 7th instant at 5A. M. None came to see him off.

I have the honour to be Sir
Your most obedient servant,
Sd/ F. R. Bohra
Inspector of Police,
C.I.D. Jodhpur.

Confidential

Forwarded with compliments to the Inspector General of Police, Government of Jodhpur, Jodhpur for favour of information.

Sd/ Baldeo Ram
Superintendent City Police,
Jodhpur.

Records Relating to Moti Lal Tejawat

We are publishing few records relating to Moti Lal Tejawat who contributed a lot towards Bhil movement in pre independence times The Bhils looked at Moti Lal Tejawat as their *Messiah* who had come for their eternal deliverance Inspite of all the repressive meiasures adopted by the States of Udaipur, Dungarpur, Banswara Sirohi Idar and C the Bhil movement gained momentum under MotiLal Tejawat who used to dressed h mself like the Bhils

The following records are a certificate from Superintendent of Central Jail Udaipur about his detention in Jail an article pub lished by Niranjan Nath Acharya in *Navjeewan* dated 2 9-1945, and others are from Police records These records give information on Bhil movement The records are very rarely used by the scho ars I while preparing my book '*Agrarian Movement in Rajasthan* consulted these records which are certainly valuable and preserved at Rajasthan State Archives in original

One of the Jail certificates of Motilal Tejawat's long term Jail

TRUE COPY

Certified that Political Prisoner Motilal Tejawat had been in the Central Jail Udaipur, from 6thAugust, 1929 to 23rd April, 1936 During the period his conduct was satisfactory

Sd/ V J Heeg
(illegible)
Lieut Colonel I M S
Superintendent, Central Jail
Udaipur

Udaipur
24th April, 36

तेजावत की हुंकार

॥ दोहा ॥

मोमट मानू को तुरन्त, दिया जेल में भेज।
हिन्दु रवि नहीं सह सका, तेजावत को तेज ॥

जेल के सींखचों में बन्द यही तेजावत लगोटी लगाये घूम रहे थे। उस दिन प्रातःकाल के आठ बजे थे, मैंने दूर से प्रणाम किया, तेजावतजी ने तीव्रता से देखा और सिंह की तरह स्वच्छन्दता से अपने दोनों बाहुओं को आकाश की तरफ उठाते हुए मेरी भावनाओं का आदर किया।

जेलर मेरी मुलाकात से आ सकते थे ये तेजावतजी के सम्मुख जाने में हिचकते थे, तेजावत के अदम्य तेज का उन पर बड़ा असर था। अतः जेलर उनके निकट आने से घबराये. लेकिन एक वकील की मुलाकात राजनीतिक कैसे हो, वहां जेलर की उपस्थिति आवश्यक थी। वे साथ हुए एक हाथ मेरे कंधे पर रखा और मुझे तेजावत की कोठरी के सामने लाकर खड़ा कर दिया।

तेजावत बिना अपराध ही जेल के सींखचों में बन्द किये गये थे। मेवाड़ रक्षा कानून के तहत उन पर ये बंदिशे डाली गई थीं। कार्यवाही में यह कानूनी गलतियां थी। कानूनी दृष्टिकोण से तेजावत की हिरासत नाजायज थी। वकीलों ने तेजावत को इस नाजायज कैद से आजाद कराने हेतु एक दरख्वास्त दफा 491 जा. फो के मुताबिक हाईकोर्ट में देने का निश्चय किया। मि० चोरड़िया इसमें प्रमुख थे।

हमने मस्विदा दरख्वास्त उनके सामने रखा, दरख्वास्त देखकर, तेजावत हँसा। उन्होंने कहा—

सरकार का एक हाथ मुझे बन्दीगृह में बन्द करना चाहता है क्या सम्भव है दूसरा हाथ इसकी खिलाफत करेगा, सरकार की एक आँख मुझे नष्ट कर देना चाहती है, दूसरी आंख सींकचों के बाहिर कैसे देख सकेगी। न्याय स्वयं बंदी है उसका अस्तित्व किसी शक्ति पर है उसका संचालन किसी के इशारे पर है। जिस न्याय में सरकार के प्रभाव से जुदा होने की आजादी नहीं, वह बन्दी न्याय, मुझ बन्दी की क्या मदद कर सकेगा।

हमने तुरन्त उनका भ्रम दूर किया। मैंने कहा—बुरा ही क्या है ? यदि आपका नाम का मुकदमा जनता के सम्मुख जाय, आपकी मुसीबतें इन्सान के दिल तक पहुँच सके, वे प्रकाश में आवें और इस संसार को मालूम हो सके तेजावत के कारावास की तपस्या।

तेजावत ने समझा कर उत्तर दिया—दुःखी है कौन? मैंने तो जेल की दीवारो मे जिन्दगी बसर की है। मैंने चक्की के राग मे अपना जीवन राग अलापा है। मैंने बन्दीगृह की मुसीबता से अपने जिस्म का अणु-2 मृदुल बनाया है, जेल के इस प्रकार के ठोस वातावरण मे पले हुए शरीर ने दुनियाँ के सुखों का अनुभव किया ही कब, जिसमे आप दु.ख कहते हो वह तो मेरा चिर साथी रहा है।

तेजावत ने फिर हुंकार की—

सरकार और मेरे बीच झगड़ा साधारण ही है, वह मेरी आजादी छीनना चाहती है। मैं मेरे रग 2 मे रमी आजादी को खोना नही चाहता मैं नही चाहता कि सरकार किसी की स्वच्छन्द उडान पर हमला करे, मैं इन सीखचों मे बन्द रह कर भी अपनी आजादी की हिफाजत करूंगा, मैं जेल से बाहर रह सकता हूँ यदि मैं सरकार को इकरार लिख दूं कि बिना आज्ञा उदयपुर नही छोड़ूगा, कैद खाने मे कौन सा फर्क ज्यादा होता है। इधर इकरार नही लिखने पर मैं इस बहाने जेल के अन्दर बन्द हूँ और उधर इकरार मे पाबन्द होने पर मैं सीमा उदयपुर में सीमित रहूँगा। आजादी भावनाओ पर है। उसका सम्बन्ध अधिक मन से है। यदि मैं बाहर रह कर भी इन बन्दिशों के शोले सहता रहूँ, मेरी आजादी कहाँ ?

मैं तो इस कोठरी मे बन्द रह कर भी पूरी आजादी महसूस करता हूं। अपनी कल्पना मे आजाद देश के मनोहर स्वप्न देखता हूँ। और इससे मुझे जबर-दस्त शांति मिलती है, इस दृढता मे कि मैंने अपने शरीर को किसी इकरार की बंदिशों मे नही बाधा। सरकार को किये इकरार मेरे पैरो की मजबूत बेड़ीया बनती है, मुझे इस तरह का भद्दा कैदी बनना पसन्द नहीं। मैं तो उदयपुर के बाहर स्वच्छन्द जाना चाहता हूँ सत्याग्रही अपने पथ के कांटो को फूल समझ कर आगे बढना चाहता है। सरकार चाहे मेरे पीछे पडी रहे किन्तु मैं बन्दीगृहों में किसी तरह नही बन्ध सकता। कितना साधारण किन्तु कितना महत्वपूर्ण मसला था तेजावत की आजादी गैरो के लिये क्रांति ही विप्लव हो आखिर यह भावना क्यों? जुल्मो का पहाड़ अत्याचारो का बवंडर तेज के सम्मुख ठहर नही सकता उसका अस्थिर मुकाम अंधेरे में रह सकता है। किन्तु प्रकाश मे नही यही कारण हैं तेजा-वत की आजादी मे क्रांति का अंदेशा होने का।

तेजावत ने कुछ रोष भरे शब्दों मे फिर शुरू किया :

तो आप हाईकोर्ट से क्या मांगियेगा—यही कि मुझे छोड़ दिया जाय। लेकिन इस तरह की आजादी चाहता कौन है। मैं तो अपने दृढ निश्चय मे एक कदम आगे बढ़ चुका हूं, मैंने समझौते की कलमे अधिक विस्तृत कर दी हैं। अब

तो सरकार हुक्म दे कि जेल खाली कर दो, तो मैं जेल पर धरना दूंगा, मैं सत्याग्रह करूंगा। मैं जवाब दूंगा कि कुल निपटारा किये बिना अहाता जेल छोड़ना नहीं चाहता। जिन बंदिशों में जकड़ने के लिए मुझे इतने समय तक कारावास में रहना पड़ा, मैं हमेशा के लिए इन बन्दिशों को खत्म देखना चाहता हूँ। मैं जिन्दगी में बार-बार दावे झगड़े पसन्द नहीं करता। अगर मेरा प्रतिद्वन्द्वी मैदान छोड़ना चाहता है तो पहिले के सभी मुद्दों पर अपना तस्फिया करे। मगर सरकार का विवेक जागता है तो अच्छा है इस मौके पर अपने पुराने मसलों का भी तस्फिया कर डालें।

तेजावत की आंख लाल हो गई, क्रोध से मुंह तमतमा उठा उनकी विशाल मूंछ और सामन्तशाही दाढ़ी के बाल खड़े हो गये। उनकी रग-रग मे क्रांति के शोले भभकने लगे। मैंने विचार किया अदालती कानूनी दवा उस मरीज क लिए काफी नही। आजादी का मद इसके रेशे-रेशे मे भरा हुआ है। यह दसरों की समझ का नही। इसकी दवा उन्ही के हाथ में है। मैंने पूछा दूसरा मुद्दा झगड़े का क्या है। तेजावत ने हुंकारा।

सोमट के कई गाव किसने नष्ट किये, कई निर्दोष भीलो की हत्यायें की किसने की और कईयों को कारावास में किसने बन्द रखा, किस अपराध के लिए सिर्फ इसीलिए कि भील जाति हमेशा हमेशा से आजादी की उपासक रही है।

तो क्या बिना इसका समाधान हुए मुझे सन्तोष स्वय मिल सकता है। मैं तो इसका हिसाब समझना चाहता हूँ। यह कहते-कहते तेजावत एकदम रुक गए। उनकी आखे रक्त वर्ण हो गई, चेहरा लाल हो गया, होंठ फड़क उठे, उनका सिर घूमने लगा, उनके मस्तिष्क मे भावों का तूफान उठ चला वे इस आवेश को रोकना चाहते थे किन्तु उसके प्रयत्न निष्फल गये। अतः सहसा वे होंठ दब उठे।

वह नृशंस अत्याचार था। गरीबों के खून की होली थी। वीर तेजावत आगे बोलना चाहते थे किन्तु अपनी पूरी शक्ति से उन्होंने इस आवेश को रोका वाक्य समाप्त होने के पहिले वे अपना सर थाम कर बैठ गये। वे संभल गए और सारा निर्मम इतिहास भूलकर सच्चे सत्याग्रही की भांति शांति से बोले।

वकील साहब ये लीजिये अपनी दरख्वास्त यह विस्तीर्ण है। इसमें मर्म गुनों का तस्फिया है। यह आपके न्याय के परे है। इसका फैसला जनता की सरकार ही करेगी। मैं तो इन सीखचों के अन्दर इन सुदृढ़ दीवारों के अन्तर्गत तब तक रहना चाहता हूं जब तक कि क्रांति के शोलों में भस्म होकर नूतन मेवाड़ का निर्माण न हो जाये।

मैं विदा होने लगा। तेजावतजी ने शांति से मुस्कुराते हुए पुनः मुझे बुलाया, "आप मेरी सेवा करने की भावनाएँ लेकर आये है मैं आपका आभारी हूँ लेकिन याद रखियेगा कहीं कोई व्यक्ति मेरे बजाय सरकार से माफी न माग ले।"

लेखक
श्री निरजननाथ आचार्य
वकील, उदयपुर

(पत्र नवजीवन ता० 2-9-46 से लिया गया)

वीर नेता तेजावतजी

भिन्न 2 रियासतो और वीर पड़ौसी प्रातो मे बाटे जाने पर भी भील एक है। मेवाड़ से ईडर तक उनका 'भोमट' प्रदेश राजस्थान का एक अविच्छिन्न अग है। श्री मोतीलालजी तेजावत का उन पर प्रभाव बढ़ता देखकर जब मेवाड़ राज्य ने उनको गिरफ्तार कर लिया तो महात्मा गाधी ने 'यग इंडिया' मे शान सुधारक शीर्षक से लिखाया--

पाठक श्री मोतीलालजी से अच्छी तरह परिचित नही है। वह राज-पुताने के भीलो मे विनम्र परिश्रमी और सीधे सादे समाज सुधारक है। उनका नाम सामाजिक सुधार के सम्बन्ध मे भील वगैरह जातियो मे आदर पूर्वक लिया जाता है। यरवदा जेल से मुक्त होने के पश्चात् मैं उनसे मिला था। वह विद्वान नहीं है और बहुत कम बोलते हैं पर वह काम करने वाले हैं। (नवजीवन, अजमेर, दि० 16-2-48 से लिखा गया)।

श्री मोतीलालजी तेजावत की परसनल फाईल पुलिस विभाग से।

आप खास कोल्यारी पी. एस फलासिया के रहने वाले है। आपका जन्म कोल्यारी ग्राम मे हुआ। इनका रहन-सहन मामूली है। मामूली पढे लिखे हैं। इनका ज्यादातर भील समाज भोमट एरिया मे रहने से इनकी मान्यता भीलो मे विशेष रूप से है। उन्होने (भीलो मे) इनको देवता के समान मान्यता दे रखी है। भीलो के आपसी झगडे ज्यादातर तेजावतजी ही निपटाते हैं। जिनको वे स्वीकार करते हैं। इन्हं ने श्री विजयसिंहजी पथिक निवासी बिजोलिया के साथ सन् 1932 से काम करना शुरू किया। श्री पथिकजी को तेजावतजी गुरू के माफिक मानकर उनका अच्छा आदर करते थे यानी उनके साथ इनकी सच्ची सहानुभूति है।

ता० 16 से 22 सितम्बर तक सन् 41 इस संस्था (प्रजा मण्डल) की ओर से राष्ट्रीय सप्ताह मनाया गया जिसमें सभाएं की गई और ता० 22 को चरखा जलूस निकाला गया जिसके प्रमुख व्यवस्थापक श्री मोतीलालजी तेजावत रह चुके हैं।

ता० 26-1-47 को आजाद दिवस मनाया गया। उसमें आपकी रिहाई बाबत मेवाड़ सरकार से प्रार्थना की गई।

ता० 31-1-47 को आपके रिहा होने की खुशी में आम मीटिंग हुई उसमें श्री मोहनलालजी सा० सुखाड़िया, श्री माणिक्य लालजी वर्मा आदि ने श्री तेजावतजी की जीवनी पर प्रकाश डाला और श्री भगवन्त सिंहजी भण्डारी ने आपके बारे में बताया है कि इनको पूरी आजादी हासिल नहीं है। जब तक उदयपुर एरिया बाहर जाने के स्वतन्त्र नही आये पूरी अजादी नहीं है, इनके लिये जोरदार आन्दोलन करना चाहिये। सरकारी बूते नही रोक सके।

ता० 4-7-49 को एक मीटिंग शाम में की जिसमें आपने कहा पुलिस नाकाबिल है कोई काम की नही हैं अपने बगलात नही रहना चाहिये, अनाज बिना अपन लोग भूखे-मरते हैं। ऐसी सरकार मे नही रहना चाहिये। क्योंकि जब सरकार अपना इन्तजाम नही कर सकती अपने को बम्बई प्रान्त में मिल जाना चाहिये और कोई भी दुकान पर तुम चौकीदारी करो तो दुकानदारों से 40 रुपये माहवार लेना चाहिये। अगर महाजन लोग बराबर सामान नही देवें तो जबरदस्ती लेकर खा जाओ और पुलिस पकड़ने आवे तो तुम मत जाओ और कलम व पुलिस अफसरों को आपने कहा है कि कोई भी मुकदमा हो तो हमारी राय बगैर काम मत करो।

फा० 3 सन् 1949—50] की मौजा कोल्यारी में मीटिंग की, काश्त के
19-9-49] लिये बिना महसूल नफरी व लगान के अलावा मराड बगैरा नही देने के सिलसिले में आपने भाषण दिया।

फा० स न० 5 सन् 1949-50 ई.] को कोटड़ा कांग्रेस सम्मेलन के सिल-
24-2-49] सिले में कोटड़ा व बीकरणी वगैरा मवाजियात से फी घर एक रुपया वसूल किया गया।

फा० 79 सन् 1949-50 ता० 3-1-50 को रक्षामंत्रीजी सरदार बलदेव सिंहजी से मुकाम उदयपुर विराम के सिलसिले में आप लक्ष्मी निवास में मिले।

ता० 13-2-50 को कोटडा मोमट सम्मेलन हुआ उसमें आप भाग लेकर भाषण देते हुए अन्य प्रस्ताव पास किये।

ता० 15-3-50 को मारोली मे पोखला सम्मेलन हुआ उसमे भाग लिया।

ता० 9-4-50 को जयसमुद्र की पाल पर राष्ट्रीय सप्ताह मनाने के अध्यक्ष (उपलक्ष) मे मीटिंग हुई उसमे कांग्रेस को वोट देने वारिश की कमी के कारण लेवी की छूट आदिवासियों से करने वगैरा के भाषण दिये।

ता० 23-4-50 को ऋषभदेव मे मीटिंग हुई उसमे आपने मोमट जनता के लिये खुद का 36 वर्ष जेल मे रहना व मोमट की जनता के प्रति खुद का पूरी सहानुभूति बतलाते हुए मोमट की जनता को भूखे न मरने का आश्वासन दिया।

ता० 3-6-50 कस्बा गोगूंदा मे कांग्रेस पार्टी की ओर से मीटिंग हुई जिसमे गोगूंदा परगना को अकाल क्षेत्र घोषित करने, लगान व लेवी की छूट करने, लेवी व लगान नही देने मौजूदा मन्त्रियो का काम ठीक तरह से नही चलाने बावत आपने भाषण दिया।

ता० 11-8-50 को ग्वालियर मे हुए गोलीकाड के विरोध मे उदयपुर स्काउट आश्रम मे मीटिंग हुई जिसमे आपने भाषण देते हुए सरकार की आलोचना की।

ता० 13-8-50 को वल्लभनगर मे कांग्रेस पार्टी की ओर से आम मीटिंग हुई जिसमे पी. सी. सी. चुनाव मे योग्य व्यक्ति को चुनाव मे वोट देने व मिनिस्ट्री की बुराई करते हुए आपने भाषण दिया।

50 की एक मीटिंग गाँव मे की उसमे बताया है कि जंगलात मे से जगलात वाले लकडी नही काटने देते तो उनको मारो और पीटो अगर पुलिस वाले ज्यादती करे तो मुस्कयें बाध कर उदयपुर ले आये।

51 को आने वाले जनरल इलेक्शन मे आपको सायरा क्षेत्र मे कांग्रेस की तरफ से चुनाव मे खडे किये मगर बाद मे आपने वापस अपना नाम ले लिया खडे नही हुए।

51 को पचायती नोहरा मे भी विजयसिंह पथिक की अध्यक्षता मे कम्युनिस्ट पार्टी की तरफ से मीटिंग हुई उसमे आपने भी भाग लेकर सगठन व ईमानदार आदमी को वोट देने बावत कहा।

18-2 54 ए. एम. ता० 26-2-54 ता० 13-3-54 को भी रोशनलालजी के साथ मोमट एरिया मे दौरा किया उस मौके पर पेकरिया पहुँच कर वहा मुस्लिम फण्ड के बारे मे बातचीत हुई उसमे आपने भी भाग लिया।

Copied from the personal file of Motilal Tejawat from the Police Department by Dhanlal on 31st May, 1955.

———

श्री एकलिंगजी

ता० 25-7-39 ई. को अप डाउन ट्रेन चेक की गई दिन की मारवाड़ ट्रेन में नाथद्वारे से कालीदास वकील मय दो आदमी के आया महन्तजी की सराय में ठहरा।

श्याम को चित्तोड़ जाने वाली ट्रेन से हैदराबाद सत्याग्रह के लिये उदयपुर से चले मोतीलाल तेजावत मय श्री कृष्ण पारीक, भंवरलाल पालीवाल के रवाना हुआ। स्टेशन पर पहुँचने के लिये यमुनालालजी वैद्य व उनके दवाखाने के दो आदमी हीरालाल पन्नालाल पीयूश बगतावरलाल कम्पोडर मीशन होस्पिटल नोरतन ठेकेदार मोहनलाल मोतीलाल तेजावत का लड़का नीलकण्ठ सुखलाल व भीलवाड़े का एक आदमी भीलवाड़े जा रहा था उसने 1 रु. कलदार दिया देवीलालजी बाबू कारखाना स्टेशन ने दो 2 रुपये कलदार दिये और स्टेशन के बाबू लोग भी फूलों की माला पहिनानें में शरीक थे स्टेशन पर हिन्दू धर्म की व दयाशंकर (दयानन्द) ऋषि की जय बोली गई और कोई मुफीद हालात मालूम नहीं हुए, खैरियत रही ता० 26-7-39।

चुन्नीलाल शर्मा

पुलिस रेकार्ड से, नकलकर्त्ता धनलाल, ता० 17-5-55

Office of the Asst. Supdt. C.I.D.
of Police, Mewar State
Udaipur
Dated the 29th Aug. 1939.

My dear Kr. Sahib,

I beg to inform you that Motilal Tejawat had been to Indore in connection with Hydrabad Arya Satyagrah. He could not go for it as he was stopped. He stayed at Indore upto the 17th of August, 1939 and left for Ajmer on the 18th and stayed there with Hari Bhau.

He started from Ajmer on the 27th August and reached Kankroli the next morning and stayed there for the whole day and came to Nathdwara by the evening. He has returned here by the morning train. He was welcomed at the Udaipur Station by his son Mohanlal, Shri Krishna Parik Bhanwarlal Paliwal and Parashram Agrwal.

Kindly instruct the Kotwali staff to have a careful look out on his activities I have also instructed my men to look after his activities very carefully.

with due regards

To, Kr Ranjeet Singhji Sahib Sahi wala

yours obediently
L S. Dashora

Supdt Police, Udaipur City.

(Copied by Dhanlal from the Police Records 1-3-55)

Records Relating to Tonk

Daily Express
16-2-1921

REVOLUTION IN AN INDIAN STATE

CHANGEABLE NAWAB OE TONK.

....

"Daily Express" Correspondent

Allahabad, Feb. 12 (received yesterday)

A revolution has broken out in Tonk, a small native State in Rajputana, against the despotism of the Nawab and general conditions of life.

A mass meeting of the people made certain demands, including prohibition of the export of corn from the State, the prevention of boarding grain, the abolition of punishment without trial, and the expulsion of the Finance Member of the State Council.

The Nawad agreed to these demands, but shortly afterwards he arrested all the leaders of the agitation and employed the State troops to quell the mob. Swarms of people are fleeing from the State.

Alarming reports, which it is impossible to verify, are prevalent.

Tonk has a population of about 400,000. The chief who is known as the Nawab, is a Mahomedan of Afghan descent The State,which only covers a little over 2500 square miles,was founded by Amir Khan, the Pindari leader, who was granted the territory on his submission to the British in 1817.

The present chief is His Higness the Nawab Sir Muhammad Ibrahim Ali Khan, Bahadur, G C.S I, G C I.E, who suceeded in 1867. He is sixtyfour, and has long held the confidence of the Government of India.

The "Times"

REVOLUTION IN TONK STATE.

CIVILIANFS FLEEING TO BRITISH TERRITORY.

ALLAHABAD, Feb. 12-A revolution has broken out in the Native State of Tonk, Rajputana.

After agreeing to the demands put forward by the people, the Nawab arrested the leaders of the movement, whereupon rioting brocke out.

The State troops are actively engaged, and people are fleeing towards the nearest British territory, which is 30 miles away-Reuter.

*Tonk is a small, and rather backward State under Mahomedan rule, situated partly in Rajputana and partly in Central India. The State consists of six widely separated districts. The district which contains the capital town, where the revolt appears to have developed, is about 50 miles south of Jaipur and 80 miles east of the British district of Ajmer Merwara.

Note on the Rajputana Conspiracy*

Apart from the two specific charges of political murder which have been worked to satisfactory conclusion may enquiries have disclosed a very unsatisfactory condition of affairs in the Rajputana States, particularly Jaipur, Jodhpur, Udaipur and Kota. The three persons who are mainly responsible for the spread of sedition in Rajputana are Arjun Lal Sethi of Jaipur, Kesri Singh Charan of Kotah and Bissen Dutt of Benaras.

(2) Arjunlal Sethi. This man is a Jaini of unusual intelligence and ability who graduated from the Maharaja's College, Jaipur in 1902. For a year or two after this he acted as Secretary to the Thakur of Chomoo but such work did not appeal to Arjun Lal's restless spirit and in 1903 he resigned and took to lecturing on Jain eduction. His lectures brought him to the notice of Sahoo Jagmandar Dass, Secretary of the Jain Maha Sabha of Najibabad U.P.and he was appointed a paid lecturer. In 1904 Arjun Lal and a party of others (Jains) styling themselves "the educational deputation party" toured the Central Provinces and Barar lecturing and collecting funds for a Jain college. Hereafter Arjun Lal came into prominence as a lecturer on education and Jain philosophy and acquired considerable influence throughout Northen and Central India (His ideas were too advanced for the Jain Maha Sabha, so in 1906 he severed his connection with that institution and commenced work on his own in Jaipur). He founded a Samithi and opened a school called the Jain Wardaman Vidyalay. Attached to this school was Boarding House which soon became a centre for seditious teachings In 1913 we find three of the students from the boarding house committing

*Note on Rajputana Conspiracy case is a police report preserved at Raj. State Archives Bikaner.

the Arrah political murder while a fourth, Ram Lal, was arrested in Amir Chand's house at Delhi under circumstances which have no doubt but that he was a member of the Delhi conspiracy Enquiries have shown clearly that Arjun Lal's aims were revolutionary and that he was working in close touch, on the one hand with Amir Chand of Delhi, and on the other with Kesri Singh, and Bissen Dutt in Rajputana He first came in touch with Kesri Singh, whose sons are being educated at his institution at Jaipur and through him with Bissen Dutt As I have already mentioned Arjun Lal is one of the most influential leaders of the Jain community in India As and religious teacher and educationalist he was admired and invited to lecture at almost every Jain Conference of importance during the past few years It is also, I think, a fair inference that several of the other Jain leaders known of the revolutionary movement which his educational schemes screened and indications are not wanting that the leaven of sedition has spread to other Jain institutions such as the "Tatwa Prakashni Sabha" of Etawah and the "Brahmachari Ashram" of Hoshiarpur Arjun Lal is at present under arrest and is to be tried at Jaipur for abetting the Arrah murder

(3) Kesri Singh Charan This man is a petty land owner in Shahpura, a semi independent Jagir in the Udaipur State Kesri Singh himself is a man of considerable ability and educational attainments and first came to notice as a Hindi Poet and scholar He was at first employed by the Maharana Udaipur to record his shikar exploites but later on when a quarrel occurred between the Maharana and the Maharaja of Shahpura the family fell into disgrace and moved to Jodhpur where Kesari Singh's father drew a state pension Later on Kesari Singh moved to Kotah and was Employed by the Durbar as a sort of Court hanger on He, in the first instance devoted himself to social reforms among the Rajputana and became a prominent member of the "Walter Krit Hitkarni Sabha" In 1905 we find him in correspondence with Lala Hans Raj of Lahore and others in Bengal in an attempt to raise subscriptions which with to send Indian students to Japan He has also for years taken on interest in the spread of education and gradually aquired considerable influence in Kotah and Jodhpur. He also devoted him

although the ill-will of the Thakurs is directed principally against the chiefs some of it is directed on to the Imperial Government to whose policy they impute the existence of the oppression.

(4) On the failure of his secret society Kesari Singh started a scheme for spreading education which had for its objects (1) the opening of primary schools which would act as feeders to the state supported schools and colleges, and (2) the opening of boarding houses for the convenience of students. Taken at its face value this scheme was unobjectionable and had the support of people of all ranks but from what has come to light during the enquiry I feel convinced that this scheme was only a means to an end and that end is the spread of sedition. The boarding houses would certainly have degenerated into centres for seditious training: two such boarding houses were opened in Jodhpur and Kotah and come under Kesari Singh's control. He installed in them as superintendents two young men who were educated at the Thakur of Kharwa's expense in the D.A. V. School at Ajmer. Both these youths were concerned in the Kotah murder while one Somdutt was also concerned in the Arrah murder. There is also evidence that Kesari Singh insisted on the students from the Kotah boarding house being taken to hear objectionable lectures by Bissen Dutt, and these boarding houses may be taken on fair samples of what the boarding house; Kesri Singh proposed opening would be like.

(5) It is also, I think certain that Kesari Singh's scheme of sedition included the tampering with Rajput troops. Som Dutt *alias* Lahiri has said as much in a confesion he made to me and the finding of the name of non commissioned officers in the cipher list supports this confession Moreover there is evidence that some of the officers and men of the imperial service lancers at Jodhpur were very intersted in Kesari Singh's educational Scheme and visited him very frequently, and altough I think it very unlikely that any attempt has hitherto been made to temper their loyal y. This would have come later on. Kesari Singh is at present under arrest of the murder of a wealthy Sadhuo. This murder was planned in the Jodhpur boarding house and carried out in the boarding house at Kotah and according to the two approvers in the case was a purely political crime carrid out to obtain posesion of the Sadhus' wealth. Kesari

Singh, however attributes a higher motive for it i e the vindication of Rajput honour. The Sadhu having a *Liason* with a Raiput Lady of very exalted rank at Jodhpur

(6) Bissen Dutt '—This man is Pandit from Benares with a very chequered career He started life as an Arya Samaj preacher but was dismissed for his seditious activities He then started a swadeshi association at Benares and was next taken up by Pandit Madan Mohan Malaviya and emp'oyed as a Preacher of the Sanatan Dharm In this capacity he visited Kotah in or 1911 and here after worked hand in hand with Kesari Singh He it was who p anned and abetted the Arrah murder and helped in disposing of the remains of the victim of the Kotah murder He is shown in the cipher list as the leader of the Bhir Bharath Society and I be ieve we have more to discover of Bissen Dutts doing outside Rajputana Another man whose name has come up frequently in connection with these enquiries is Thakur Gopal Singh of Kharwa near Ajmer A series of incidents would seem to indicate In the absence of an explanation, this man was activiely engaged in assisting Kesari Singh and Bissen Dutt in spreading sedition in Rajputana I have not yet had an opportunity of questioning Thakur Gopal Singh but am now going down to Ajmer for the purpose.

(7) My enquiries have been confined to working up the two Political murder cases and following up the histories of the various people who figure in the conspiracy In Jodhpur, I should have like to have found out more about Kesari Singh s attempt to get into touch with the Army and his connection with Radha Kissen, the Civil Judge, this it will be remembered, is the man who introduced Balraj and Balmokand to Jodhpur There is a certain amount of evidence that Kesri Singh visited him in connection with his educational scheme and he it was who induced Sir Pratap Singh to assent to the Printing in the Government Press of an appeal addressed by Kesari Singh to the Rajputs This permission, I understand, was subsequently withdrawn at the instance of Maharaja Zalim Singh who found that the language in which the appeal was couched was objectionable Similarly at Kotah further enquiries could have been made regarding the Bhir Bharath Society But in both cases I found that such enquries would be distasteful to the

self to religion and become an active worker in the Bharath Dharm Maha Mandal of Benaras. Kesri Singh first got into touch with Bissen Dutt in 1907 when the latter was sent by Thakur Gopal Singh of Kharwa to lecture about education in Jodhpur, and this acquaintance was renewed in 1910 or 1911 when Bissen Dutt was sent to Kotah by the Maha Mandal to work in conjunction with Kesari Singh for the spread of the Sanatan Dharm in the Rajputana States. Kesari Singh avess and with some truth. I think, that his association with Bissen Dutt first turned his thoughts to sedition. In 1910 he, in conjuction with Bissen Dutt, started a secret soceity called the "Bhir Bharat society". A cepher list of the names of the members of this society was found and deciphered during my enquiry Among others the names of two police officers and a Magistrate from the Kotah State, and three non commissioned Officers from the Sardars Resala at Jodhpur appear in this list. Kesari Singh's explanation is that this society was formed as a protest to the policy of non-interference in the internal affairs of the Rajputana States inaugurated by lord Minto. According to Kesari singh this policy resulted cppression by the Rajputana chiefs for which there was no redress and the original object of his society was the exposure of such high-handedness and oppression. The society was not at first directed against the Imperial Government but later on at the instance of Bissen dutt and another conspirator called Nigam, it was decided to convert the society into a political organisation after the Bengal model, except that no political assasinations were to be permitted, lest an Arms act should be applied to the Rajputana States which wou'd be spoiled as a field for their activities. Kesari Singh states that this society fell through as he found it difficu't to get the people of Rajputana interested in it. They being ignorant of the advantages of agitation. In the main I believe Kesri Singh has spoken the truth in regard to this society. The relations between the Rajputana chiefs and their thakurs was of course outside the scope of my enquiry. But there are some facts of which I could not help hearing incidentally and these convince me that in Jaipur and Udaipur the Thakurs would be in sympathy with any scheme which had for its object the exposure of the oppression of the chiefs. Kesari Singh is also, I think, right when he says that

state authorities and would lead to no new discoveries Both the Jodhpur and Kotah state authorities would, I think, ike to make these turther enquiries themselves and I would suggest that the information already obtained be placed at their disposal through their respective Political Officers

8 – In conclusion, I would like to draw attention to the complete absense of any agency in Rajputana for collecting and communicating criminal intelligence, Udaipur has no police to speak of and Jaipur is little better , while even Kotah, where the police force is perhaps the best organised in Rajputana, nothing was known of the existence of a conspiracy The matter is a serious one Now that vigorous action against sedition and anarchism is being taken in other parts of India the seditionist will perhaps turn to Rajputana where he will find an excellent field for his activities with small risk of detection It is, I think, an wise to rely too much on the Traditional loyalty of the Rajputs The times are repidly changing and it is unlikely that the people of Rajputana will escape the wave of unrest which is spreading over other parts of India How ever loyal the chiefs may be, it must be remembered that political and general discontent prevails in some of the states and under the present system a plot can be matured without anybody knowing anything about it.

Sd/-A C Armstrong
16 6 1914

Spelling of Kesarisingh in this report is used some place as Kesrisingh and at another as Kesarisingh.

Proscribed Literature of Princely States Hitherto Unknown (Jodhpur State)

The pattern of the movement for liberation from the tyranny of the British in British Indian territory and that of the princely states has been quite different in nature and style. There is no doubt that the people of the princely states got their inspiration for movements from the leaders of the British India but it was certainly not for the liberation but for amelioration of their conditions. Such movements in the princely states were always directed not against the foreign rule as in British India nor the Maharajas but only against officials of the States such as Chief Minister, Dewan etc This opinion is very much reflected in the literature proscribed by the State Government of Jodhpur hitherto unknown to the historians and scholars, the study of which can be of immense value in reinterpreting the modern history of the princely States.

The view that the movement of the princely States was for redressing the grievances of the State's subject is reflected in the book 'Bekason-ki-Awaz' in Hindi edited by Ganesh lal Vyas and published by Bhanwar Lal Saraf, Printed at Commercial Press, Delhi which was proscribed by the Jodhpur Government.[1] These both individuals figured amongst staunch political agitators. This book of 16 pages contains of songs composed by political workers such as Ganesh Lal Vyas, Jai Narain Vyas, Purshottam Prasad Naiyar, Achleshwar Prasad Sharma etc. which were considered objectionable. From the title page of this book it appears that the political workers decided to publish a series of such books and it was the first of the series.

---

1. The Jodhpur Government Gazette, Vol. 75, No. 38 Extra Ordinary April, 9,1940 (Shodhak copy).

The publication is influenced by other proscribed publications of British India appears from the fact that first two songs of the publication are Vande matram and Jhanda Gayan appeared mostly in all the proscribed publications, published in British India

After carefully reading of the songs the Legal Remembrancer of the Government of Jodhpur submitted to the Chief Minister Donald Field that the composers of songs numbered to 7, 9 to 12 and 14 to 16 have committed no any offence[2] so no prosecution was necessary in respect of the composers of these songs But song numbered 17 by Achleshwar Prasad Sharma stood on a different footings One can not escape a feeling of contempt for the Government of Jodhpur on reading this song[3] It is, due to that it was

---

2 From Legal Remembrancer to Chief Minister vide No 13 dated 17 4-1940 in reference to his Confidential letter No 1258 dated 18 3 1940 Among the songs numbered above there were songs of Jainarayan Vyas which were not considered objectionable

3 The English translation of the poem as above by officials of Jodhpur Government reads thus —
'The Mental attitude of the big Government Servants of Marwar '
(This poem was composed in the Jodhpur Central Jail)
We enjoy immensely in this Marwar
We are the servant of the Government
We get lot salaries and ample allowances, we enjoy. (1)
We plunder the backward public and we beat,
those who raise voice and we go against them We enjoy (2)
If paid bribes we work and if it is not given we harass them and we ruin him We enjoy. (3)
Let it be famine or let the public fall a prey to the epidemics but we are not affected by them We enjoy (4)
We have right to be wrong and wrong to right, we are great experts in this We enjoy (5)
We don't fear any body, we do not pay any fine if we commit-errors. We are selfish friends. We enjoy (6)
Let those who are weeping, weep, and those who are in trouble continue to be in trouble for us money is the only God
—Achleshwar Prasad

decided only against the Government servents and an action under 124 A Marwar Penal Code was recommended[4]

The effect of songs numbered 8 and 13 both composed by Ganesh Lal Vyas was considered to promote feeling of enmity and hatred between different classes of His Highness's subject namely the tenants against the landlords and employees against the employers.[5] So the action against him was recommended under section

---

4. The word 'Government established by law in Marwar' in Section 124 A of the Marwar Penal Code includes not merely the Sovereign power or the executive authority in Marwar but also those representatives to whom the task of Government is entrusted''.

5. The english translation of the songs No. 8 and 13 was made by the officials. No. 8 is referred here while No. 13 is in footnote No. 6.

8. We are poor.

We are religious, though we are hungry and naked we are poor, we are poor, we earn our livelihood by our own labours. We are poor, we are poor.

(2) We till the soil as agriculturists, we have reared snakes in our own sleves, we have by nourishing them, starved ourselves, we are poor, we are poor.

(3) If we began making clothes, we did hard labour, in the factories , Even than our children are naked. We are poor, we are poor.

(4) We built lacs of buildings, even then Marshy land has been left for our habitation. There are garden on that side and on this side there is bad smell. We are poor, we are poor.

(5) We produce the wealth of the world, still we live on loans we are the givers of the world but we are ourselves beggar, we are poor. We are poor.

(6) We don't understand our own strength and we don't realise our own worth, we do realise this fault of ours that we are poor. We are poor

(7) The days of salutes are gone, the times of equality have come. We do realise this fault of ours that we are poor We are poor.

—Ganesh Lal Vyas

108 of Marwar Criminal Procedure Code 153 A of Marwor Penal Code and under Section 34 clause 6 (e) 8 (F) and 38 (1) (1) of Defence of India Rule

The role of Mahajan or Baniya community is vital in an agrarian set up of the princely states It was this community which has exploited the poor masses a lot Side by side of the British Government this community is also responsible for destruction of village self sufficiency thus resulting in creation of the problem of bonded labour The song number thirteen[6] represents that exploi-

---

6 Song No (13)

Mother Marwar

(1) Our mother Marwar, listen to this our request after having some sympathy in the heart You help the distressed in their difficulties, beloved mother listen to our calling

(2) After putting ourselves to hardship we propuce corn even then our childern cry of hunger

(3) We have patience in winter as well as summer we produce cotten seed and exact cotton out of them

(4) Even then we have to satisfy ourselves with tattered rage and shiever in the winter and die ours without natural death

(5) The utensils though powned yet we are called owner of houses and eyes of children have gone inside due to hunger

(6) Our country has become deserated of gold birds and each and averything of the cultivators has been mortgaged to the 'Banias '

(7) The mistress of the house does not get a covering garments the pitticoat is worn out and the bedding cloth has been tattered to pieces

(8) "Sethji" has never taken the slightest troubles But ' Sethaniji' (his wife) goes out in luxurious coaches fully escorted

(9) The "Begar" of the thikanas is hard upon us the condition of the givers of bread has become very wretched

(10) Neither they plough the fields, nor do they read or write, they only drink wine and hear sweet music

(11) Worthless and use less persons are acting as thakurs but the actual givers of bread the cultivators, die hunger

(12) Oh our great Mother show us the way, remove the misery and the poverty of those who beg help from you

tation of the masses by this Banlya community. The song also represents the conditions of the people under feudal system where the Thakurs enjoying on the cost of the peasants masses without doing any thing. As Mahajan was Banker and who often gave loan to Jagirdars, he was allowed to loot the peasants masses by the Thikanedars and Princes.[7]

The above mentioned book Bekason ki Awaj is available at the editorial office of Shodhak a Journal of Historical Research published from Jaipur.

Donald Field, the then Chief Minister of Jodhpur State was very much successful in keeping away the 'otherwise good' Maharaja from his subjects including political leaders whom he called by all names.[8] The Book Amanat-ka-Hisab in Hindi published by Yogiraj Bal Brahmchari was a direct attack on Chief Minister Donald Field and Inspector General of Police H. A. Corcless, printed from Narain Press, Beawar (Ajmer). This pamphlet in the pink colour caused much alarmed and requested the people to rose against Donald Field. This revealed from the papers that Bhanwar Lal Saraf got it signed from Bal Brahamchari Yogiraj and arrange its publication[9] through Ram Niwas Sharma of Beawar[10] and distributed him-self and through his other associates like Bijay Kishan Gattani, Ranchod Das Gattani, Chagan Raj Purohit etc.[11] The book was proscribed on April, 3rd 1940.[12]

---

7. Ram Pande-Agrarian Movement in Rajasthan, Delhi 1974p.94
8. Ibid P. 80.
9. Statement of Bal Brahmchari Yogiraj before Baldeo Ram Superintendent of City Police, Jodhpur on 17.4.1940.
10. From Superintendent of Police Jodhpur to I. G. P. Jodhpur vide Confidential No. S. B. 28/1546 dated 20 April, 1940 Ram Nivas Sharma is described as an staunch political agitator of Ajmer-Merwara.
11. Ibid.
12. The Jodhpur Government Gazette, Extra Ordinary April 3,1940 A two pages pamphlet 'Sarkari Naukriyon Men Marwariyon Ka Sthan' purporting more or less to define the aims and objects of the Lok Parishad and was not of much importance but as ennumerated from the Lok Parishad was recommended for confiscation by I.G.P. H.A. Corless vide his notification April 1, 1940.

'Dip Malika *ki* Prasadi' was another book in Hindi which consists of the material wherein was considered by the Government of Jodhpur, objectionable It also contained the material which was a direct attack not only on Jodhpur Government officials but also on Ajmer-Merwara administration This book was composed and published by Ratna Prabhakar Avam Pushpmal of Phalaudi a Town in the Jodhpur State (Now Jodhpur District) and printed by Panna Lal Gupta 'Anant' at the Adarsh Printing Press, Ajmer It was forfeited on the ground that the said book containing matter, the publication of which is punishable under section 153 A of the Indian Penal Code[13]

---

13 Orders by the Chief Commissioner of Ajmer Merwara Notification No 637/76-A/41 dated Abu the 10 April, 1941.

Front cover

○ वन्देमातरम् ○

'बेकस' पुस्तक माला —पहला फूल

○ बेकसों की आवाज ○

तेरे जुल्मों की सितमगर यही रफ्तार रहे।
हमारा क्या है दुनिया मे दिन दुचार रहे॥

○ चित्र तिरंगा ○

लेखक :
श्री गणेशलाल व्यास "मुगध"
प्रकाशक :
सर्राफ भवरलाल

पहली बार 3000 प्रति सन् 1940 [मूल्य एक आना

Song No. 1

भारत-वन्दना

वन्देमातरम् !

वन्देमातरम् !

सुजलाम सुफलाम मलयज शीतलाम शस्यश्यामलाम मातरम् । वन्दे ॥

शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्,

फुल्ल कुसुमिता द्रुमदल-शोभिनीम्,

सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्, सुखदाम् वरदाम मातरम् । वन्दे ॥

त्रिंश-कोटि कंठ कल कल-निनाद कराले,

द्विवत्रिंश कोटि भुजैधृत खर करवाले,

के बोले मां तुमि अबले,

बहुबलधारिणीम् पुदल नमामि-तारिणीम् रिपुदल-वारिणीम् मातरम् । वन्दे ॥

त्वहि विद्या त्वहि धर्म,

त्वहि हृदि त्वहि मर्म,

त्वहि प्राणाः शरीरे,

बाहुते तुमि मां शक्ति,

हृदये तुमि मां भक्ति,

तोमार ये प्रतिमा गड़ी मन्दिरे मन्दिरे,

त्वहि दुर्गा दशप्रहरण धारिणीम्,

कमला कमल दल—विहारिणीम्,

वाणि विद्या दयिनीम् नमामित्वाम् ।

Page 2

(2)

नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम् सुजलाम् मातरम् । वन्दे ।

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम् धरणीम् मातरम् । वन्दे ॥

वन्दे मातरम्

—बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय

Song No. 2

तिरंगा झण्डा

(झण्डा-गान)

विजय विश्व तिरंगा प्यारा ।

झण्डा ऊंचा रहे हमारा ।

सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला,
वीरो को हरषाने वाला, मातृ भूमि का तन मन सारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।
स्वतन्त्रता के भिषण रण मे, लखकर जोश बढे, क्षण क्षण मे,
कापे शत्रु देखकर मन मे, मिट जाये भय सकट सारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥
इस झण्डे के नीचे निर्भय, लें स्वराज हम अविचल निश्चय,
बोलो भारत माता की जय, स्वतन्त्र हो ध्येय हमारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥
आओ, प्यारे वीरो! आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ,
एक साथ सब मिलकर गाओ, प्यारा देश हमारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥
इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये,
विश्व विजय करके दिखलाये, तब होवें प्रण पूर्ण हमारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा॥

Page 3 Song No 3 मातृ-वन्दना

जननि दान दे, स्वात्म भान दे।
तेरी नित रहे तान वही गान दे॥

(1)

तन मे बल, मन निश्छल, सुगुण सबल यत्न सफल।
अटल सुदृढ, निश्चल दे, हृदय विमल दे। जननि॥

(2)

स्वाभिमान हम न तजें, तदपि रहे निरभिमान।
त्याग तप सहिष्णुता, बलिदान ज्ञान दे॥ जननि॥

(3)

भाव दीजिये गम्भीर बने सफल वीर धीर।
तेरी अनुरक्ति, भक्ति धवल ध्यान दे। जननि॥

(4)

तेरे पद शीश धरें, अर्पण सर्वस्व करें।
तेरे हित जियें मरें, विजय भान दे। जननि॥

—श्री जयनारायण व्यास

Song No. 4

जागो

प्राची दिशि में अरुणाई–हो–आई,
नभ नव रंग आभा छाई–सुखदाई।
बीती अंधियारी रात, उठ जागो,
उग आया प्रभात, उठ जागो ॥

(2)

Page 4

चिड़ियों में हुई जगाई–चहचाई,
तज नींद उठो सब भाई–और भाई।
गृहलक्ष्मी के सरताज, उठ जागो,
भगिनी के सौरभ, साज उठ जागो ॥

(3)

बछिया ने धूम मचाई–उठ धाई।
शिशु ध्वनि सुन गैया माई–रम्भाई ॥
नवयुग के शुभ सुहाग उठ जागो,
जननि के सोये भाग उठ जागो ॥

(4)

वन फूले ताल तलाई–भर आई।
कलियों ने किरणें पाई–खिल आई।
दुनियां में मच रही जाग, उठ जागो,
अब गावो भैरवी राग, उठ जागो।

—गणेशलाल व्यास

Song No. 5

चल पड़ी फौज मस्तानों की।

(1)

आजाद बेकसों को करने, चल पड़ी फौज मस्तानों की।
बेजानों में जां भरने को, टोली निकली मरदानों की ॥

(2)

हर एक का सर है हथेली पर, और जोशे शहादत दिल में भरा।
कुर्बानी की है चाह इन्हें सब दुनियां के अरमानों की ॥

(3)

Page 5

मर कर जीने की धुन इनको, है लगी जहां के हक के लिए।
मिट जाने की ख्वाहिश है इन, आजादी के परवानों की ॥

(4)

यह देश रंग इन वीरों का, सब जालिम सूखे जाते हैं।
सब दुनियां डिग मिग करती है, जल्लादों की शैतानों की ॥

(5)

आबाद और खुश रहे जहां, भूलें इनको या याद करें।
दुनिया का दर्द मिटाने का मकसद है, इन दीवानों की ॥

(6)

भाई भाई का उदू न हो, दुनिया पर हक का साया रहे।
है यही तमन्ना यही तड़प इन दो दिन के मेहमानों की ॥

—गणेशलाल व्यास

Song No 6

दाने दाने के लिए*

(1)

इस तरफ तो ये तड़फते दाने-दाने के लिए।
वे उधर मशगूल हैं दुनिया मनाने के लिये ॥

(2)

लाल लाखों देश के है, भूख से बेजार आज।
जा रहे हैं अब चिता (कबर) में घर बसाने के लिये ॥

(3)

जिन्दगी में चार दाने भी न गर तुम इनको दो।
लाश पर तो आओ दो आंसू बहाने के लिए ॥

Page 6

(4)

मातृ भूमि तेरे बच्चे याद करते हैं तुझे,
है तेरे दर पर खड़े तुमको मनाने के लिये।

(5)

देख करके जालिमों के जुल्म को तैयार है,
नैयर नाचीज भी अब जेल जाने के लिए।

—मुन्शी पुरुषोत्तम प्रसाद 'नैयर'

* यह गजल मुंशीजी ने उस समय बनाई थी जब जोधपुर के हजारों अकाल पीड़ित जोधपुर में इकट्ठा हुए थे और उनमें से एक लड़का भूख की बीमारी से मर गया।
—सम्पादक

Song No. 7

जमाने से हम जो गुजर जायेंगे

(1)

जमाने से हम जो गुजर जायेंगे ।
तो आजाद होंगे या मर जायेंगे ।

(2)

हुए हैं बिला शक जमाने से पैदा ।
बदल हम उसे भी मगर जायेंगे ।

(3)

जुल्मों का नामों निशां तक मिटा कर ।
हम जालिम को इन्सान कर जायेंगे ।

(4)

सितम गर गरीबों पै होते रहेंगे ।
तो लाखों शहीदों के सर जायेंगे ॥

(5)

किसी घर में उस रोज मातम ना होगा ।
जो मरने को तख्ते जिगर जायेंगे ॥

(6)

यह होगा जमाना गुनाहों से खाली ।
इधर जायेंगे या उधर जायेंगे ॥

—गणेशलाल व्यास

Song No. 8

गरीब हैं हम

(1)

ईमान वाले, गो भूखे, नंगे गरीब हैं हम गरीब हैं हम ।
हम अपनी मेहनत से पेट भरते, गरीब हैं हम, गरीब हैं हम ॥

(2)

जमीन बोकर किसान बनकर, हैं खुद की अस्ती में सांप पाले ।
उन्हें खिलाकर खुद-मर मिटे हैं, गरीब हैं हम, गरीब हैं हम ॥

(3)

कभी बनाने लगे जो कपड़ा, तो कारखानों में जां लड़ा दी ।
हमारे बच्चे हैं फिर भी नंगे, गरीब हैं हम, गरीब हैं हम ॥

(4)

मकान हमने बनाये लाखों, मिला है रहने को फिर भी दल-दल ।

उधर बगीचे, इधर है बदबू, गरीब हैं हम, गरीब हैं हम ।।

(5)

जहा की दौलत को हम कमातें, हैं फिर भी खाना उधार खाते हैं ।

जहा के दाता हैं खुद भिखारी, गरीब हैं हम, गरीब हैं हम ।।

Page No 8

(6)

हमारी ताकत हमी न जाने, न अपनी कीमत को भी पिछाने ।

कसूर इतना हम मानते हैं, गरीब हैं हम, गरीब हैं हम ।।

(7)

मगर सलामो के दिन हैं गुजरे बराबरी का जमाना आया ।

कसूर इतना हम मानते है, गरीब हैं हम, गरीब हैं हम ।

—गणेशलाल व्यास

Song No. 9

यक वतन हमारा

(1)

मजहब जुदा जुदा हैं, यक है वतन हमारा ।

हिन्दू भी मुसलमा भी, हैं एक मा का प्यारा ।।

(2)

यक खाक के हैं पुतले, यक खाक मे मिलेंगे ।

है एक खूं नसों मे, किस्मत ने किया न्यारा ।

(3)

कुदरत ने यक बनाया, मुमकिन नहीं जुदाई ।

यक जिस्म की दो आखें, कैसे करें किनारा ।।

(4)

आजाद था किसी दिन, हिन्दोस्तान अपना ।

आपस की फूट ही से बर्बाद हुआ सारा ।।

(5)

उस कौम का है मुश्किल, नामों निशा भी बचाना ।

गर यक की मुसीबत मे दूसरा न है सहारा ।।

(6)

Page 9

हैं अहले हिन्द सारे, हिन्दू भी मुसलमां भी।
दोनों की जबां पर है, 'आजाद हिन्द' नारा॥

—गणेशलाल व्यास

बेजार हूं

Song 10

(1)

अय फलक में सुनाऊं किसे दर्दे दिल, अपने प्यारों की फुर्कत में बेजार हूं।
कैसे ताफल हूं औ बेबस हूं मैं औ शहीदों के खूं में शरोबार हूं॥

(2)

बता आसमां उनकी क्या थी खता, मिली कमसिनी में जिन्हें शूलियां।
जिनके हर कतरे खूं की यही थी सदा, मेरी माता के गम में गमख्वार हूं।

(3)

मेरे गुलशन के गुल वो खिले भी न थे, कि बेदर्द सैयाद ने चुन लिये।
लाखों टुकड़े जिगर के हो गये उन जवानो के मातम का इजहार हूं॥

(4)

ये मेरी आबरू पर फिदा हो गये, पर मेरी बेडियां उनसे कट न सकी।
उनकी कुर्बानियों पर सितम रो पड़ा, उफ मेरी हस्ति क्या मैं भी बेकार हूं॥

(5)

मेरे रोने पर हंसता है क्यो इस तरह, जली पर नमक उफ छिड़कता है क्यों।
अय जालिम सताता हैं क्यों इस कदर, जब तेरी कैद में यो गिरफ्तार हूं।

—गणेशलाल व्यास

Page 10

Song No. 11 डंके की चोट

कहदो था डंके री चोट, मारवाड़ नहीं रैसी ठोट॥

(1)

अब मैं सूता नहीं रहो ला, गांव गांव प्रभात कहोला।
पैला काढो घर री फोट, मारवाड़ नहीं रैसी ठोट॥

(2)

जगो जगो स्कूल सुनाओ, अरजी री आवाज उठाओ।
मरद मरां मन वाली फोट, मारवाड़ नहीं रैसी ठोट॥

(3)

सुण जो रे कालेजी छोरा, अब ये थोडा हुइजो दोश ।
लो जुम्मेवारी री पोट, मारवाड़ नही रैसी ठोट ।

(4)

गरमी रीछट्टिया मे जावो, पढणों लिखणों उठे सिखावो ।
कुछ दिन खावो जाडा रोट, मारवाड नही रैसी ठोट ।।

(5)

सुणो जवानो म्हारी बात, परिषद रो थे दिजो साथ ।
आवो मरदा बाध लगोट, मारवाड नही रैसी ठोट ।।

(6)

मारवाड ने फरज सिखाओ, अरजी दो आवाज उठाओ ।
तकलीफों रीं करो रपोट, मारवाड नही रैसी ठोट ।।

(7)

लोक हितैषी पच चुणो सब, परजा हित री बात सुणो सब ।
सोच समझ कर देवें वोट, मारवाड़ नही रैसी ठोट ।।

—श्री जयनारायण व्यास

Page 11 Song No. 12

ऐसो दीजो राज

(1)

म्हाने ऐसो दीजो राज, म्हारा राजा जी ।

(2)

गाव गांव पचायत चुणकर, पच चलावे राज ।। म्हारा ।।

(3)

जिले जिले री कमेटियो मे, व्हे परजा रो गाज । म्हारा० ।।

(4)

बडी कमेटी व्हैं जोधाणे, चोखा उण्रा साज । म्हारा० ।।

(5)

वोट नाख ले पच चुणीजे, म्हारी करे आवाज । म्हारा० ।।

(6)

पचा माय सू बणे मिनिस्टर, रखे न्यावरी लाज । म्हारा० ।।

(7)

कम खरचे सूं काम चलावे, करे न काज कुलाज । म्हारा० ।।

(8)

धणी धड़ाई ओर सफाई, मिले पेट भर नाज । म्हारा० ॥

(9)

चंगा ताजा मिनख रहे सब, वधे प्रेम री पाज । म्हारा० ॥

(10)

शोभा थांरी इणसूं होसी, सुण लीजो महाराज । म्हारा० ॥

—श्री जय नारायण व्यास

Song No. 13

सुर घर माय

(1)

वीनती सुणी नि म्हारी सुर घर माय, थोड़ी दया चित लाय ।
दुखियों री विसायता री करजो थे सहाय ॥ म्हा० ॥

(2)

धानडो निपजावां म्हें तो हील न सुगाय ।
सर तोड़ा टावरिया तांई करे हाय हाय ॥ म्हा० ॥

(3)

सिया ने उनाले मरां मन में हूलाम ।
धणी बावा विणियां बीणा मोकली कपास ॥ म्हा० ॥

(4)

तांई फटा चीथरा सूं गुजारो करां ।
ठंड में ठरठराता बिना मौत ही मरां ॥ म्हा०

(5)

ठीकरा घड़ाणा वाजां घर रा धणी,
भूखां मरतां आत्यां धंनगी टावरिया तणी ॥ म्हा०

(6)

सोना हन्दी चिड़ियों नूं सूनो ह्वगो देस,
वाणियां रे भोगलावे करना हन्दा केस ॥ म्हा०

(7)

घर री धणियां ने मिले नहीं चीर,
फाटका धावलिया रान्यां ढुलगी नीरा लीर ॥ म्हा०

(8)

Page 13

सेठ जी लगावे नहीं हूलवाणी रे हाथ ।
सेठाणीजी बारे निकले केज गाड़ियां साथ ॥ म्हा०

(9)

खाय पीय न लारे लागी रावला री बैठ,
रोट्या रा देवाल हुयगा हिंडोला सू हैठ ॥ म्हा०

(10)

खेतरा जोते न कोई भणे न गुणे,
ऐ दारूडा पीवे ने माठा मारूडा सुने ॥ म्हा०

(11)

निकामा निठाला बैठा ठकराया करे,
रोट्या रा देवाल करसा भूख सूं मरे ॥ म्हा०

(12)

म्हारी मोटी माय म्हाने मारग बताय,
शरणागत आयारा दुख दालद मिटाय ॥ म्हा०

—गणेशलाल व्यास

आजादी पर मरने वाले

Song No. 14

(1)

हर दिल मे जिन्दा रहते हैं, आजादी पर मरने वाले ।
कब जुल्मो सितम सह सकते हैं, वह जान फिदा करने वाले ॥

(2)

जिसकी मिट्टी से बने हुए, गर वही वतन आजाद नही ।
कुर्बान वतन पर होते हैं, तब फर्ज अदा करने वाले ॥

Page 14

(3)

जो मान गुलामी को राहत, सोतें हैं नरम बिछौनो पर ।
जिन्दा भी वे मर जाते हैं, मर जाने से डरने वाले ॥

(4)

मैदाने जग मे बिछे हुए हैं, काटे भी गुल उनके लिये ।
अपने खू से रण चण्डी का, जो है खप्पर भरने वाले ॥

(5)

हम वतन गुलामी के मारे, दाने दाने को तरसते हैं ।
तब नूरे शहादत पाते हैं, सर शूली पर धरने वाले ॥

(6)

अब तौक गुलामी का फेंको, वर्ना यह जां कुर्बान करो ।
दिन याद करो जब हम हिन्दी, ये दुनियां सर करने वाले ॥

—गणेशलाल व्यास

Song No. 15

ये सरकारी नौकर

पब्लिक के नौकर अहलकार अक्सर मनमानी करते हैं ।
ले कानूनों की ओट खोट सा जेबें अपनी भरते हैं ॥ टेर ॥
दिखलाकर आंखें लाल लाल मानों पिण्डी को पकड़ रहे ।
दस्तूरी का दस्तूर बता—पब्लिक के पैसे हरते हैं ॥
हो एक मिनिट का काम जहां घण्टों पर टाला करते हैं ।
जो पूछे कारण देरी का तो ऐंठ बांध कर गरते हैं ॥ प० 2
जिस काम के हित तन्ख्वाह पाते वह करते हैं खोटाई से ।
गरजें करवा कर काम करें एहसान बड़ा सर धरते हैं ॥ प० 3
मन से महाराजा बन करके—हैं चार इन्च ऊंचे रहते ।
पब्लिक से प्रेम बढ़ाने में नाहक मन ही मन डरते हैं ॥ प० 4
गांवों में इनका जुल्म बड़ा बेगारों में सब काम लेते हैं ॥

Page 15

पानी ईंधन दही दूध मंगा कर माल मुफ्त में चरते हैं ॥ प० 5
नाई बारी सर बुलवा कर बरतन झूठे मजवाते हैं ।
देना उनको कुछ दूर रहा उल्टा बे-इज्जत करते हैं ॥ प० 6
अनुभव में जैसी आई—"धीरज" ने सच्ची कह डाली ।
सब जगह बहुत से अहलकार ऐसे ही यार गुजरते हैं ॥ प० 7

—श्री धीरजमल बख्तावत

Song No. 16

हम क्या चाहते हैं ?

बतावें तुम्हें हम कि क्या चाहते हैं । हुकूमत का ढंग कुछ नया चाहते हैं ॥ 1
मुकर्रर करें पंच हर गांव में हम । उन्हें इन्तजाम हम दिया चाहते हैं ॥ 2
उन्हीं हर जिले में हमारी हुकूमत । दे मत हम उसे चुन लिया चाहते हैं ॥ 3
मुकम्मिल रहे हम पै ही जुम्मेवारी । प्रजा की हुकूमत किया चाहते हैं ॥ 4
न रिश्वत रहे और बेगार मिट जाय । किसानों को राहत दिया चाहते हैं ॥ 5
सही बात लिखने व कहने व मिलने । की आजादी हासिल किया चाहते हैं ॥ 6

फकत चाहते हैं प्रजा की भलाई। फक्त चैन से हम जिया चाहते हैं ॥ 7
न कोई हमारी हुकूक हमसे छीने। न हम पर और हक लिया चाहते हैं ॥ 8
सभी को है हक चैन की जिन्दगी का। सभी से गले मिल लिया चाहते हैं ॥ 9

—आगीवाण

Page 16 Song No. 17

मार-वाड़ के नौकर-शाहों की मनोदशा
(यह कविता जोधपुर सेन्ट्रल जेल में बनाइ गई थी)

इण मारवाड रे माय म्हे तो मजा करा
बड़े राज रा नौकर हाँ।
मोटी तिनखा पावा हां।
भत्तो भी है भरमान्ए म्हे तो मजा करा ॥ 1 ॥
ठोठी रैयत ने लूटा,
जो कूके उण ने कूटा
पड जावा उणरो लारे म्हे तो मजा करा ॥ 2 ॥
रिश्वत दे तो काम करा
नहीं देवे तो तग करा,
कर दा उणने बर्बाद, म्हे तो मजा करा ॥ 3 ॥
काल दुकाल भले हो पडो,
लोग मादगी मे भी सडो,
म्हाने नाहो आवे आच, म्ह तो मजा करा ॥ 4 ॥
झूठो तो साचा कर दा
साचों ने झूठा कर दा,
म्हे हा पूरा उस्ताद, म्हे तो मजा करा ॥ 5 ॥
म्हे किण सू भी नहीं डरा
चूको तो नही दन्ड भरा,
म्हे हा मतलब रा यार, म्हे तो मजा करा ॥ 6 ॥
रोवे जिका रोवण दो,
दुख पावे तो पावण दो,
म्हारे तो रुपियो ही राम, म्हे तो मजा करा ॥ 7 ॥

—अचलेश्वर प्रसाद शर्मा

A Short Description of

MEWAR PRAJA MANDAL

This was prepared in October 1945 by Late Shri Mohanlal Sukhadia In 1946 Mewar Praja Mandal Office was raided and Police confiscated Office records along with this. This has been taken from Prajamandal records of Rajasthan Archives Bikaner.—

(In 1938, after a glorious victory at the polls, the Indian National Congress had accepted office and out of the eleven provinces, in nine, the Government was being carried under Congress directions. But in the Indian States it was still a crime to talk of responsible government or even of elementary civic rights).

The Congress had been giving considerable thought to this serious anomaly and at the Haripura Congress in March 1938, it was resolved that the time had come for the people of Indian States to stand on their own feet to organize themselves for securing the fundamental rights so far denied to them.

The efforts of the people in other parts of British India and their enthusiasm did not leave Mewar un-affected. The first inspiration came from Manikya Lal Ji, the veteran leader of the famous Bijolian struggle, and in April 1938, the Mewar Praja Mandal was founded at Udaipur.

The first president was Balwant Singh ji and Bhure Lal ji Baya became the first vice-president.

As soon as this society was born, the then Prime Minister of Udaipur, Mr. Dharamanarayan tried to strangle it in the cradle, and declared the Prajamandal illegal. For the sake of keeping this infant society alive somehow, the workers of Prajamandal approached Mr. Dharamanarayan and tried to ascertain what his ideas were. The late Seth Shree Jamna Lal ji Bajaj also wrote to him at

length But the Prime Minister remained unmoved. The consequence was that the Parja Mandal was forced to give an ultimatum that if the ban was not removed by the 4th October 1938, it would be forced to resort to Civil Disobedience During the interval, the whole situation was explained to Mahatmaji and his blessings obtained As the time stated in the ultimatum came nearer, the enthusiasm of the people began to grow. The Government on the other hand began to improve upon and perfect the means of repression A net work of C I D Officers was spread in Mewar and every one in a white cap was watched with suspicion. Even before the time in the ultimatum expired, Bhure Lal ji Baya, the vice-president of Mewar Praja Mandal was arrested and without trial interned in Sarara Fort a remote and unhealthy place which is knowu as the "Kala Pani" of Mewar On the 4th of October, the date of the expiry of the ultimatum, as a first Satyagrahi, Ramesh Chandraji Vyas started from Ajmer for Udaipur.

Enroute he was arrested at Railway Staion and was taken first to Lasadia and thence to Sarara Fort—the same "Kala Pani". The movement commenced and its intensity now onwards, began to increase. It was being conducted by Manikya Lal ji from Ajmer, who was at the time the Chief Secretary of the Praja Mandal. He was assisted by Nandlal ji Joshi a member of the Praja Mandal Working Committee A number of people at different places in Mewar participated in the movement But it was at Nathdwara that the movement assumed a rather frightening form for the authorities On the arrsest of the leading workers of that place Narendra Pal Singh ji Choudhry and Professar Narayan Das ji complete "Hartal" took place in the town and on 30th of August 1938, a lathi charge was made Many were injured but that neither terrified nor suppressed the people Every day some one or other would march through the town with the tricolour flag in his hand shouting "Inqilab Zindabad' The end of the movement was not in sight of the authorities The Mewar Government thereupon took the situation in its own hands and sent an armed military force to Nathdwara, section 144 was promulgated, and about forty "Satyagrahis' were immediately arrested and criminal proceedings for rioting were instituted against them. (Unfortunately for the prosecutors, the cases could not be

substantiated later on). On the 15th of December 1938, Mathura Prasad ji Vaidya, a worker of Praja Mandal who was at Deoli, a place in Ajmer-Merwara near the border of Mewar State, was set upon by the Mewar Police and mercilessly and brutally beaten till he became unconscious. In the condition he was arrested and dragged into Mewar territory *In all about 238 persons were arrested at Udaipur*, Nathdwara and other places. Nearly thirty five of them were sentenced to imprisonment. Proceedings for rioting were instituted against nine persons and fines were imposed on them. Nine persons were interned without trial and on four other bans were imposed. The "Satyagrahees" were put in fetters. Women Satyagrahees were however let off after being detained for some time. The movement nevertheless went on. The Mewar Government was keen on somehow or other procuring the arrest of Manikya Lal ji Verma who was conducting the movement from Ajmer. To achieve this end they stealthily followed him On the 2nd of February 1939, he had gone to Deoli to confer with some workers there. In the evening he was all of a sudden attacked on the outskirts of the town by men of the Mewar Police with 'lathis'. He was badly injured and then bleeding, was forcibly dragged through bushes and thorns in a most inhuman way to Mewar territory which was more than a hundred yards away He lost much blood due to injurise and got unconscious In that condition ha was arrested and taken to a state police station. On hearing of this illegal and inhuman conduct of Mewar Government Mahatmaji in a statement in the "Harijan" dated the 18th of February 1939, advised the Prajamandal to institute legal proceedings and further said--

"Civil resisters of the state should remember that the real battle has yet to come. The states big or small seem to be taking concerted action. They are copying the methods adopted by the British in British India during the Satyagraha struggle and are likely to improve upon them in frightfulness. They fancy they have no fear of public opinion, for there is none in the states except in rare cases. But Civil resisters who are worth their salt, will not be dettered by any frightfulness".

On the 3rd of March 1939 Mahatamaji advised the Mewar Prajamandal to postpone Satyagraha and it was accordigly stopped. For a long time afterwards, however, the Mewar Government did

not release the workers who were in jail and even after they were eventually released, the Government did not remove the ban on the Prajamandal In 1939 Mewar was facing a severe famine There was no one to organise relief to the famine stricken people and their plight was miserable The workers of Prajamandal after their release established the ' Mewar Akal Fund' and organised relief They also organised "Gandhi Jayanti, Rashtriya Saptah" and other political activities Mr Dharmnaryan had been by this time replaced by Sri T Vijayaraghvacharya The New Prime Minister was rehauling the outworn administration of the state He exhibited a more liberal outlook The Prajamandal in order to fight the rampant corruption in state departments brought to his notice a number of cases of illegal gratifications by state officials The Prime Minister appreciated this and proper action was taken in these matters as well as for injustices committed by the Jageerdars The Government at this time also announced that it intended to establish a Legislative Assembly for Mewar in the near future and to ascertain public opinion, it published in bill form the "Mewar Legislative Assembly Act" The Prajamandal considered this proposal and submitted a memorandum indicating its opinion to the Government

The ban on the Prajamandal was atlast removed in the year 1941 As soon as the ban was removed, the Prajamandal started enrolling new members and in November 1941, under the Presidentship of Manikya Lal Ji Verma, the first session of Prajamandal took place at Udaipur It was inaugurated by Acharya Kriplani An exhibition was also held which was opened by Shreemati Vijya Laxmi Pandit The Prajamandal focussed its energies now at constructive work In February 1942, in the presence of Thakkar Bapa, Harijan uplift work was allotted to Mohan Lal ji Sukhadia and Bheel uplift work was alloted to Balwant Singhji Mehta There are about 4 lakhs of Bheels in Mewar They are a brave race but the Government has always endevoured to keep them unorganised and at present they are the most backward and the most exploited people This work demanded full time attention of the Prajamandal But while this constructive work was taking shape events outside Mewar took a different turn

The year 1942 was an eventful one. Before 1942, India was a distant spector of the world war, but in 1942, battles were being fought on its borders. The Germans on the way to India were on one side making a bid for Stalingrad, and on the other, near Alexandria were making a desperate dash for the Suez Canal while in the East, the Japanese were already on Indian soil and had started bombing of Indian cities. In that year it looked as if India was going to be attacked from all sides. The fall of Burma, Malaya and Singapore confirmed the general feeling that the British Empire was fast crumbling. The Congress had tried hard to come to a compromise with the British and had conceded much but no settlement having arrived at, Sir Stafford Cripps had returned to England leaving India as dissatisfied as ever. Mahatmaji was very much moved by these events. He is an expert at reading the pulse of the nation and this time also he gave the lead the country had been waiting for. He asked the British to "Quit India." This slogan of two words electrified the whole atmosphere and in every corner of India revolutionary fire began to blaze. A meeting of the Presidents of the Prajamandals of the various States was called at Bombay by Mahatmaji. On behalf of Udaipur Manikyalalji Verma attended. Mahatmaji advised that every Prajamandal should send a letter to the ruler of its state requesting him to break his connections with the Paramount Power.

On Manikyalalji's return to Udaipur a meeting of the Working Committee of Mewar Praja Mandal was held on 21st of August, 1942 At that time repression was in full swing and from all over India news came of lathi charges, firing and arrests every day. The problem before the Prajamandal was to decide whether to act with the rest of the nation or to take advantage of the situation and press for petty reforms in Mewar State's administration This latter course of bargaining did not appeal to the workers of Praja Mandal and they were of opinion that by so doing the Praja Mandal wou'd succumb to the artificial divison of India by the British, into British India and India. They further agreed that the root cause of the continuance of irresponsible Government in Native States was British dominance on India; and that if British Rule in India was ended, the ru'ers who were hesitating would hand over real power to the

peopl at once, that the problem before India was one and indivisible, that was to make the British "Quit India" Therefore the Mewar Praja Mandal decided to join forces with the rest of the nation and in accordance with the advice of Mahatmaji, the following letter was sent to His Highness the Maharana of Udaipur —

Praja Mandal
Udaipur 21st Aug, (19)42

Your Highness must be aware of the fact that the All India Congress Committee has felt that for the defence of India from foreign aggressors and victory of the allies, only a free India can give full co-operation There fore it has resolved to put before the British Government immediately a demand for full independence and has also expressed its wish to launch civil disobedience movement on the largest possible scale if the demand be not conceded The present Government of British India by arresting Mahatma Gandhi and other leaders had replied by a sudden attack. Therefore the struggle has commenced all the more earlier

We the people of Mewar State feel that our fate is linked with our brothers in Biritish India and therefore if we do not participate in the battle for full and immediate independence we will not be fulfiling our duty to India as a whole. As far as this State is concerned, I as the President of the Prajamandal request your Highness to break all connections with the paramount power according to the advice of your subjects by giving them a share in the Government of the State Our demand would then be satisfied I also beg to submit to your Highness that your Highness, not only ought to gain the respect and loyalty of your subjects but also share in the glory, Mewar will have in the removal of British Government from India

We have every hope that your Highness being a Suryavansi and born of the blood of Maharana Pratap, will revive their glory again in the eyes of the world by acceding to the demand of independence.

Sd. Manikyalal Verma
President
Mewar Praja Mandal

This letter was delivered to the Private Secretary to His Highness at 5 P M Great enthusiasm prevailed in the city and

public meeting was called in the evening. The State Police was now active and as was discovered later warrants had been issued for mass arrests before the meeting was held in the evening. The Public meeting in the night was attended by thousands of people. Soon after the meeting ended the members of the Working Committee who were at Udaipur and some student leaders were arrested. Those who were at other places in the districts were also arrested that very night even while the meeting was proceeding at Udaipur. The news of arrests spread in Mewar. Next day, in protest, the largest procession in the history of Udaipur, took place. Led by the students and the workers of Prajamandal the people marched through the city shouting "Quit India" and other national slogans. The Mewar Government thereupon from the 23rd of August, put a ban on processions and public meetings, and than let loose like the British Government all the means of repression. After the Prajamandal Workers had been arrested, the students were rounded up. Colonel Daunt, Commandant of the State Army trampled under his feet the tri-colour flag and by putting a pistol on the chest of a boy strove to strike terror among students. But in these sons of Mewar a wave of enthusiasm for India's independence was blowing and they could not be easily subdued. Demonstrations and "Hartals" took place in the College and the City and lathicharges were made. The Government was jubilant on its victory having sent young boys to jail. But in jail these children who had probably never before taken a late dinner were living on one meal in 24 hours with their heads held high kept singing national songs. The flames of the movement were not limited to Udaipur but spread outside to all parts of Mewar. People from Nathdwara, Bhilwara, Chittor, Chhothi Sadri, Bhinder, Kanore Bijolia, Rekhabdeo, Rajnagar, Capasin, Jahazpur and other places took part. Every day lorries after lorries came to fill the jail gates. The arrests continued upto the first week of October 1942. In all about 500 people were arrested out of which 7 were women. All the arrests were said to have made under the Defence of Mewar Rules the counterpart of the D.I.R.

Many Mewaries who happened to be outside Mewar also participated in the movement, for instance, Sadiq Ali ji Office Secretary All India Congress Committee, Ganesh Lalji Dashora,

Shobha Lal ji Gupta, Ramesh Chandraji Vyas Kanak Madhukarji, all suffered imprisonment

After the arrest of Prajamandal workers the Mewar Government began to explain that the speeches given by Prajamandal workers at the public meetings on 21st of August were likely to excite breach of peace, and therefore, they were arrested. But in fact the warrants of arrest had been executed at some places even before the resolution was put in the meetings It can hardly be doubted that the Mewar Government contemplated from the very beginning complete suppression of the people, to celebrate the efficent execution of its intentions 'Darbars' were held and 'Inams' distributed

In the Jail the authorities divided the arrested in a number of batches One batch consisting of members of the Prajamandal Working Committee and other prominent workers was interned at "Iswal' —a village in Udaipur District This batch had a tricolour flag with it, which was saluted every morning The Police asked the internees to hand over the flage and on refusal attempted to snatch it by force The flag was given to Manikya lalji and the rest formed a circle round him The police seeing them in no mood to part easily with the flag gave up the attempt and thus the ' Flag Satyagraha" in jail ended successfully.

Treatment of those who were left at Udaipur gradually worsened Many were put in solitary cells Some whipped By frightfulness the Government wanted to exact apologies Only a few-those arrested at random secured their release by expressing regrets None of them were in any way connected with Prajamandal

The first batch to be released was that of students But some of their leaders were, soon after arrested for a second time A complete "Hartal" took place in the College again Thereafter the students were unconditionaly released. The College remained closed for nearly two weeks due to the movement

After the students, the second batch, that of the ladies was released after full 3 months of jail life Some more individuals were latter set free At last after a full year and half, the last batch consisting of Prajamandal workers was released

The release came at the time when the unprecedented heavy flood in river Khari was taking its toll Nearly 125 villages had

been sweptaway. More than 5000 people and 1,000,00 cattle drowned. Undaunted by heavy rain and mud the Prajamandal workers were the first to reach the striken area and render relief. Later the Mewar Government also organised help and a joint relief Committee of the State and the public was established. The Chief Secretary of the Committee was Bhawani Shankrji Vaidya, a member of the Working Committee of Prajamandal and the Organizer in the flood area was Bhure Lalji Baya the Vice President of the Mewar Prajamandal. The work in the area continued for a year and substantial help was rendered to the victims.

The Prajamandal workers, on return from jail found on all sides an atmosphere of despondency and frustration. The Gandhi-Viceroy correspondence had been published and by twisting it, the Mewar Government was trying hard to prove, that the Prajamandal had committed a great blunder by participating in August movement and had thus put back the clock in Mewar by many years. The workers of Prajamandal therefor thought it essential that all the workers of Central India and Rajputana should meet to lay down the future plan of work. Udaipur was decided as the venue of this meeting and here nearly two hundred and fifth workers of the various states assembled They expressed complete confidence in Mahatmaji and supported the August Resolution and decided to take up constructive work immediately.

During the first week of April, 1944, when this conference was taking place at Udaipur, the Mewar Government had lifted the ban on public meetings which was imposed in August 1942. But due to the antiimperialist speeches delivered that day it was again imposed. At any other place no restrictions would have been imposed because of those speeches but the Mewar Government could not stand them.

The Prajamandal workers without in the least considering whether the Prajamandal had been declared legal or not, started constructive work. The Bheel Seva Work which had been suspended by the Mewar Government, was recommended and reorganized under Thakkar Bapu's guidance. It was decided to organize Mewar Harijan Sevak Sangh and attention was paid to Cottage Industries.

Since April 1944 up to now hostels for women at Bhilwara, for Kisans at Bijolia for Bheels at Udaipur, have been started The inmates are studying and preparing for national work in future During this period of constructive work on 7.3 44 Shreeyut Rajgopalachariya had came to Udaipur and the Prajamandal workers had a talk with him He was of the opinion that the Prajamandal should give an assurance to the Mewar Government that the Prajamandal now wished to work for political and social reforms and for the removal of the grievances of the public, that it was futile to stick to August resolution any more The Prajamandal workers assured him that the movement was started under Gandhiji's leadership and it would be a breach of confidence with the Commander if we give up the struggle

On the 6th of April 1945, Gandhiji was released As soon as he had recouped his health, a deputation of Prajamandal approached him and submitted a report on the construtive work done since their release Mahatmaji expressed approval and advised that the Prajamandal should ignore the ban and whole heartedly take up constructive work at Udaipur

Seven long and important years have passed since 1938 atrocities in Dharam Narayanji's regime, and the people of Mewar have advanced much on the path of political awakening But in Mewar adminisrration no change has taken place yet Even in the present Prime Minister's time no substantial political right has been conceded to the people There is not a single elected Municipality in the whole state The draft constitution of Legislative Assembly published in 1941 has even after public opinion been assessed and shelved for indefinite time Sometimes it is said that this could not *materialize because of the August movement But it remains for* the Government to explain why the Legislative Assembly could not be established between November 1941 and August 1942

The Mewar Prajamandal was born in April 1938 and it is now 7 years and 6 months old During this time its workers had to face twice a fight with the Government and spend three years in Jail For 5 years and 2 months the Prajamandal had remained an illegal association and only for one year and ten months it has been a legal body.

The Mewar Prajamandal if it is proud it is proud of the fact that in the August revolution when the nation was fighting to root out British Imperialism from India, Mewar also did its part. Sir. T. Vijayaraghavacharya, the Prime Minister has called our August Struggle, a tempest in a teapot but what anxiety this tea cup storm caused to the Mewar Govt. is not unknown. Whatever this storm may have been it was storm of the people and till the people of Mewar do not obtain responsible Government the storm, will not abate but only increase in its fury.

"INQILAB ZINDABAD"

"JAI HIND"

INDEX